ईश्वर में हमारा विश्वास

राष्ट्रीय नवीन मेल

सत्यमेव जयते

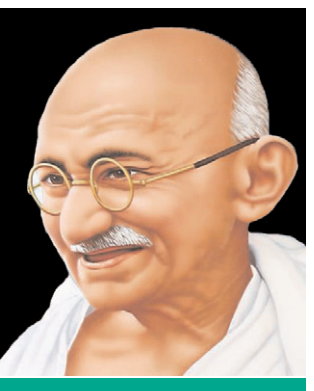

डालटनगंज (मेदिनीनगर) एवं रांची से एक साथ प्रकाशित

www.rastriyanaveenmail.com • डालटनगंज • माघ शुक्ल पक्ष 09 • विक्रम संवत 2079 • सोमवार, 30 जनवरी 2023 • वर्ष-29 • अंक-106 • पृष्ठ-12 • मूल्य ₹ 1.50

आज महात्मा गांधी की 75 वीं पुण्यतिथि

11 जनवरी 1927 को पलामू आये थे बापू

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। आज पलामू में राष्ट्रपिता गांधी जी के 75 वीं पुण्यतिथि मनाई जायेगी। इसके लिए सभी तैयारियां पूर्ण हो गई है। स्थानीय कोयल नदी के तट पर स्थित गांधी स्मृति हॉल के परिसर में गांधी जी के प्रतिमा की साफ सफाई का कार्य किया गया। आज कई संगठनों के द्वारा गांधी जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण होगा। 30 जनवरी भारतीय इतिहास का काफी दुखद दिन है। गांधी जी की पुण्यतिथि होने की वजह से इस दिन शहीद दिवस के तौर पर भी मनाया जाता है। इस दिन देश के राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री समेत सभी गणमान्य हस्तियां राष्ट्रपिता को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। 30 जनवरी भारतीय इतिहास का अहम दिन है। 1948 में इसी दिन नाथूराम गोडसे ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को दिल्ली स्थित बिरला हाउस में शाम को प्रार्थना के लिए जाते समय गोली मारकर हत्या कर दी थी। उनकी पुण्यतिथि को हर साल शहीद दिवस के तौर पर भी मनाया जाता है। आज उनकी हत्या की 75 वीं पुण्यतिथि है। पूरे देश के साथ ही आज पलामू में भी राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की पुण्यतिथि मनाई जाएगी।

पलामू से है गहरा रिश्ता : पलामू की धरती पर भी बापू का आगमन हो चुका है। गांधीजी 57 साल की उम्र में आज से 96 वर्ष पहले पलामू आये थे। आजादी की लड़ाई में आगे बढ़कर भाग ले रहे पलामू के लोगों के भरोसे को और मजबूती देने के लिए बनारस से पलामू पहुंचे थे। महात्मा गांधी का तत्कालीन डालटनगंज नगरपालिका और पलामू जिला अधिवक्ता संघ में उत्साह के साथ स्वागत किया गया था। 11 जनवरी 1927 को पलामू जिला मुख्यालय डालटनगंज (अब मेदिनीनगर) में स्थित मारवाड़ी पुस्तकालय का भी अवलोकन किया था और उसकी उन्नति की कामना की थी। महात्मा गांधी का पलामू दौरे के क्रम में उनका हस्ताक्षर, अभिनंदन करते हुए सौंपे गये पत्र आज भी पलामू में सुरक्षित है।

पलामू प्रमण्डल में इकलौता गांधी आश्रम

पलामू प्रमंडल के इकलौता गांधी आश्रम कंडा में है। गांधी आश्रम सेवा समिति के अध्यक्ष युगेश्वर साहू के अनुसार हमारे झारखंड राज्य में एक ही गांव के 10 स्वतंत्रता सेनानी कहीं भी नहीं है । कंडा गांव में एक ही गांव के 10 स्वतंत्रता सेनानी थे। इसके अलावा स्वतंत्रता सेनानी के द्वारा ही पलामू जिले के नावा बाजार के कंडा गांव में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के महाप्रयाण के दिन 1948 में गांधी आश्रम की नींव भी रखी गई थी। तब से यह गांधी आश्रम सेवा समिति के द्वारा संचालित है । इस आश्रम के माध्यम से गांधीजी के विचारधारा को विस्तृत जानकारी दी जाती है। बापू के निर्वाण दिवस पर कंडा में दिवंगत स्वतंत्रता सेनानी व पक्के गांधीवादी केश्वर विश्वकर्मा ने रखी थी आश्रम की नींव।

निगम ने गांधी के नाम पर किया है सड़क का नामकरण

निगम के द्वारा वर्ष 2021 में महात्मा गांधी की 152वीं जयंती पर उन्हें याद करते हुए मेदिनीनगर नगर निगम ने जिला सह प्रमंडलीय मुख्यालय मेदिनीनगर के कचहरी रोड का नाम परिवर्तित करते हुए उसे महात्मा गांधी रोड करने की अधिसूचना जारी कर दी। नगर निगम बोर्ड में लिये गये निर्णय के बाद अधिसूचना जारी की गयी है।

जिस दिन बापू की हत्या हुई थी, उस दिन की पूरी कहानी पढ़ें पेज-9 पर

NEWS इन ब्रीफ

मुख्यमंत्री आज सरायकेला में लोगों को करेंगे संबोधित

रांची। झारखंड सरकार की ओर से चलाये जा रहे खतियानी जोहार यात्रा का 5वां पड़ाव सोमवार 30 जनवरी को सरायकेल में है। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन इस यात्रा में शामिल होकर लोगों को संबोधित करेंगे। मुख्यमंत्री के आगमन का लेकर जिला प्रशासन अलर्ट है। कार्यक्रम में आदिवासी कल्याण मंत्री चंपई सोरेन सहित कई मंत्री भी शामिल होंगे। डीसी और एसपी ने रविवार को कार्यक्रम स्थल का निरीक्षण कर अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निदेश दिया।

सपा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी गठित

नवीन मेल नेटवर्क। लखनऊ समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने तीन माह बाद राष्ट्रीय कार्यकारिणी की घोषणा कर दी है। उपाध्यक्ष पद पर किरणमय नंदा और प्रमुख महासचिव पद पर प्रोफेसर रामगोपाल यादव बरकरार है। यह दोनों पहले भी इसी पद पर थे। राष्ट्रीय कार्यकारिणी में 14 महासचिव बनाए गए हैं। इसमें मोहम्मद आजम खान, शिवपाल सिंह यादव, स्वामी प्रसाद मौर्य, लालजी वर्मा, राम अचल राजभर, अवधेश प्रसाद, इंद्रजीत वर्मा, मधु गुप्ता आदि शामिल हैं। 62 सदस्य राष्ट्रीय कार्यकारिणी में जातीय समीकरण का पूरा ध्यान रखा गया है। राष्ट्रीय कार्यकारिणी में अभिषेक मिश्रा, पवन पांडे को भी जगह मिली है। इसी तरह पूर्व मंत्री राम आसरे विश्वकर्मा, लीलावती कुशवाहा, धर्मेंद्र यादव, जावेद आब्दी, दयाराम पाल आदि को भी शामिल किया गया है।

चीन की जीडीपी में भारी गिरावट, 70 देशों पर पड़ सकता है मंदी का असर

एजेंसी। बीजिंग

चीन के नेशनल स्टैटिस्टिक्स ब्यूरो की एक रिपोर्ट के मुताबिक देश की सालाना जीडीपी की बढ़ोतरी तीन फीसदी तक गिर चुकी है। यह पिछले साल की 5.5 फीसदी के अनुमानित लक्ष्य से बहुत कम है। पाइनेंशियल पोस्ट के मुताबिक चीन की जीडीपी में हुई गिरावट की वजह से दुनिया में मंदी पैदा हो सकती है। चीन के पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना के उप-प्रधान लियू हे ने दावोस 2023 में वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम में चीन और ग्लोबल इकोनॉमी के सामने आनेवाली परेशानी के बारे बताया था। चीन में पिछले साल विकास दर 1974 के बाद से सबसे खराब दर्ज की गई थी। चीन की विकास दर 1974 में 2.3 फीसदी थी। इसी तरह अगर चीन की इकोनॉमी गिरती रही को मंदी आनी तय है। मंदी का असर चीन पर तो होगा ही, दुनिया के 70 देश भी मंदी की चपेट में आ सकते हैं।

राज्यपाल ने 1932 के खतियान के आधार पर स्थानीयता वाले विधेयक को लौटाया

विधेयक की वैधानिकता की समीक्षा करने का निर्देश

पुनर्समीक्षा के लिए राज्य सरकार को वापस

नवीन मेल संवाददाता। रांची

राज्यपाल रमेश बैस ने रविवार को झारखंड विधान सभा से पारित 'झारखंड स्थानीय व्यक्तियों की परिभाषा और परिणामी सामाजिक, सांस्कृतिक और अन्य लाभों को ऐसे स्थानीय व्यक्तियों तक विस्तारित करने के लिए विधेयक-2022' की पुनर्समीक्षा के लिए राज्य सरकार को वापस कर दिया गया है। उन्होंने कहा है कि राज्य सरकार इस विधेयक की वैधानिकता की समीक्षा करें कि यह संविधान के अनुरूप एवं उच्चतम न्यायालय के निदेशों के अनुरूप हो। यह अधिनियम राज्यपाल के अनुमोदन तथा राष्ट्रपति की सहमति के लिए प्रेषित करने का अनुरोध राज्य सरकार द्वारा प्राप्त हुआ था। इस अधिनियम के अनुसार, स्थानीय व्यक्ति का अर्थ झारखंड का अधिवास (डोमिसाइल) होगा जो एक भारतीय नागरिक है और झारखंड की क्षेत्रीय और भौगोलिक सीमा के भीतर रहता है और उसका या उसके पूर्वज का नाम 1932 या उससे पहले के सर्वे, खतियान में दर्ज है। इसमें उल्लेख है कि इस अधिनियम के तहत पहचाने गए स्थानीय व्यक्ति ही राज्य के वर्ग-3 और 4 के विरुद्ध नियुक्ति के लिए पात्र होंगे।

नियोजन के मामले में सभी नागरिकों को समान अधिकार

विधेयक की समीक्षा के क्रम में स्पष्ट पाया गया है कि संविधान की धारा-16 में सभी नागरिकों को नियोजन के मामले में समान अधिकार प्राप्त है। संविधान की धारा-16(3) के अनुसार मात्र संसद को यह शक्तियां प्रदत्त हैं कि वे विशेष प्रावधान के तहत धारा 35 (ए) के अंतर्गत नियोजन के मामले में किसी भी प्रकार की शर्तें लगाने का अधिकार अधिरोपित कर सकते हैं। राज्य विधानमंडल को यह शक्ति प्राप्त नहीं है।

नियोजन मामले में सिर्फ संसद को शर्तें लगाने का अधिकार : एवीएस नरसिम्हा राव एवं अन्य बनाम आंध्र प्रदेश एवं अन्य (एआईआर 1970 एससी 422) में भी स्पष्ट व्याख्या की गई है कि नियोजन के मामले में किसी भी प्रकार की शर्तें लगाने का अधिकार मात्र भारतीय संसद में ही निहित है। इस प्रकार यह विधेयक संविधान के प्रावधान तथा उच्चतम न्यायालय के आदेश के विपरीत है। झारखंड राज्य के अंतर्गत अनुसूचित ▸▸शेष पृष्ठ 11 पर

सीएम ने दी कार्यपालक अभियंता के खिलाफ अभियोजन की स्वीकृति

नवीन मेल संवाददाता। रांची

मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने मनरेगा योजना में वित्तीय अनियमितता के आरोपित पदाधिकारी कृष्ण बिहारी राम, तत्कालीन कार्यपालक अभियंता, एनआरईपी, लातेहार के विरुद्ध अभियोजन चलाने के प्रस्ताव पर स्वीकृति प्रदान कर दी है। उनके विरुद्ध लातेहार जिला के मनिका थाना में 12 अगस्त 2010 को प्राथमिकी दर्ज कराई गई थी। दर्ज प्राथमिकी के अनुसंधान के क्रम में यह तथ्य पाया गया कि कृष्ण बिहारी राम, तत्कालीन कार्यपालक अभियंता द्वारा मनरेगा योजना 162/2007-08 की प्राकल्लित राशि में अवैध तरीके से राशि की निकासी की गई। ऐसे में अभियुक्तों पर सरकारी पद का दुरुपयोग, अपराधिक षड्यंत्र, धोखाधड़ी और प्रक्रियाओं का उल्लंघन करते हुए सुनियोजित ढंग से साजिश के तहत वित्तीय अनियमितता करते हुए सरकारी राशि गबन करने का आरोप गठित है। इस मामले में वादी श्रवण साय, परियोजना पदाधिकारी, लातेहार के आवेदन, औपचारिक प्राथमिकी, केस दैनिकी, गवाहों के बयान और पर्यवेक्षण टिप्पणी आलोक में प्राथमिक अभियुक्त के खिलाफ भारतीय दंड संहिता के तहत अभियोजन स्वीकृति का मामला पाया गया है।

लातेहार के तत्कालीन कार्यपालक अभियंता के विरुद्ध चलेगा अभियोजन

मनरेगा में अवैध तरीके से राशि निकासी का मामला

ओडिशा के स्वास्थ्य मंत्री की इलाज के दौरान मौत

सुरक्षा में तैनात एएसआई ने चार से पांच गोलियां मारी थीं

एजेंसी। भुवनेश्वर

ओडिशा के स्वास्थ्य मंत्री नब दास का निधन हो गया। रविवार दोपहर में उन पर जानलेवा हमला किया गया था। ब्रजराजनगर के गांधी चौक में एक कार्यक्रम के दौरान उन पर फायरिंग की गई थी। इसके बाद नब दास को गंभीर हालत में अस्पताल में भर्ती कराया गया था। नब दास के सीने पर गोली लगी थी। इससे पहले ब्रजराजनगर के एसडीपीओ गुप्तेश्वर भोई ने बताया था कि सहायक पुलिस उपनिरीक्षक (एएसआई) गोपाल दास ने मंत्री पर गोली चलाई थी। घटना में मंत्री घायल हुए थे। उन्हें अस्पताल ले जाया गया। स्थानीय लोगों ने आरोपी एएसआई को पकड़ लिया और उसे पुलिस के हवाले कर दिया। एएसआई ने मंत्री पर गोली क्यों चलाई, इसका पता लगाने के लिए जांच शुरू की गई है। एसडीपीओ के मुताबिक, घटना ब्रजराजनगर शहर में अपराह्न करीब एक बजे के आसपास उस समय हुई, जब दास एक बैठक में शामिल होने के लिए जा रहे थे। मंत्री को पहले झारसुगड़ा जिला मुख्यालय अस्पताल ले जाया गया था, लेकिन बाद में बेहतर इलाज के लिए उन्हें हवाई मार्ग से भुवनेश्वर के अस्पताल पहुंचाने की व्यवस्था की गई। दास ▸▸शेष पृष्ठ 11 पर

कौन हैं नब किशोर दास?

पटनायक सरकार के सबसे अमीर मंत्री	निवेश
ओडिशा के स्वास्थ्य मंत्री	दास की पत्नी के नाम 34 करोड़ रुपये की
15 करोड़ के 70 वाहनों का बेड़ा	चल और अचल संपत्ति
55,000 रुपये की एक रिवॉल्वर	1.13 करोड़ रुपये बैंकों में जमा
1.25 लाख रुपये की एक राइफल	2.24 करोड़ रुपये से अधिक की
17,500 रुपये की डबल बैरल बंदूक	सावधि जमा
45.12 लाख रुपये से अधिक की जमा राशि	महाराष्ट्र के एक शनि मंदिर में 1 करोड़ रुपये
77.43 लाख रुपये से अधिक का	का सोने का घड़ा भी दान किया था

बेटियों ने किया कमाल, इंग्लैंड को 7 विकेट से हराकर जीता पहला अंडर-19 महिला टी-20 विश्व कप

एजेंसी। पोटचेफस्ट्रूम (दक्षिण अफ्रीका)

गेंदबाजों के बेहतरीन प्रदर्शन की बदौलत भारतीय टीम ने आईसीसी अंडर-19 महिला टी-20 विश्व कप के पहले संस्करण का खिताब जीत लिया है। भारतीय टीम ने खिताबी मुकाबले में इंग्लैंड को 7 विकेट से हरा दिया। इस मैच में इंग्लिश टीम पहले बल्लेबाजी करते हुए 17.1 ओवर में केवल 68 रनों पर सिमट गई। जवाब में भारत ने 14 ओवर में 3 विकेट के नुकसान पर 69 रन बनाकर जीत हासिल कर ली। 68 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी भारतीय टीम की शुरुआत खराब रही। सलामी बल्लेबाज कप्तान शेफाली वर्मा तीसरे ओवर में हन्नाह बाकर की गेंद पर पवेलियन लौट गईं। शेफाली ने 11 गेंदों पर 1 चौके और 1 छक्के की बदौलत 15 रन बनाए। इसके बाद चौथे ओवर में 20 के कुल स्कोर पर श्वेता सहरावत भी केवल 5 रन बनाकर ग्रेस स्क्रिवेन्स का शिकार बनीं। 13वें ओवर में भारतीय टीम लक्ष्य से जब तीन रन दूर थी, तभी गोंगदी तृषा को स्टोनहाउस ने आउट कर भारत को तीसरा झटका दिया। तृषा ने 29 गेंदों पर 3 चौकों ▸▸शेष पृष्ठ 11 पर

भारत जोड़ो यात्रा लोगों को जोड़ना, नफरत खत्म करना था यात्रा का लक्ष्य

जम्मू-कश्मीर में टारगेट किलिंग हो रही है : राहुल

एजेंसी। श्रीनगर

कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने रविवार को कहा कि अगर घाटी में हालात सामान्य हैं तो गृह मंत्री अमित शाह यहां आएं। यहां धमाके हो रहे हैं, टारगेट किलिंग हो रही है।

यहां संवाददाताओं से बातचीत में **राहुल गांधी ने कहा :** जम्मू-कश्मीर में टारगेट किलिंग, ब्लास्ट हो रहे हैं। अगर सुरक्षा व्यवस्था इतनी ही अच्छी है तो बीजेपी लाल चौक से जम्मू तक यात्रा क्यों नहीं करती? गृह मंत्री जम्मू से कश्मीर तक यात्रा क्यों नहीं करते? मुझे नहीं लगता कि यहां की सुरक्षा व्यवस्था ठीक है। राहुल ने कहा कि उन्हें इस यात्रा में बहुत कुछ सीखने को मिला। यात्रा का लक्ष्य लोगों को जोड़ना था, नफरत खत्म करना था, लोगों की बहुत अच्छी प्रतिक्रिया मिली। एक सवाल के जवाब में राहुल ने कहा कि विपक्ष की पार्टियों में जो एकता आती है वो बातचीत से आती है। यह कहना कि विपक्ष बिखरा हुआ है, ठीक नहीं है।

आज होगा यात्रा का समापन : गौरतलब है कि कांग्रेस की भारत जोड़ो यात्रा लाल चौक के बाद शहर के बुलेवार्ड क्षेत्र में नेहरू पार्क की तरफ बढ़ गई है, जहां 4,080 किलोमीटर लंबी इस पदयात्रा का 30 जनवरी को समापन हो जाएगा। यह यात्रा सात सितंबर को तमिलनाडु के कन्याकुमारी से शुरू हुई थी और देशभर के 75 जिलों से गुजर चुकी है। सोमवार को राहुल गांधी श्रीनगर में एमए रोड स्थित कांग्रेस मुख्यालय में तिरंगा फहराएंगे, जिसके बाद एसके स्टेडियम में एक जनसभा आयोजित की जाएगी। इस जनसभा के लिए 23 विपक्षी दलों के नेताओं को आमंत्रित किया गया है। आमंत्रण के बावजूद जद (यू) सहित कई पार्टियों के 30 जनवरी को कश्मीर में ▸▸शेष पृष्ठ 11 पर

नो नफरत, नो बंटवारा पॉलिटिक्स : सुरजेवाला

कांग्रेस नेता रणदीप सिंह सुरजेवाला ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी को अपने मन के चोर को देख लेना चाहिए, तो उन्हें पता चल जाएगा कि देश में नफरत कौन फैला रहा है और देश का बंटवारा कौन कर रहा है। देश में नफरत और डर का माहौल बना दिया गया। इसके लिए मोदी सरकार जिम्मेदार है। लाल चौक से भारत का तिरंगा फहराकर हमने ये दिखाया है कि न तो नफरत चलेगी, न बंटवारा और न ही विभाजन। इस देश में प्रेम, मोहब्बत और भाईचारा चलेगा।

एक दिन पहले ही फहरा दिया झंडा

कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने ट्वीट कर कहाः राहुल गांधी को 30 जनवरी को पीसीसी कार्यालय में राष्ट्रीय ध्वज फहराना था, क्योंकि कहीं और इसकी अनुमति नहीं दी गई थी। कल शाम राज्य प्रशासन ने उन्हें लाल चौक में झंडा फहराने की सशर्त अनुमति दी कि ये कार्यक्रम 29 तारीख को ही होना चाहिए।

झारखंड के सरकारी स्कूलों में पांच जनजातीय भाषाओं की होगी पढ़ाई

नवीन मेल संवाददाता। रांची

राज्य के सरकारी प्राथमिक स्कूलों में अब अनिवार्य रूप से जनजातीय भाषाओं की पढ़ाई करायी जाएगी। जनजातीय भाषाओं की पढ़ाई क्लास एक से तीन तक के बच्चों को करायी जाएगी। यह फंडामेंटल लिटरेसी और न्यूमेरेसी प्रोग्राम के तहत चालू किया जाएगा। तीसरी क्लास के बच्चे को हो, मुंडारी, खड़िया, कुड़ूख और संथाली भाषा पढ़ाई जाएगी। राज्य के सभी सरकारी स्कूलों में पहली से तीसरी तक के छात्र-छात्राओं के लिए फंडामेंटल लिटरेसी और न्यूमेरेसी कार्यक्रम चल रहा है। यह ऐसा प्रोग्राम है, जिसमें गणित और भाषा की पढ़ाई पर विशेष जोर दिया जा रहा है। गणित की पढ़ाई तो आरंभिक स्तर से चल रही है। वहीं, अगले साल से पांच जनजातीय भाषाओं को इसमें जोड़ा गया है। स्कूलों में जनजातीय भाषाओं की पढ़ाई हो सके इसके लिए झारखंड राज्य शिक्षा परियोजना को जिम्मेदारी दी गयी है। यही इन भाषाओं की किताबें भी तैयार करा रहा है। 20 से अधिक कहानियां इन भाषाओं की किताब में होगी। स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग के मुताबिक जिन स्कूलों में इसकी शुरुआत की जाएगी, वहां 10-10 किताबों का सेट दिया जाएगा। ये किताबें बाइलिंग्वल होंगी, जहां पिक्च र और टैक्स्ट दोनों के माध्यम से बच्चों को संबंधित भाषा लिखना, पढ़ना सिखाया जाएगा। जरूरत पड़ने पर शिक्षकों को ट्रेनिंग भी दी जाएगी। नयी शिक्षा नीति में भी लोकल लैंग्वेज पर जोर दिया जा रहा है। वहीं, स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग लंबे समय से प्राइमरी स्तर पर लोकल लैंग्वेज को सिलेबस में जोड़ने के लिए प्रयासरत है। इसके पीछे का मकसद रहा है कि जिस क्षेत्र में जो लैंग्वेज पॉपुलर है, वहां उसी लैंग्वेज में पढ़ाई करायी जाए। इससे बच्चों में लर्निंग कैपेसिटी बढ़ेगी।

NEWS इन ब्रीफ

अनियंत्रित टेम्पो पलटने से दो लोग घायल, रेफर

विश्रामपुर। पांडू मुख्य मार्ग पर शनिवार को बंदला गांव के समीप अनियंत्रित टेंपू पलटने से दो लोग गंभीर रूप से घायल हो गए है। घायलों में मेढणा खुर्द की देवंती देवी और केतात के प्रवेश राम का नाम शामिल है । प्राप्त जानकारी के अनुसार उक्त दोनों पांडू से टेंपू द्वारा रेहला जा रहे थे। तभी बंदला गांव के समीप पहुंचते ही टेंपु अनियंत्रित होकर सड़क के किनारे गड्ढे में जा गिरी। जिसमें देवन्ती देवी व प्रवेश राम दोनों गंभीर रूप से घायल हो गए। स्थानीय लोगों ने घायलों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र विश्रामपुर में भर्ती कराया। वही सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के चिकित्सको ने दोनों घायलों को प्राथमिक उपचार के उपरांत बेहतर इलाज हेतु 108 एंबुलेंस की मदद से एमएचसीएच मेदिनीनागर रेफर कर दिया।

नील गाय के आतंक से ग्रामीण परेशान

सतबरवा। प्रखंड के रेवारातू पंचायत के मुकरूम ,चपरना के किसान इन दिनों नील गाय के आंतक से परेशान हैं और रात दिन फसलों की रखवाली कर रहें हैं। रखवाली के बावजूद भी नील गाय फसल को चर जा रहें हैं। यह परेशानी का सबब बन गया है। वहीं मुकरूम के सुनील कुमार यादव का कहना है कि 10 वर्ष पहले एक दो नील गाय यहां थे। लेकिन दस बर्षो में इनकी संख्या करीब 25 ,26 हो गई है। शाम के बाद झुंड में नील गाय का आक्रमण खेतों पर होता है। गांव के लोग मिल कर उसे भगाते हैं। इसी भाग दौड़ में नील गाय फसलों को बर्बाद कर दे रहे हैं। वहीं जितेंद्र यादव का कहना है कि गेहूं की फसल को एक बार पूरी तरह नीलगाय खा गए हैं। पानी के लगातार पटवन से फसल में फीर से पत्ते निकल रहे हैं। लेकिन नीलगाय की आतंक से हम अपने फसलों को नहीं बचा पा रहे है।

खेल से जीवन में आगे बढ़ने की मिलती है सीख : विनोद

हुसैनाबाद। जिस तरह मनुष्य को जीवन जीने के लिए भोजन जरूरी है। ठीक उसी प्रकार शरीर को स्वस्थ रखने के लिए खेल भी जरूरी है। खेल से जीवन में संघर्ष कर आगे बढ़ने की सीख भी मिलती है। उक्त बातें भाजपा के वरिष्ठ नेता विनोद कुमार सिंह ने रविवार को बड़ेपुर पंचायत के घोड़बंधा आदर्श कमिटी के तत्वावधान में आयोजित क्रिकेट टूर्नामेंट के उद्घाटन समारोह में लोगों को संबोधित करते हुए कही। उद्घाटन मैच कामत क्रिकेट टीम बनाम दुल्हर टीम के बीच खेला गया। इसके पूर्व टूर्नामेंट के मुख्य अतिथि बिनोद कुमार सिंह, ने टूर्नामेंट का उद्घाटन किया। मौके पर उन्होंने ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में खेल प्रतिभावों की कमी नहीं है। अच्छे खिलाड़ी गांव से भी निकलकर अपने क्षेत्र का नाम रौशन कर रहें है। समाचार लिखे जाने तक मैच जारी था। मौके पर भाजपा मंडल अध्यक्ष व प्रशांत सिंह, अशोक मेहता, प्रभात कुमार, रवि सिंह, रामकुमार सिंह, छोटू सिंह के अलावा कई खेल प्रेमी शामिल थे।

आम आदमी पार्टी ने चलाया सदस्यता अभियान

मेदिनीनगर। चैनपुर प्रखंड अंतर्गत पूर्वडीहा पंचायत में जनसंपर्क एवं सदस्यता अभियान के तहत आम आदमी पार्टी ने बैठक की। जिसकी अध्यक्षता पलामू जिला संयोजक चंद्रबली चौबे ने की। कार्यक्रम का संचालन सतीश सोनी ने किया। बैठक में उदय कुमार उर्फ पिंटू पासवान के नेतृत्व में काफी संख्या में लोग केजरीवाल के कार्यों एवं पार्टी की नीतियों से प्रभावित होकर पार्टी का सदस्यता ग्रहण किया। मौके पर उपस्थित रिंकू पासवान, सीताराम चौधरी,निहोदा राम, महेश्वर चौधरी, कमलेश्वर चौधरी दीवाकर राम मणी राम,विकेश चौधरी, अशरफी चौधरी, श्रवण कुमार,धीरज कुमार,नीरज चौधरी एवं अन्य लोगों ने आम आदमी पार्टी का दामन थामा। और तन मन से पार्टी को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया। मौके पर किशोर सिन्हा, ओम प्रकाश गुप्ता, ओम प्रकाश दूबे सहित पार्टी के कई कार्यकर्ता उपस्थित थे।

मैया खोलू न केवड़िया की बड़ी देर से खड़ी...

भगवती जागरण का दर्शकों ने उठाया आनंद

नवीन मेल संवाददाता

हुसैनाबाद। पलामू जिले के हैदरनगर के प्रसिद्ध देवी धाम प्रांगण में आयोजित मां देवी की प्राण प्रतिष्ठा सह शतचंडी महायज्ञ में भजन संध्या पर भगवती जागरण कार्यक्रम का आयोजन भाजपा नेता विनोद कुमार सिंह ने किया। इस मौके पर समिति के संयोजक समाजसेवी व व्यवसायी उपेंद्र सिंह, मुखिया संतोष कुमार सिंह, ऊंटारी के जिप सदस्य अरविंद सिंह, सतेंद्र सिंह विशेष अतिथि के रुप में शामिल थे। कार्यक्रम में महुआ चैनल के कलाकारों ने आधी रात तक एक से बढ़कर एक माता की भेंट व भजन प्रस्तुत किया। भजन संध्या रात नौ बजे से शुरू हुआ। कलाकारों व विशिष्ट अतिथि को अंग वस्त्र पहना कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। कलाकारों ने भजनों से ऐसा समा बांधा कि

हजारों लोग झूमने को विवश हो गये। मैया खोलू न केवडिया बड़ी देर से खड़ी..बड़ी देर से खड़ी हो मइया., बड़ी देर से खड़ी.. भक्ति गीत पर श्रोता झूम उठे। खुशी के बिभोर बाटे निमिया पतैया, असो के नवमी में आईबा कि न आईबा, जैसे कई भक्ति भजन प्रस्तुत किया। कलाकार पारो नन्दा, ओम तिवारी, के भजनों को सुन श्रोता भक्ति भाव में डूबते नजर आये। वहीं श्रद्धालुओं ने भक्ति गीत पर थिरकना व जमकर नृत्य करना शुरू कर दिया। कार्यक्रम को सफल बनाने में बभंडी पंचायत के मुखिया जितेंद्र सिंह, अनिल सिंह, रत्नेश कश्यप, आशीष गुप्ता, डॉ. अजय जयसवाल, उज्ज्वल पांडेय, रौनक सिंह, ब्रिज सोनी, मणिराज जयसवाल का योगदान सराहनीय रहा।

सरस्वती पूजा के अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन

नवीन मेल संवाददाता

सतबरवा। तूफान मजदूर किसान कमेटी के द्वारा सरस्वती पूजा के उपलक्ष्य में रविवार को चपरना के महुआ टांड में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसका उद्घाटन प्रमुख रीमा देवी, उप प्रमुख कामाख्या यादव, पूर्व विधायक प्रतिनिधि लक्ष्मण यादव, सामाजिक कार्यकर्ता आशीष कुमार सिन्हा, संजय तुरी ने फीता काटकर किया। सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति भोजपुरी व्यास मंटू लाल भोजपुरिया के द्वारा किया गया। व्यास मंटूलाल ने एक से बढ़कर एक भक्ति गीत के साथ भोजपुरी गीत की प्रस्तुत किया। मौके पर तूफान मजदूर किसान कमेटी के अध्यक्ष संजय भुइयां ने कहा कि यह कार्यक्रम सरस्वती पूजा के उपलक्ष्य में रखा गया है। परंतु इसके साथ ही इसी स्थल पर एक मंदिर निर्माण कराया जाएगा। क्योंकि इस स्थल पर पहले से पूजा पाठ होते आ रहा है। मौके तूफान मजदूर किसान कमेटी के सचिव सूर्यदेव पुरी, उपाध्यक्ष नर्वदेश्वर ठाकुर के साथ दर्जनों कार्यकर्ता सहित कई लोग उपस्थित थे।

नो पार्किंग से चार टेंपो जब्त

थाना प्रभारी ने की कार्रवाई

नवीन मेल संवाददाता

हरिहरगंज। शहरी क्षेत्र के एनएच 98 पुरानी बस स्टैंड से न्यू बस स्टैंड तक नो पार्किंग में टेंपो सहित अन्य वाहन खड़ा करने पर होगी कार्रवाई। उक्त बातें हरिहरगंज थाना प्रभारी सुदामा कुमार दास ने रविवार को एनएच 98 सिनेमा मोड़ के समीप खड़ा किए हुए टैंपू संचालकों को हिदायत देते हुए कही। इस दौरान उन्होंने कहा कि सड़क को सुंदर और सुसज्जित बनाने के लिए निर्धारित की गयी स्थल पर ही वाहन को खड़ा करने की बात कही। उन्होंने टेंपो चालक वा संचालकों से निर्धारित स्थल पर ही टेंपो पार्क करने की अपील की। थाना प्रभारी के निर्देश पर जांच अभियान चलाया गया। जांच के क्रम में दुर्गा मंदिर रोड, एनएच 98 पर इधर-उधर खड़ा किए गए टेंपो को जब्त कर जिला परिवहन विभाग को कार्रवाई के लिए भेजा गया। मालूम हो कि हरिहरगंज शहर में रोज लग रहे जाम से लोगों को मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है। आवागमन बहाल करने के लिए रोज पुलिस को जूझना पड़ रहा है। शहर में रोजाना नो पार्किंग अवैध अड्डे पर टेंपो खड़े रहते हैं। जो एनएच 98 पर अतिक्रमण किए रहते हैं। सवारी बैठाने की होड़ में टेंपो आगे-पीछे करते रहते हैं, इससे कई बार टेंपो से टकराकर राहगीर चोटिल के साथ ही सड़क दुर्घटना व एक्सीडेंट का शिकार हो जाते हैं। थाना प्रभारी सुदामा कुमार दास ने कहा कि नो पार्किंग में खड़े टेंपो संचालकों पर लगातार अभियान चलाकर कार्रवाई की जाएगी।

भाजपा कार्यकर्ताओं ने सुनी 'मन की बात' कार्यक्रम

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। भाजपा ग्रामीण मंडल अंतर्गत बूथ संख्या 245 बरालोटा उत्तरी में भाजपा ग्रामीण मंडल अध्यक्ष सुनील कुमार पाण्डेय के नेतृत्व में पीएम की मन की बात का 97 वां एपिसोड सुना गया। जिसमें प्रदेश के कार्यसमिति सदस्य विभाकर नारायण पांडे ,प्रफूल सिंह, जिले के सांसद प्रतिनिधि विजय ओझा, भाजपा ग्रामीण मंडल महामंत्री शुभक तिवारी ,वार्ड नंबर 6 के वार्ड पार्षद मनोज प्रजापति ,शंकनाथ तिवारी ,नित्यानंद तिवारी, विनय तिवारी ,आनंद प्रकाश तिवारी, प्रेम चंद तिवारी, नयन तिवारी, मिथिलेश तिवारी ,मदन मोहन तिवारी, नागेश्वर राम, कईल मोची, सहित काफी संख्या में लोगों ने मन की बात को सुना। कार्यक्रम के बाद प्रदेश के नेता विभाकर नारायण पांडे ने कहा कि हम सभी लोगों को पीएम की मन की बात को सुनना चाहिए। इससे हमें नई जानकारियां मिलती है साथ ही रोजगार के साधन की भी जानकारी हमें प्राप्त होती है। इसलिए हर बूथ पर अधिक से अधिक संख्या में लोगों को जूट कर मन की बात को सुनना चाहिए। विजय ओझा ने सभी को मन की बात सुनने के लिए धन्यवाद दिया । वही लोगों से अपील किया कि और अधिक संख्या में लोग जुड़े और मन की बात को सुनें।

11 हजार बिजली तार की चपेट में आने से छह भैंस की मौत

मेदिनीनगर। पलामू जिले के नौडीहा बाजार प्रखंड अर्न्तगत डगरा के सडकाही टोला में भैंस चराने के क्रम में 11, हजार बिजली तार की चपेट में आ जाने से छह भैसों की मौत घटना स्थल पर ही हो गई। भैस विजय यादव पिता हुसैनी यादव की बताई जा रही है। जिसमें दो दुधारू एवं चार गर्भधारण भैंस है। वहीं चरवाहा बाल-बाल बच गया । भुक्तभोगी किसान विजय यादव ने बताया कि इस भैसों से ही मैं अपने घर परिवार का गुजर बस करता था और अपने बच्चों पढ़ाता था। इस घटना से मेरी कमर टूट गई है। यह बिजली विभाग की घोर लापरवाही है। जिसकी वजह से नौडीहा प्रखंड के क्षेत्र में कई मवेशी एवं ग्रामीण जान गवा बैठे हैं।

सहायक शिक्षक का हार्ट अटैक से मौत

हुसैनाबाद। प्रखंड के देवरी खुर्द पंचायत के राजकीय मध्य विद्यालय देवरी खुर्द के सहायक शिक्षक कैलाश राम 53 वर्ष की हार्ट अटैक होने से रविवार की अहले सुबह मौत हो गई। बताया जाता है कि शिक्षक सुबह में शौच के लिए शौचालय में गए थे। उसी क्रम में हार्ट अटैक होने के कारण अचानक गिरने से मौत हो गई। उक्त सहायक शिक्षक बिहार के खगड़िया जिला के बंसलपुर गांव के रहने वाले हैं। जबकि वर्तमान में देवरी रोड में इंडेन गैस गोदाम के समीप किराए के मकान में रहते थे। इस घटना की सूचना पर हुसैनाबाद उत्तरी जिप सदस्य राजू मेहता ने भी वहां पहुंच कर दुःख प्रगट किया है। साथ ही इस दुःख की घड़ी में परिजनों को धैर्य रखने की सलाह दी हैं। वहीं पुलिस ने शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम कराने के बाद शव परिजनों को सुपुर्द कर दिया।

हड़ताल पर बैठे एनएचएम कर्मियों ने किया हवन

सरकार से स्थाई करने की मांग की

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। पलामू सहित झारखंड में एनएचएम कर्मी हड़ताल पर हैं। एनएचएम कर्मी आमरण अनशन के साथ-साथ धरना पर भी बैठे हुए हैं। पलामू में हड़ताली एनएचएम कर्मियों ने हवन का आयोजन किया। जो देर शाम तक चला। इस हवन में दर्जनों एनएचएम कर्मी शामिल हुए। एनएचएम कर्मियों का कहना है कि वे सरकार की सद्बुद्धि के लिए हवन कर रहे हैं, ताकि उनकी मांगों को पूरा किया जा सके। इधर हड़ताली कर्मियों के समर्थन में राज्य के पूर्व ग्रामीण विकास मंत्री केएन त्रिपाठी भी उतर गए हैं। हवन के दौरान वे भी मौके पर पहुंचे थे। इस दौरान उन्होंने कर्मियों से बातचीत की। केएन त्रिपाठी ने कहा कि वे मामले में मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से मुलाकात करेंगे और कर्मियों की सेवा को स्थाई करने की मांग करेंगे। उन्होंने कहा कि जिस तरह पारा शिक्षक एवं अन्य कर्मियों की समस्याओं का समाधान हुआ है । उसी तरह एनएचएम कर्मियों के समस्याओं का समाधान किया जाएगा। केएन त्रिपाठी ने कहा कि कर्मियों को स्थाई करना स्वास्थ्य मंत्री का कार्य नहीं है । बल्कि इसके लिए मुख्यमंत्री ही सक्षम हैं। वे सीएम से मुलाकात करने जाएंगे और मांगों पर सहानुभूति पूर्वक विचार करते हुए समाधान करने का आग्रह करेंगे। पलामू में दो हजार के करीब राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन से जुड़े हुए कर्मचारी हैं। जिनमें एएनएम लैब टेक्नीशियन समेत कई कर्मी शामिल हैं। सभी कर्मी हड़ताल पर चले गए हैं। एएनएम एवं लैब टेक्नीशियन के हड़ताल पर चले जाने के कारण स्वास्थ्य सुविधाओं पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। पलामू जैसे इलाके में टीकाकरण समेत कई सरकारी योजनाएं प्रभावित हुई हैं। पलामू में 171 स्वास्थ्य उप केंद्र मौजूद हैं । जिनमें से दर्जनों स्वास्थ्य केंद्र एएनएम के भरोसे संचालित हैं। हड़ताल के कारण स्वास्थ्य केंद्र भी बंद हो गए हैं। एनएचएम कर्मी अपनी सेवा को स्थाई करने की मांग कर रहे हैं। पिछले एक सप्ताह से वे हड़ताल पर हैं और चरणबद्ध तरीके से आंदोलन चला रहे हैं।

तेजस युवा क्लब ने सूर्य मंदिर निर्माण की रखी आधारशिला

नवीन मेल संवाददाता

हुसैनाबाद। प्रखंड के देवरी खुर्द पंचायत के देवरी खुर्द गांव के समीप नदी में छठ घाट पर तेजस युवा क्लब के द्वारा सूर्य मंदिर निर्माण कार्य को लेकर भूमि पूजन कर आधारशिला रखी गई। अशोक मिश्रा पुरोहित के द्वारा वैदिक मंत्रोच्चारण और ओमप्रकाश विश्वकर्मा यजमान के द्वारा पूजा अर्चना कर ध्वज गाड़ी गई। इस मौके पर उतरी क्षेत्र के जिला पार्षद राजू कुमार मेहता उर्फ एसपी मेहता मौजूद थे। मौके पर राजू मेहता ने कहा कि सूर्य मंदिर का निर्माण हो जाने से छठ व्रतधारियों को सूर्य भगवान को अर्घ्य अर्पित करने में श्रद्धालुओं को आस्था के प्रति काफी लाभ मिलेगा। इस मौके पर तेजस के अध्यक्ष अभिषेक कुमार, आलोक कुमार यादव, बृजराज पांडेय, रौशन ओझा, धर्मेन्द्र मेहता, गणेश मेहता , मनोज विश्वकर्मा, अजीत मेहता, निरंजन मेहता, नीरज ओझा, हिमांशु पांडेय, दशरथ मेहता, शशिकांत ओझा,भैरों विश्वकर्मा, जगमोहन यादव, रामपृत, बासुदेव मेहता, हरिहर मेहता के अलावा काफी संख्या में ग्रामीण व तेजस युवा क्लब के सदस्य मौजूद थे।

राजद का कार्यकर्ता मिलन सह वनभोज कार्यक्रम

नवीन मेल संवाददाता

मनातू। राष्ट्रीय जनता दल झारखण्ड के प्रदेश महासचिव डॉ.अरुण कुमार के द्वारा शनिवार की सुबह दस बजे दिन में तरहसी प्रखंड स्थित धोनी स्टेडियम के समीप राष्ट्रीय जनता दल का कार्यकर्त्ता मिलन समारोह सह वनभोज कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसके मुख्य अथिति मंत्री सत्यानंद भोगता उपस्थित रहें। साथ ही डॉ. अरुण के नेतृत्व में दो विधायक प्रतिनिधि सीरिस्ता भुइयां सहित दो जिला पार्षद, वर्तमान व पूर्व मुखिया सहित सैकड़ो लोगों ने राजद का दामन थामा। डॉ. अरुण ने मुख्य अथिति मंत्री भोक्ता का स्वागत पुष्प गुच्छ, और 51 किलो के फूल माला, चांदी का मुकुट व शॉल देकर किया। साथ ही वहां मौजूद सभी अथितियों को शॉल और माला पहना कर स्वागत किया गया। विशिष्ट अथिति पूर्व लोकसभा प्रत्याशी छत्तरपुर पलामू के पूर्व प्रत्याशी विजय राम, वरिष्ठ नेता विश्वनाथ घुरा, सुचित्रा पासवान, प्रदेश महासचिव कमलेश यादव, दलित प्रकोष्ठ अध्यक्ष राजेश रौशन, युवा प्रदेश अध्यक्ष रंजन यादव, महासचिव युवा जिलाध्यक्ष फायजूल हक, युवा महासचिव उज्वल सिंह, प्रखंड अध्यक्ष तरहसी पांकी, मनातू, लेस्लीगंज से तनवीर, तौकीर, केदार, पलामू जिला अध्यक्ष मोहन विस्वकर्मा सहित प्रदेश स्तरीय, युवा प्रकोष्ठ प्रदेश अध्यक्ष रंजन यादव, प्रदेश व युवा, प्रखंड स्तरीय, छात्र इकाई सहित सभी प्रकोष्ठ स्तरीय राष्ट्रीय जनता दल के सभी सम्मानित पदाधिकारीगण, कार्यकर्तागण कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

संत मरियम स्कूल में नामांकन की परीक्षा सम्पन्न

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। संत मरियम स्कूल के सभी शाखाओं में नए सत्र के नामांकन के लिए वर्ग नर्सरी से नौवीं तक के छात्र-छात्राओं की लिखित परीक्षा संपन्न हुई। मौके पर स्कूल के चैयरमैन अविनाश देव ने कहा कि आज के लिखित परीक्षा का परिणाम 1 फरवरी को स्कूल के सूचना पट्ट पर प्रकाशित किया जायेगा और 2 फरवरी से सफल छात्रों का नामांकन प्रारम्भ हो जायेगा। लिखित परीक्षा में प्राप्तांक एवं साक्षात्कार के माध्यम से ही मेधावी विद्यार्थियों का नामांकन संत मरियम स्कूल में होगा। अविनाश देव ने कहा कि अभिभावकों की लगातार बढ़ती मांग के मद्देनजर विद्यालय प्रबंधन पुनः नए सत्र में नामांकन हेतु दूसरी लिखित परीक्षा 26 फरवरी को आयोजित करेगा। साथ ही उन्होंने सभी को सूचित किया कि हमारे विद्यालय में रिक्तियां बहुत कम है। अतः सफल सभी विद्यार्थी यथाशीघ्र नामांकन करा लें।

आश्वासन

मृतक के परिजनों से मिले समाज के जिला अध्यक्ष

परिजनों को हर संभव मदद देने का आश्वासन

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। अखिल भारतीय चंद्रवंशी महासभा के पलामू जिला अध्यक्ष सह समाजसेवी विजय चंद्रवंशी, चैनपुर पूर्व जिला परिषद शैलेंद्र कुमार शैलू ,समाजसेवी जुगल किशोर रविवार को नौडीहा बाजार थाना क्षेत्र के ग्राम बिशनपुर पहुंचकर मृतक के परिजनों से मिले। सभी ने मिलकर शोक प्रकट करते हुए परिजनों को सांत्वना दी। मौके पर उपस्थित सभी लोगों ने कहा कि हम सब शोकाकुल परिवार के साथ हर संभव मदद के लिए खड़े हैं। मालूम हो कि 26 जनवरी दिन गुरुवार की रात नौडीहा बाजार थाना क्षेत्र के ग्राम बिशनपुरा में सड़क हादसे में चार बच्चों की

मौत हो गई थी। इस हादसे में बिसनपुर गांव के आशीष कुमार चंद्रवंशी पिता मदन सिंह, नीतिश कुमार पिता नाथू सिंह, फिरोज अंसारी पिता रमजान अंसारी और विवेक कुमार पिता सिकंदर सिंह की मौत हो चुकी है। इस घटना के बाद बिसनपुर गांव में चीख-पुकार मची हुई है । मौके पर उपस्थित चंद्रवंशी महासभा के पलामू जिला अध्यक्ष विकी चंद्रवंशी ने कहा कि मृतक सभी बच्चे पढ़ने लिखने व काबिल योग्य थे। इन सभी की मृत्यु से चंद्रवंशी समाज को काफी क्षति हुई है। उन्होंने कहा कि मृतक के परिजन को किसी भी प्रकार की दिक्कत या परेशानी होती है तो वह उनके साथ 24 घंटे खड़े हैं। वही मौके पर उपस्थित चैनपुर पूर्व जिला परिषद शैलेंद्र कुमार शालू ने कहा कि पलामू डीटीओ को वाहन चलाने वाले चालकों पर सड़कों पर कढ़ाई करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि रात के समय लोग नशा कर वाहन चलाते हैं, जिला परिवहन विभाग के कर्मियों को रात के समय वाहन चलाने वाले चालकों का ब्रेथ एनालाइजर मशीन लगाकर जांच करने की जरूरत है ताकि आए दिन घटना ना घटे।

बच्चों की मौत पर किया दुख प्रकट

मेदिनीनगर। स्थानीय बेलवाटिका में 29 जनवरी दिन रविवार को अधिवक्ता रंजन कुमार के आवास पर चन्द्रवंशी समाज के रिटायर्ड सरकारी व गैर सरकारी कर्मचारियों की एक बैठक की गयी। जिसकी अध्यक्षता कृष्ण कुमार ने की। बैठक में चन्द्रवंशी समाज के सामाजिक विकास व उत्थान के विषय पर चर्चा की गई। चर्चा के दौरान मौके पर उपस्थित लोगों ने कहा कि नौडीहा बाजार पलामू जिला में समाज के ही चार बच्चों नितीश कुमार चन्द्रवंशी, आशीष कुमार चन्द्रवंशी, विवेक कुमार चंद्रवंशी एवं फिरोज अंसारी को अनियंत्रित स्कार्पियों ने रौंद दिया। जिससे सभी की घटना स्थल पर ही मौत हो गयी। घटना 27 जनवरी की है। चंद्रवंशी समाज ने इस हृदय विदारक घटना पर मुख्यमंत्री से मृतक के गांव पर जाकर मृतक के परिवार से मिलने का आग्रह किया है।

आचार्य सिद्धेश्वर पाठक की मनी तीसरी पुण्यतिथि

नवीन मेल संवाददाता

हुसैनाबाद। शिक्षाविद व ज्योतिषाचार्य आचार्य सिद्धेश्वर पाठक की तीसरी पूण्य तिथि मनाई गई। जिसका आयोजन आचार्य सिद्धेश्वर फाउंडेशन ने जपला स्थित जगमोहन कुटीर में की गई। मौके पर आचार्य सिद्धेश्वर पाठक के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलित की गई। श्रद्धासुमन अर्पित कर उन्हें नमन किया गया। उनके पदचिन्हों पर चलकर विचारों को आत्मसात करने का संकल्प लिया गया। इस दौरान क्षेत्र के विभिन्न मंदिरों को फाउंडेशन द्वारा निर्धारित राशि का चेक दिया गया। आचार्य सिद्धेश्वर पाठक के स्मृति में वृक्षरोपण की गई। फाउंडेशन के अध्यक्ष अंगद किशोर ने उनके जीवनी पर विस्तृत प्रकाश डाला। आचार्य सिद्धेश्वर पाठक को अध्यात्म, ज्ञान व त्याग का त्रिमूर्ति बताया। कहा कि बाबा के तीसरी पूण्य तिथि पर फाउंडेशन द्वारा चयनित महावीर मंदिर, बाबा विश्वनाथ भास्कर मंदिर, पंच मंदिर सरोवर व जमुहारी माई मंदिर को पूर्व से निर्धारित राशि का चेक भेंट किया गया। सचिव आलोक कुमार ने कहा कि बाबा के बताए हुए पदचिन्हों पर अग्रसर है। शिक्षा, चिकित्सा व विभिन्न मंदिरों के विकास के क्षेत्र में गत 2012 से लगातार कार्य रहा है। फाउंडेशन के संरक्षक वरिष्ठ अधिवक्ता चन्द्रेश्वर प्रसाद, कोषाध्यक्ष श्रवण कुमार अग्रवाल, बाबा विश्वनाथ भास्कर मन्दिर के अध्यक्ष अशोक कश्यप, जमुहारी माई मंदिर के अध्यक्ष अजय प्रसाद गुप्ता, महावीर मंदिर के अध्यक्ष राकेश तिवारी, कमलेश कुमार विश्वकर्मा, रविन्द्र कुमार सिंह, धनन्जय कुमार सिंह, मुकेश विश्वकर्मा, राजू कुमार सोनी सहित कई लोग मौजूद थे।

ग्रामीणों को सुरक्षाबलों की मदद से मिल रहा रोजगार

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। पलामू बूढ़ा पहाड़ पर सुरक्षाबलों के पंहुचने के बाद ग्रामीणों के लिए रोजगार के कई साधन खुल गए हैं। ग्रामीण सुरक्षाबलों के कैंपों में सामग्री को पहुंचा कर पैसे कमा रहे हैं। ग्रामीण पैदल या फिर घोड़े की मदद से पहाड़ों पर बने सुरक्षाबलों के कैंपों तक सामग्री पहुंचते हैं। इसके बदले उन्हें पारिश्रमिक मिलते हैं। स्थिति यह है कि ग्रामीणों को घोड़ा खरीदने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है, ताकि इसके जरिए उन्हें अच्छी आमदनी हो सके। क्योंकि सुरक्षाबलों द्वारा पैदल सामान पहुंचाने वालों को प्रति ट्रिप 100 रुपये और घोड़ा की मदद से सामान पंहुचाने वाले को 500 रुपये मिलते हैं। सुरक्षाबलों ने ग्रामीणों से घोड़ा खरीदने की अपील की है, ताकि उन्हें अधिक से अधिक लोगों को सप्लाई कर सके। और उन्हें रोजगार मुहैया कराई जा सके। पलामू रेंज के आईजी राजकुमार लकड़ा ने बताया कि कैंपों के माध्यम से लोगों को रोजगार उपलब्ध करवाने की पहल की गई है। लोग सुरक्षाबलों के कैंपो के सप्लाई लाइन से जुड़ेंगे तो उन्हें रोजगार के लिए पलायन नहीं करना पड़ेगा। उन्होंने कहा कि आने वाले छह आठ माह में इस इलाके को सड़क और पुल पुलिया बनाया जाएगा, ताकि लोगों को आने-जाने में दिक्कत नहीं हो सके। बूढ़ा पहाड़ झारखंड के गढ़वा जिले में मौजूद है। इसकी सीमा लातेहार और छत्तीसगढ़ के बलरामपुर से लगी है। यंहा जाने के लिए छत्तीसगढ़ के पुंदाग और लातेहार के तिसिया गांव से सीधी चढ़ाई करनी पड़ती है। दोनों तरफ से पहाड़ चढ़ने में लोगों को करीब दो घंटे से अधिक समय लगते हैं। लेकिन स्थानीय युवा इस पहाड़ को 40 मिनट में चढ़ जाते है। सुरक्षाबलों के सप्लाई लाइन से आदिम जनजाति परिवार के लोग जुड़े हुए हैं। बूढ़ा पहाड़ के इलाके में नक्सली घोड़ा का इस्तेमाल करते थे। 2015-16 में सुरक्षाबलों ने बड़ी संख्या में नक्सलियों के घोड़े को बरामद किया था। बूढ़ा पहाड़ और उसके आसपास के इलाकों में आधा दर्जन से अधिक पुलिस कैंप बनाए गए हैं। इन कैंपो मे कोबरा और सीआरपीएफ को तैनात किया गया है। इलाके में बूढ़ा, तिदिया, नावाटोली, बहेराटोली, खपरी महुआ में पुलिस कैंप बनाए गए हैं। यह कैंप पहाड़ों के श्रृंखला पर मौजूद हैं, जहां तक जाने के लिए कोई रास्ता नहीं है। इन कैंपों में जाने के लिए पैदल ही जाना पड़ता है। कैंपों में दो हजार से भी अधिक जवान तैनात हैं। जवानों के लिए सामग्री पहुंचाना बड़ी चुनौती है। हेलीकॉप्टर के माध्यम से कई जगहों पर सामग्री पहुंचाया जा रहा है।

बेरोजगार मोर्चा ने नियुक्ति को लेकर की समीक्षा बैठक

नवीन मेल संवाददात

मेदिनीनगर। बेरोजगार संघर्ष मोर्चा की बैठक 29 जनवरी दिन रविवार को कचहरी परिसर में की गई । जिसकी अध्यक्षता मोर्चा अध्यक्ष उदय राम ने की। बैठक में सफल अभ्यर्थियों की नियुक्ति की मांग को लेकर चलाए जा रहे आंदोलन की समीक्षा की गई। बैठक में कहा गया कि शिक्षा विभाग में 323 स्वास्थ्य विभाग में 115 बंदोबस्त कार्यालय में 97 कुल 495 पद रिक्त हैं और उसके अलावा उपायुक्त के अधीन 18 विभाग आते हैं । सभी विभागों में बड़े पैमाने पर चतुर्थवर्गीय कर्मचारियों का पद रिक्त है। कर्मचारियों की कमी के कारण कामकाज करने में प्रभावित होता है। दूसरी तरफ सफल अभ्यर्थियों की उम्र सीमा समाप्त हो रही है। नियुक्ति नहीं होने लोगों में असंतोष है। उपायुक्त से अनुरोध किया गया कि सफल अभ्यर्थियों की नियुक्ति 2 सप्ताह के अंदर चतुर्थवर्गीय पदों पर नियुक्ति की जाए । बैठक में आदिल हयात, दीपक कुमार ,संजय मिस्त्री, सतीश कुमार, मोहम्मद जुबेर, जलील, मुन्ना कुमार रवि, संतोष कुमार, उपेंद्र कुमार रजक, उपेंद्र तिवारी, सनी कुमार पासवान,राजू कुमार, कृष्ण यादव, सुधीर सिंह, मिथलेश कुमार पासवान, राजेश कुमार, संतोष कुमार, संजीत कुमार उपस्थित हुए।

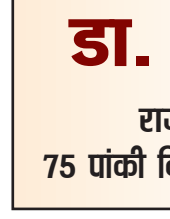

पलामू सहित गैर अनुसूचित जिलों के शिक्षकों का तबादला जल्द

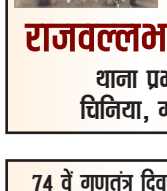

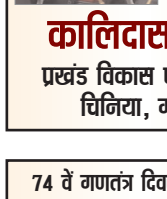

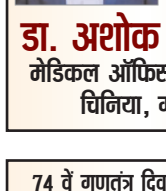

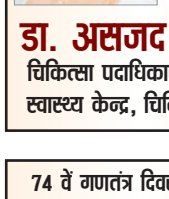

मेदिनीनगर। पलामू सहित गैर अनुसूचित जिलों के हाई स्कूलों में नियुक्त शिक्षकों को अनुसूचित जिलों में तबादला हो सकेगा। अनुसूचित जिलों में हुई नियुक्ति प्रक्रिया में जिस विषय व कोटि में मेधा सूची के निचले क्रम के शिक्षक से अधिक अंक मिला होगा। उन्हें पदस्थापन का मौका मिलेगा। इस संबंध में स्कूली शिक्षा व साक्षरता विभाग ने संबंधित 13 अनुसूचित जिलों के डीसी सह जिला स्तरीय स्थापना समिति के अध्यक्ष को निर्देश दे दिया है। शिक्षा सचिव के रवि कुमार ने निर्देश दिया है कि सर्वोच्च न्यायालय द्वारा दो दिसंबर 2022 को जारी आदेश के अनुपालन के दौरान 11 गैर अनुसूचित जिलों के ऐसे शिक्षकों से विकल्प मांगे गये थे। विभाग को इन सभी जिलों से शिक्षकों का अनुसूचित जिलों में जाने का विकल्प मिल गया है। अब शिक्षा विभाग ने 13 अनुसूचित जिलों से उन योग्य शिक्षकों के अंतर जिला स्थानांतरण का प्रस्ताव मांगा है।

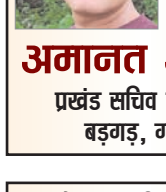

बेटी बचाओं ,बेटी पढ़ाओ अभियान की शुरूआत

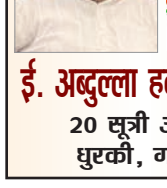

मेदिनीनगर। सीएस ऑफिस सदर अस्पताल के गोलघर से शनिवार की शाम पांच बजे बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान की शुरूआत की गई। इसकी शुरूआत सीएस अशोक कुमार और डीपीएस दीपक कुमार के द्वारा हरी झंडी दिखाकर किया गया। इस दौरान एएनएम जीएनएम के द्वारा जागरूकता को लेकर कैंडल मार्च निकाला गया। कैंडल मार्च सीएस ऑफिस से लेकर छह मुहान होते हुए पुनः सीएस ऑफिस पहुंचकर समाप्त की गई। बताते चले कि बेटी बचाओ ,बेटी पढ़ाओ अभियान की शुरूआत देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा 22 जनवरी 2015 को की गयी थी। केंद्र सरकार के इस योजना द्वारा बेटियों के प्रति समाज में होने वाले नकारात्मक रवैया के प्रति जागरूकता फैलाना व भविष्य को अच्छा बनाने व उनके कल्याण के लिए तमाम योजनाओं को क्रियान्वित करना है। इसी कड़ी में सरकार द्वारा बेटियों के लिए कई योजनाओं को शुरू किया है।

बेरोजगारों के हित में हो केंद्र सरकार की बजट

बजट कैसा हो? आम आदमी के लिए क्या हो उसमें? जनता को क्या कुछ रियायतें चाहिए? जनता किन मुद्दों पर बजट का फोकस देखना चाहती है, यही सब जानने के लिए हमारे संवाददाता ने आम लोगों से बात की। आप भी पढ़ें आम लोगों की उम्मीदों को...

छोटे कारोबारियों को विकसित करने से जुड़ा हो बजट

गढ़वा प्रतिनिधि
केंद्र सरकार की बचत से पूर्व लोगों ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए बजट में आम लोगों की भागीदारी सुनिश्चित करने का अपील किया है। लोगों ने कहा कि केंद्रीय बजट में बेरोजगारों छोटे उद्यमियों शिक्षा स्वास्थ्य बिजली सड़क पर निर्भर बचत होनी चाहिए।

संजय चंद्रवंशी ने बताया कि छोटे कारोबारियों को जोड़कर विकसित करने वाला बजट होनी चाहिए। केंद्रीय बजट में छोटे उद्यमियों को दीक्षित करने वाला बजट होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि इस बार के बजट से गरीब तबके के लोगों को काफी उम्मीद है। बढ़ती महंगाई ने गरीबों का कमर तोड़ दिया है। ऐसे में केंद्र सरकार की बजट पर लोगों को काफी उम्मीद है।

प्रेम कुमार ने बताया कि केंद्र सरकार की इस बार का बजट बेरोजगारों को रोजगार देने की दिशा में होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि सरकार को ऐसी बजट लानी चाहिए कि अधिक से अधिक नियुक्ति हो और अगर नहीं भी हो पाए तो बेरोजगारों को रोजगार से जोड़ा जा सके।

कृष्णा चंद्रवंशी ने बताया कि इस बार का वचन गरीबों के हित में होनी चाहिए। बढ़ती महंगाई ने गरीबों का कमर तोड़ दिया है। महंगाई कम करने के दिशा में इस बार के बजट होनी चाहिए।

धान क्रय केंद्र का उद्घाटन

नवीनमेल संवाददाता। केतार
केतार प्रखंड के मुकुन्दपुर गांव में रविवार को धान क्रय केंद्र का उद्घाटन मुखिया मुंगा साह, पंचायत समिति सदस्य अजिमा खातून और क्रय पदाधिकारी सह प्रखंड कृषि पदाधिकारी राजीव कुमार ने संयुक्त रूप से फिता काटकर और नारियल फोड़कर किया। मुकुन्दपुर पैक्स में किसान 1950 रू की दर से धान की बिक्री कर सकेंगे। वही किसानों को 110 रू बोनस भी मिलेगा। उद्घाटन के बाद से ही धान की बिक्री शुरू हो गई।इस मौके पर राम प्रवेश वर्मा, वार्ड सदस्य धर्मेंद्र सिंह, संजय वर्मा,रिशु सिंह, उमेश साह, बिंदु साह, अमरेश सिंह, राजेन्द्र साह, सुनील कुमार सहित अन्य लोग मौजूद थे।

NEWS इन ब्रीफ

टैंपू के चपेट में आने से दो महिला घायल

गढ़वा। गढ़वा थाना क्षेत्र के गीजना गांव निवासी गोरखनाथ तिवारी की पत्नी जगवंती देवी एवं स्वर्गीय मनोज तिवारी की पत्नी मंजू कुंवर टैंपू के चपेट में आने से गंभीर रूप से घायल हो गई। इलाज के लिए गढ़वा सदर अस्पताल में भर्ती किया गया है। बताया गया कि दोनों महिला तिलदाग मोड़ पर किसी काम से आई हुई थी, वापस घर जाने के दौरान तिलदाग नहर के पीछे एक टेंपो ने दोनों महिला को धक्का मार दिया। घटना के बाद आधे घंटे तक दोनों महिला घायल अवस्था में पड़ी रही। घटना की जानकारी मिलने के बाद समाजसेवी अरुण दुबे ने दोनों घायल महिला को अपने निजी गाड़ी से बैठा कर इलाज के लिए सदर अस्पताल ले गये और भर्ती कराया।

मोटरसाइकिल दुर्घटना में चीकू साव गंभीर रूप से घायल

माझीआव। गढ़वा माझीआव थाना क्षेत्र के करुई गांव निवासी श्री साव का पुत्र चीकू कुमार साव मोटरसाइकिल दुर्घटना में गंभीर रूप से घायल हो गया। इलाज के लिए गढ़वा सदर अस्पताल में भर्ती किया गया। परिजनों ने बताया कि चीकू कुमार साव एक मोटरसाइकिल पर तीन लोग सवार होकर मूर्ति विसर्जन के लिए गये हुए थे, इसी दौरान नदी के पास उसकी मोटरसाइकिल अनियंत्रित होकर खाई में गिर गई। घटना के बाद उसके साथ ही उसे मरा हुआ समझकर वहां से फरार हो गए। इसके बाद उसी का एक साथी ने उसे खाई से निकाल कर बाहर किया तथा घटना की जानकारी उसके परिजनों को दी परिजनों ने अचेत अवस्था में उठाकर सदर अस्पताल में भर्ती कराया।

ट्रैक्टर के धक्के से जिला परिषद सदस्य के पति घायल

श्री बंशीधर नगर। एनएच 75 पर सर्वेश्वरी समूह आश्रम के समीप ट्रैक्टर के धक्के से सगमा प्रखंड के जिला परिषद सदस्य के पति सह पूर्व जिला परिषद सदस्य नंदगोपाल यादव के पुत्र ताराचंद यादव घायल हो गए। घायल ताराचंद को स्थानीय लोगों की मदद से इलाज के लिए अनुमंडल अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां चिकित्सकों ने स्थिति की गंभीरता देखते हुए बेहतर इलाज के लिए सदर अस्पताल गढ़वा रेफर कर दिया।

गायत्री परिवार की बैठक संपन्न

कांडी। प्रखंड के महाबीर मंदिर के प्रांगण में रविवार को अखिल विश्व गायत्री परिवार की एक बैठक संपन्न हुई। जिसकी अध्यक्षता विजय सोनी ने किया। बैठक में प्रखंड स्तरीय कमिटी का पुनर्गठन किया गया। जिसमें विजय सोनी को समन्वयक,कृष्ण कुमार सोनी, सुनिल प्रसाद तथा गोपाल सोनी को सह समन्वयक बनाया गया। महिला मंडल में सुनिता देवी, गिरजा देवी, बिमला देवी शशिमाला देवी, रिंकी देवी, शिला देवी को शामिल किया गया है। बैठक में जिला समन्वयक बिनोद पाठक, संजय सोनी, वृन्दा ठाकुर, अखिलेश कुमार कुशवाहा, विजय सोनी, सुनिल प्रसाद, बिमला देवी, गुड़िया देवी, सुशिला देवी, सुनिता देवी आदि लोग उपस्थित थे।

हरिहरपुर में मंदिर निर्माण के लिए ग्रामीणों ने ली शपथ

हरिहरपुर। स्थानीय बाजारी प्रांगण में शिव मंदिर निर्माण समिति का गठन गुरु महाराज आचार्य सौरभ भारद्वाज के नेतृत्व में किया गया। जिसमें सर्वसम्मति से सूर्यदेव सिंह को अध्यक्ष, आनंद सिंह को उपाध्यक्ष, अजित सिंह सचिव, संतोष सिंह कोषाध्यक्ष व ईश्वरी प्रसाद सिंह को संरक्षक चुना गया। बैठक में निर्णय लिया गया कि प्राचीन देवी मंदिर का गुम्बज व स्वयंभू भगवान शंकर का भव्य मंदिर बनाया जाएगा। मंदिर निर्माण के लिए उपस्थित ग्रामीणों ने आर्थिक सहयोग भी शुरू कर दिया। मौके पर उपेंद्र सिंह, कॉलिंश शुक्ला, राजकुमार सिंह, नरेश साह, सुरेश साह, निखिल सिंह सहित कई लोग मौजूद थे।

अनाज की कालाबाजारी का आरोप

शक में डोर स्टेप डिलीवरी संवेदक को ग्रामीणों ने बना लिया बंधक

ग्रामीणों ने 50 किग्रा गेहूं किया जब्त

नवीनमेल संवाददाता। कांडी
थाना क्षेत्र अंतर्गत घटहुआं कला गांव स्थित पंचायत सचिवालय के समीप अरुण गुप्ता सहित अन्य ग्रामीणों ने जनवितरण प्रणाली की दुकान का एक बोरी गेहूं कालाबजारी करते हुए पकड़ लिया। ग्रामीणों ने जानकारी देते हुए बताया कि राजा घटहुआं गांव निवासी सुरेंद्र राम घटहुआं कला के जन वितरण प्रणाली के दुकानदार कृष्णा प्रसाद साहू के पास से बाइक पर बोड़ा लादकर गेहूं ले जा रहा था। इसी क्रम में 50 किलो के गेहूं का बोड़ा पकड़ लिया गया। इसके बाद सूचना पाकर मुखिया प्रतिनिधि अरुण राम मौके पर पहुंचे। उन्होंने संज्ञान लेते हुए पंचायत सचिवालय में गेहूं भरे बोरी को रखवाया। इस संबंध में अंचलाधिकारी सह खाद्य आपूर्ति पदाधिकारी अजय कुमार दास ने बताया कि ग्रामीणों द्वारा पकड़ा हुआ जनवितरण प्रणाली की दुकान से गेहूं को किसी सार्वजनिक स्थल पर रखवाया जाए। इसके बाद मुखिया प्रतिनिधि अरुण कुमार राम ने पंचायत सचिवालय में गेहूं से भरे बोड़ा को रखवाया।

नवीन मेल संवाददाता। केतार
भवनाथपुर प्रखंड परिसर स्थित एसएफसीआई गोदाम से डोर स्टेप डिलीवरी के संवेदक को ग्रामीणों ने रविवार शाम को उसके घर के पास बंधक बना लिया। उनका आरोप है कि वह अनाज की कालाबाजारी करने जा रहा था। मौके पर पुलिस पहुंच गई है। पुलिस ग्रामीणों को समझा-बुझा रही थी लेकिन ग्रामीण मानने को तैयार नहीं हैं। देर रात डिलीवरी संवेदक को छोड़ दिया गया।

ग्रामीणों ने बताया कि डिलीवरी संवेदक रविवार की शाम एक पिकअप पर लदे 51 क्विंटल गेहूं और चावल की कालाबाजारी करने जा रहा था। उसने अपने पिकअप वाहन पर 54 बोरा गेहूं और 48 बोरा चावल, कुल मिलकर 51 क्विंटल अनाज लाद कर केतार प्रखंड के परती कुश्वाणी के जविप्र डीलर की दुकान के लिए निकला। ग्रामीणों का कहना है कि संवेदक ने उक्त पिकअप को डीलर के यहां न भेजकर दुल्हर स्थित अपने आवास पर भेज दिया। इस दौरान संवेदक द्वारा अनाज गबन किये जाने की जानकारी ग्रामीणों को लगी। उन्होंने कुछ पत्रकारों को इसकी सूचना दी। पत्रकार जब वहां पहुंचे तो देखा कि जविप्र दुकान के लिए लोड अनाज को संवेदक ने अपने घर में रख दिया है। इस बाबत परती कुशवानी के डीलर ने बताया कि संवेदक ने उसके जविप्र दुकान पर अपने पिकअप वाहन से 41 बोरा गेहूं और 30 बोरा चावल उतारा है जबकि एसएफसीआई गोदाम के प्रबंधक शिवकुमार यादव ने बताया कि डोर स्टेप डिलीवरी के संवेदक के पिकअप वाहन पर जविप्र डीलर की दुकान पर ले जाने हेतु 54 बोरा गेहूं और 48 बोरा चावल दिया गया था। इन्हीं सब बातों को लेकर संवेदक को ग्रामीणों ने बंधक बना लिया था।

ईपीएफ पेंशन की राशि का 30 दिनों में होगा भुगतान

नवीनमेल संवाददाता। गढ़वा
झारखंड राज्य ग्रामीण बैंक के प्रधान कार्यालय में महाप्रबंधक एस के पाणी ग्राही के साथ संघ के महासचिव रामपुकार वरिष्ठ, डीएन पांडे, अरुण कुमार सिन्हा, पारसनाथ सिंह एवं दीपक बेउरा ने बैंक कर्मियों की समस्याओं से अवगत कराया। महाप्रबंधक ने बैंक कर्मियों की समस्या को गंभीरता से लेते हुए एक माह के अंदर अधिकांश समस्या का हल करने की बात कही है। प्रतिनिधि मंडल ने बताया कि वार्ता में सबसे पहले अनुकंपा आधारित नौकरी के मुद्दे को जोर-शोर से उठाया गया इस मुद्दे पर प्रबंधन का कहना था कि 55 वर्ष के आयु के पश्चात जिनकी मृत्यु हुई है उनके उत्तराधिकारी इसके लिए उपयुक्त नहीं है प्रबंधन के इस तर्क को संघ ने सिरे से खारिज करते करते हुए स्पष्ट किया कि 55 वर्ष आयु का जो जिक्र है वह स्वास्थ्य समस्या आधारित सेवा त्यागने पर मान्य है जिससे इससे संबंधित भारत सरकार का स्पष्टीकरण का पत्र भी प्रबंधन को उपलब्ध कराया गया जिसे महाप्रबंधक महोदय दशार्ते हुए कहा

कि से बैंक के निदेशक मंडल की बैठक में रखकर निष्पादित किया जाएगा, पारिवारिक पेंशन बढ़ोतरी के मुद्दे को लागू करने, बकाया भुगतान, लोकेशन अवकाश, नकदीकरण सहित कई मुद्दे को रखा गया। प्रबंधन ने सभी मुद्दे को गंभीरता से लेते हुए इसे स्वीकार करते हुए इस दिशा में जल्द कार्रवाई करने का आश्वासन दिया है। प्रतिनिधिमंडल ने बताया कि अर्जित अवकाश नकदीकरण के मुद्दे पर प्रबंधन को कुछ हीच था जिसे महाप्रबंधक महोदय ने प्रायोजक बैंक से निर्देश लेकर यथोचित लागू करने का भरोसा दिलाया वैसे साथियों जिनका ईपीएफ पेंशन का 7500 की कटौती की गई है। उनकी राशि अगले एक माह के अंदर वापस करने की बात भी प्रबंधन ने मान लिया।

कलश यात्रा के साथ श्री रामचरितमानस महायज्ञ शुरू

केतार। प्रखंड के लोहरगाड़ा पंचायत के मेरौनी गांव में रविवार को श्रीराम चरित मानस नावाह्न परायण महायज्ञ सह सीता राम महायज्ञ को लेकर कलश यात्रा निकाली गयी। यह कलश यात्रा गांव के बैकुंठ धाम पर बने स्थाई यज्ञशाला से चल कर सोन व पंडा नदी के संगम पर पहुंची जहां विद्वान पंडितों के वैदिक मंत्रोच्चार के साथ श्रद्धालुओं ने कलश मे जल भरकर पुनः यज्ञ स्थल पर पहुंचकर कलश स्थापना किया। कलश यात्रा में पंचायत की मुखिया नीलम देवी मुखिया प्रतिनिधि सिताराम शर्मा भी शामिल हुये। विदित हो कि श्रद्धालुओं के सहयोग से लगातार बारहवीं वर्ष महायज्ञ का आयोजन किया जा गया है। इस महायज्ञ का यज्ञाचार्य झारखंड पीठाधीश्वर गोविंदाचार्य स्वामी जी महाराज के सानिध्य में किया जा रहा है। इस महायज्ञ का समापन पांच फरवरी को पूणार्हुति व भंडारा के साथ संपन्न होगा। यज्ञ स्थल पर प्रतिदिन दोपहर तीन बजे से काशी व अयोध्या से पधारे विद्वान पंडितों के मुखारविंद से कथा वाचन किया जाएगा।

नागरिक एकादश ने प्रशासन एकादश को 6 विकेट से हराया

नवीनमेल संवाददाता। गढ़वा
जिला प्रशासन एवं जिला खेल कार्यालय गढ़वा की ओर से जिला प्रशासन एकादस एवं नागरिक एकादश के बीच गोविंद हाई स्कूल के मैदान में मैत्री क्रिकेट मैच का आयोजन किया गया। उक्त क्रिकेट मैच का मुख्य थीम सड़क सुरक्षा, जीवन रक्षा थी, जिसके तत्वावधान में मैत्री क्रिकेट मैच खेला गया। कार्यक्रम की शुरूआत प्रशासन एकादश के कप्तान उपायुक्त रमेश घोलप ने खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त कर किया एवं प्रशासन एकादश ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का निर्णय लिया। टॉस जीत कर पहले बल्लेबाजी करते हुए जिला प्रशासन की टीम कुल 12 ओवर में 6 विकेट खोकर 98 रन का स्कोर खड़ा किया। जिला प्रशासन की ओर से डीसी रमेश घोलप ने 24, विकास कुमार ने 22 रन और कृष्णा कुमार ने 15 रन का योगदान दिया। नागरिक एकादश की ओर से कन्हैया चौबे ने 3 विकेट, मनीष उपाध्याय 2 विकेट, भास्कर ने 2 विकेट लिया। वहीं लक्ष्य का पीछा करने उतरी नागरिक एकादश की टीम ने कुल 7 ओवर में ही 5 विकेट खोकर जीत हेतु लक्ष्य प्राप्त कर लिया। नागरिक एकादश की ओर से रोहन तिवारी ने सर्वाधिक 41 रन बनाये, भास्कर ने 22 रन तथा मनीष ने 19 रन बनाये। मैन ऑफ द मैच का पुरस्कार नागरिक एकादश के रोहन तिवारी को दिया गया। जीत के बाद उपायुक्त श्री घोलप द्वारा विनर टीम नागरिक एकादश के कप्तान अभिमन्यु पाठक को विंनिग कप (पुरस्कार) देकर सम्मानित किया। उपायुक्त ने कहा कि नागरिक और प्रशासन के बीच बेहतर समन्वय होना काफी आवश्यक है। इसे देखते हुए यह मैत्री मैच का आयोजन किया गया है। दोनों ही टीमों ने बेहतर प्रदर्शन किया है।

विधायक ने सड़कों का किया शिलान्यास

नवीनमेल संवाददाता। भवनाथपुर
विधानसभा क्षेत्र के भाजपा विधायक भानु प्रताप शाही ने प्रखंड के दो प्रमुख सड़क साढ़े चार करोड़ के लागत से बनाने वाली सड़क की आधार शिला शिलापट का पूजा पाठ कर रखा। उक्त सड़क में रोहिनियां बगीचा मोड़ से गारबान्ध घाटी तक तथा मकरी मोड़ से सिंघीताली मुख्य सड़क तक पक्की करण शामिल हैं। मौके पर विधायक भानु प्रताप शाही ने ग्रामीणों को संबोधित करते हुए कहा कि भवनाथपुर विधानसभा के 14वे विधायक हम बने थे इससे पहले जितने भी विधायक बने किसी ने क्षेत्र के को ध्यान नही दिया। उस समय मकरी में ढिबरी युग था मकरी से भवनाथपुर जाने में बड़े-बड़े गढ़े थे ट्रैक्टर फस जाता तो तीन दिन तक फसा ही रहता था मैंने वादा किया था कि 24 घंटे बिजली दूंगा आज क्षेत्र में 20 घंटे बिजली मिल रही हैं बहुत जल्द पूरे 24 घंटा बिजली मिलेगा। मकरी पंचायत को पूरब से पश्चिम और दक्षिणी से सड़क से जोड़ दिया आज उतर में भी सड़क बनाने का शिलान्यास कर दिया मकरी चारो तरफ से चतर्भुज की तरह सड़क से घिर जाएगा। हमको मकरी को स्मार्ट गांव बनाना है वहीं विधायक भानु प्रताप शाही ने सरकार पर हमला बोलते हुए कहा कि हेमंत सरकार युवा, गरीब, किसान विरोधी सरकार है किसान की मांग को लेकर जब सदन में जब हमने बोला कि मकरी के दोहर जा कर देखे जब 1966 के अकाल में भी बान गड़ा गए थे वहां इस वर्ष एक बान नही गडा है तो मुख्यमंत्री के कहने पर स्पीकर ने सस्पेंड कर दिया मैंने हेमंत सोरेन से कहा है मुझे किसान की मांग को लेकर सस्पेंड किया है एक दिन किसान ऐसा सस्पेंड करेगी कि जिंदगी में कभी दुबारा कुर्सी पर बैठने लायक नही रहोगे। मोदी सरकार गरीबों को एक लाख चालीस हजार रुपये आवास के लिए दे रही है इस हेमंत सरकार में गटी, छरी, इट, सीमेंट, छड़ तो मिल जा रहे हैं लेकिन बालू के लिए नदी पर ही पुलिस बैठा दिया है जिस से गरीबों का घर नही बन पा रहा है। मौके पर भगत दयानन्द यादव, धनजंय साह, उमेन्द्र यादव, अनील चौबे, दयानंद सोनी, शैलेश चौबे, संजय यादव, इन्द्रदेव यादव, ब्रजेश चौबे, चंद्रदेव यादव, पिंटू टोपो, रीता देवी, रवि पाल, प्यारेमोहमद अंसारी सहित सैकड़ों लोग उपस्थित थे।

आर्थिक सहयोग और श्रमदान से विद्यालय भवन की ढलाई का कार्य हुआ पूरा

सरस्वती शिशु विद्या मंदिर भवनाथपुर बाजार के विद्यालय भवन की ढलाई का कार्य आर्थिक सहयोग और श्रमदान से पूरा कराया गया। शुरूआत जमीनदाता कामेश्वर साह और सानमति कुंअर ने की। जानकारी के अनुसार सरस्वती शिशु विद्या मंदिर का अपना भवन नहीं होने के कारण बाजार में भाड़े के मकान में काफी परेशानियों बीच किसी तरह से संचालित होता है। परेशानी को देखते हुए विद्यालय के भवन निर्माण के लिए बाल कल्याण समिति नामक एक कमेटी बनाया गया,फिर कमेटी के लोग आगे आकर चपरी के मुसकैनी पहाड़ी के समीप जमीन की व्यवस्था करायी। तत्पश्चात भवन निर्माण के लिए कमेटी आगे आई और कमेटी के प्रयास रंग लाया,और ग्रामीण आगे आते हुए विद्यालय भवन निर्माण के लिए खुले हांथों से सहयोग किये जिसका नतीजा है आज विद्यालय के भवन की ढलाई का कार्य संपन्न हो सका। ढलाई कार्य में क्षेत्रीय विधायक भानु प्रताप शाही,विद्यालय के पलामू प्रांत के निरीक्षक नीरज लाल,टाउनशिप विद्या मंदिर के प्रधानाचार्य ब्रजेश कुमार सिंह, बाल कल्याण समिति के अध्यक्ष गोविंद सिंह,सचिव राम सुरेश राम, सह सचिव काशी राम, कोषाध्यक्ष बजरंगी साह, बबन साह, आदि लोगों ने पहुंचकर अपना-अपना श्रमदान किये।

मुखिया पमी देवी ने मृतक के परिजनों को श्राद्ध कर्म में आर्थिक व सामग्री देकर किया सहयोग

चिनिया। गढ़वा जिला 20 सूत्री उपाअध्यक्ष नितेश सिंह की धर्म पत्नी सह बरवाडीह पंचायत के मुखिया पमी देवी ने पंचायत के बंदूवा गांव में पहुंचकर मृतक के परिजनों को रू. 5000 की नगद राशि व श्राद्ध कर्म के लिए सामग्री देकर सहयोग कीया है, मिली जानकारी के अनुसार बंधुआ गांव निवासी देव शरण कोरवा की मौत पिछले हफ्ते ही हो गई थी, वहीं घटना की सूचना मिलते ही गढ़वा जिला 20 सूत्री उपाध्यक्ष नितेश सिंह की धर्मपत्नी सह बरवाडीह पंचायत के मुखिया पमी देवी ने बंधुआ गांव में पहुंचकर मृतक के परिजनों को श्राद्ध प्रेम के लिए लिए रू. 5000 की नगद राशि 1टीन रिफाइन तेल तथा 1 बोरी आटा देकर सहयोग किया है। साथ ही मुखिया पम्मी देवी के द्वारा बताया कि हमारे द्वारा इस तरह का कार्य आगे भी जारी रहेगा। बताते चलें कि बीते कई वर्षों से 20 सूत्री ऊपाअध्यक्ष नितेश सिंह व उनकी पत्नी पमी देवी के द्वारा अपने पंचायत के हर जरूरतमंद लोगों को लगातार मदद पहुंचाई जा रही है जिससे क्षेत्र में चर्चा का विषय बना हुआ है। रविवार को मुखिया पम्मी देवी ने मृतक के घर पहुंचकर क्षेत्र में एक मिसाल कायम की है मौके पर विनोद पासवान, नीतू सिंह, उमेश यादव मेराज अंसारी शहजाद अंसारी पार्वती देवी मुख्तार अंसारी,सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

केतार में भगवान सूर्य की पूजा

केतार। अचला सप्तमी के अवसर पर शनिवार को शकलदीपीय ब्राह्मण महासभा के जिला अध्यक्ष सचीतानंद पाठक के निर्देश पर केतार प्रखंड के शकलदीपीय ब्राह्मणों ने चतुभुर्जी मंदिर परिसर में भगवान सुर्य की अराधना की। इसके पश्चात भंडारा में महाप्रसाद वितरण किया गया।इस मौके पर जिला सचिव हेमंत पाठक ने बताया की अचला सप्तमी का हिंदू धर्म में विशेष महत्व है। हिंदू पंचांग के अनुसार, माघ मास के शुक्ल पक्ष की सप्तमी तिथि को अचला सप्तमी मनाते हैं। अचला सप्तमी को रथ सप्तमी, भानु सप्तमी और अरोग्य सप्तमी के नाम से जानते हैं। इस दिन सूर्य देव की पूजा करते हैं और उनको जल का अर्घ्य देते हैं। मान्यता है कि इस दिन अगर भक्त पूरी श्रद्धा और निष्ठा के साथ पूजा करते हैं तो सूर्यदेव की कृपा से रोग दूर होता है, धन-धान्य में वृद्धि होती है। मान्यता है कि माघ माह के शुक्ल पक्ष की सप्तमी तिथि को सूर्य देव अपने सात घोड़े वाले रथ पर सवार होकर प्रकट हुए थे और पूरी सृष्टि को प्रकाशित किया था। जिस कारण से ही हर साल माघ मास ही शुक्ल सप्तमी को अचला सप्तमी या सूर्य जयंती के रूप में मनाया जाता है। इस मौके पर अक्षयवर बैद,नंदगोपाल पाठक, नंदकिशोर बैद, राजकुमार पाठक, गोपाल पाठक, धर्मेंद्र पाठक, अर्जुन पाठक, ओमनारायण पंडित, महेंद्र पाठक सहित अन्य लोग मौजूद थे।

राजकीय मध्य विद्यालय में स्वागत सह सम्मान समारोह का आयोजन

श्री बंशीधर नगरः राजकीय मध्य विद्यालय श्री बंशीधर नगर में रविवार को स्वागत सह सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इसमें पलामू के क्षेत्रीय संयुक्त शिक्षा निदेशक शिवनारायण साह को चेंजमेकर्स ऑफ गढ़वा टीम के द्वारा अभिनंदन पत्र व बुके देकर तथा शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। विद्यालय के वरीय शिक्षक रामलला मिश्र ने श्री साह को श्री बंशीधर मंदिर में स्थापित भगवान श्रीकृष्ण व माता राधिका की तस्वीर भेंट किया गया। विद्यालय की छात्राओं के द्वारा स्वागत गान, स्वागत नृत्य एवं अन्य आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति कर समारोह में भव्यता प्रदान किया गया। चेंजमेकर्स ऑफ गढ़वा टीम के द्वारा सम्मान पाकर आरडीडी भाव विभोर हो गए तथा टीम सहित विद्यालय के शिक्षक-शिक्षिका व छात्र-छात्राओं की भूरी-भूरी प्रशंसा किया। झारखंड प्राथमिक शिक्षक संघ के अध्यक्ष कमलेश्वर पांडेय के द्वारा विद्यालय परिवार व चेंजमेकर्स ऑफ गढ़वा टीम की खूब प्रशंसा किया गया। आगंतुक अतिथियों ने आरडीडी की लंबी उम्र की कामना करते हुए इनके कार्यकाल को शिक्षा जगत के लिए प्रेरणादायक बताया। समारोह का संचालन चेंज मेकर ऑफ गढ़वा टीम के पांडेय सूर्यकांत शर्मा ने किया।समारोह को प्रधानाध्यापक अनिल कुमार विश्वकर्मा, अवध बिहारी मिश्रा, पंकज राय, नीरज कुमार, दिशा उपाध्याय ने संबोधित किया। मौके पर अंबालाल पटेल बालिका उच्च विद्यालय की प्रधानाध्यापिका श्रीमती सविता गुप्ता, शिक्षक अनूप कुमार ठाकुर, माया कुमारी भगत, शशि कुमारी, सुधा कुमारी, गढ़वा के वरीय शिक्षक कृष्ण मुरारी पांडेय सहित विद्यालय के सभी शिक्षक-शिक्षिका, चेंजमेकर ऑफ गढ़वा टीम के सदस्य गण व विद्यालय के छात्र छात्राएं उपस्थित थे।

मामला | पीएम आवास योजना की राशि से बन रहे विद्यालय भवन

नहीं लगे एक भी मजदूर, निर्माण कार्य पूरा

नवीनमेल संवाददाता। डंडाई
प्रधानमंत्री की महत्वाकांक्षी योजना पीएम आवास योजना में अनियमितता का मामला प्रकाश में आया है। प्रधानमंत्री की ओर से मिल रहे राशि से बनाना है गरीबों का आवास तो स्वयंसेवक और पंचायत सचिव के द्वारा बनवा दिया जा रहा है विद्यालय भवन। वह भी बिना मजदूर लगे ही उक्त कार्य योजना को उनके द्वारा पूर्ण भी कर दिया जा रहा है। जबकि पीएम आवास योजना को पूर्ण होने तक 95 मजदूर लगने का प्रावधान है। लेकिन अभी तक उक्त योजना में एक भी मजदूर नहीं लगे और पीएम आवास योजना निर्माण कार्य का

सारा काम पूर्ण हो गया। वहीं मजदूरी मद की राशि रू. 22515 आज भी सरकार के खाते में पड़े के पड़े हैं। अब सवाल यह उठता है कि जब पीएम आवास योजना में एक भी मजदूर नहीं लगे तो वह कार्य पूर्ण कैसे हो गया। वही उसकी अंतिम किस्त की राशि भी 30 अक्टूबर को रू. 85000 भी लाभुक के खाते में हस्तांतरित कर दिया गया। जबकि इससे पहले शुरूआती दौर में जिओ टैग के बाद 21 जनवरी 2021 को पहली किस्त की राशि उनके खाते में रू. 40000 हस्तांतरित कर दिया गया था। मामला प्रखंड क्षेत्र के डंडई पंचायत से जुड़ा है। उक्त पंचायत निवासी राम दुलारी देवी को वर्ष 2020 /21 में पीएम आवास योजना का लाभ मिला था जिसका निबंधन संख्या जेएच 1452 674 है। इस बीच शुरूआती दौर में उनके द्वारा अपने घर के आंगन में ही पीएम आवास निर्माण के लिए जिओ टैग कराया गया। लेकिन उसके दो वर्ष बाद 2022/23 में वहां पर आवास योजना का निर्माण ना करा कर दूसरे जगह पूर्व से संचालित अपने नाम के विद्यालय भवन को मरम्मत करा डोरलेबल की ढलाई करा ली गई। साथ ही उसे दिखा अंतिम किस्त की राशि भी 85000 रुपये 30 अक्टूबर 2022 को अपने खाते में हस्तांतरित करा लिया गया। विद्यालय भवन के सभी कमरों में बच्चों को पढ़ाने के लिए पूर्व में बनाया गया ब्लैक बोर्ड आज भी प्रमाण के लिए काफी है।

मामले में उप विकास आयुक्त राजेश कुमार राय ने इसे दुखद बताते हुए कहा कि जब एक भी मजदूर ही नहीं लगे तो वह निर्माण कार्य पूर्ण कैसे हो गया। पीएम आवास योजना मद की राशि से विद्यालय भवन का निर्माण होने की बात को गैर कानूनी बताते हुवे उन्होंने मामले की जांच कराकर नियम संगत कार्रवाई करने की बात कही।

NEWS इन ब्रीफ

पुलिस व वन विभाग की टीम ने अफीम के फसल को किया नष्ट

टंडवा (चतरा)। टंडवा वन प्रक्षेत्र में चतरा-हजारीबाग जिले के सुदूरवर्ती गांव लोहरा में गुप्त सूचना के आधार पर रविवार को वन विभाग व पुलिस ने संयुक्त रुप से कार्रवाई करते हुए लगभग 1 एकड़ वनक्षेत्र व 2 एकड रैयती जमीन पर लहलहा रहे अफीम के फसल को नष्ट कर दिया। मिली जानकारी के अनुसार उक्त कार्रवाई केरेडारी पुलिस व वन विभाग के संयुक्त टीम ने किया। रेंजर मुक्ति प्रकाश पन्ना ने मामले की पुष्टि करते हुए कहा कि खेती करने वालों को चिन्हित कर विधिसम्मत कार्रवाई करने की तैयारी चल रही है। इस अभियान में रेंजर पन्ना व केरेडारी थाना प्रभारी एससी गोराई के साथ वनरक्षी राकेश कुमार सिंह, मुरारी प्रजापति, सुनील उरांव, ललटु यादव समेत अन्य शामिल थे।

किराना दुकान से नगदी सहित हजारों के सामान की चोरी

गिद्धौर(चतरा)। गिद्धौर थाना क्षेत्र के बारिसाखी गांव के एक किराना दुकान से अज्ञात चोरों ने सेंधमारी कर शनिवार देर रात नकदी समेत हजारों के सामान की चोरी कर ली। इस बाबत दुकान संचालक नामधारी साव ने अज्ञात चोरों के विरुद्ध स्थानीय थाने में आवेदन दी है। आवेदन में बताया गया है कि बारिसाखी विद्यालय के समीप राशन की दुकान है। दुकान से शनिवार की देर रात अज्ञात चोरों ने सेंधमारी कर करीब 20 हजार नगद व 15 हजारी रुपये के सामान कि चोरी कर ली है। थाना प्रभारी मनोज कुमार पाल ने बताया की अनुसंधान किया जा रहा है।

सरस्वती पूजा पर आर्केस्ट्रा का आयोजन

पत्थलगड़ा(चतरा)। जिले के पत्थलगड़ा प्रखंड के नावाडीह पंचायत स्थित बोगासांडम-डमोल गांव में सरस्वती पूजा के अवसर पर गवास्कर क्लब के द्वारा आर्केस्ट्रा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता महेश प्रसाद मेहता व संचालक संदीप कुमार गुप्ता ने किया। वहीं आर्केस्ट्रा ग्रुप कार्यक्रम का शुभारंभ डॉ. राजेश कुमार सिन्हा ने फीता काट कर किया। कार्यक्रम से पूर्व माता सरस्वती के माला का डाक किया गया, जिसमें बड़ा माला पवन कुमार रजक ने 11051 रुपये व छोटा माला अनिल प्रसाद ने 5051 रुपये जमाकर लिया। वहीं गुप्ता म्यूजिकल आर्केस्ट्रा ग्रुप के डायरेक्टर अजित गुप्ता के नेतृत्व में धनबाद से पहुंचे कलाकारों ने ऐ से बढ़कर एक रंगारंग प्रस्तुती कर रात भर दर्शकों को झुमाया।

मधुमक्खियों के हमले में एक दर्जन घायल एक वृद्धा गंभीर

इटखोरी(चतरा)। इटखोरी थाना क्षेत्र अंतर्गत चतरा-इटखोरी मुख्य मार्ग स्थित पितीज बांग्ला चैक पर रविवार को अचानक मधुमक्खियों के हमले से वाहन चालकों में अफरातफरी मच गयी।
अचानक दोपहर करीब 1 बजे मधुमक्खियों ने बंगला चैक पर पितीज गांव के बालों भुइयां को अपना निशाना बनाया। उसके बाद जुगू गांव के दो व्यक्ति के साथ आसपास के करीग दर्जन भर लोगों को काटकर घायल कर दिया। सभी का स्थानीय स्तर पर इलाज किया गया, जबकी चक्रवार गांव निवासी अशोक भुइयां की 80 वर्षीय मां मधुमक्खियों के काटने से गंभीर रुप से घायल हो गई। स्थानीय लोगों ने इसकी सूचना 108 एंबुलेंस को दी और पितीज निवासी विनय कुमार ठाकुर व अमित कुमार ने महिला को एंबुलेंस में चढ़ाकर सदर अस्पताल चतरा इलाज के लिए भेजा। ज्ञात हो कि पितीज बांग्ला चैक के समीप एक बरगद के पेड़ में मधुमक्खियों ने अपना आशियाना बना लिया है। पंछियों ने मधुमक्खियों के छत्ते में चोच मारी तो मधुमक्खियां उड़कर लोगों को काटना शुरू कर दिया और करीब 3 घंटे बाद मधुमक्खियों का आतंक कम हुआ, तब लोगों ने राहत ली।

मुठभेड़ में मारे गए नक्सली की हुई पहचान

दो आईडी और एक राइफल बरामद

नवीनमेल संवाददाता। चतरा/कुंदा।

सीआरपीएफ कोबरा बटालियन व माओवादियों के बीच जिले के कुंदा थाना क्षेत्र अंतर्गत कारीमाड़र जंगल में हुए मुठभेड़ में मारे गए उग्रवादी के शव की पहचान राजेश बैगा के रुप में की गई है। मारा गया नक्सली राजेश बैगा उर्फ राजेश परहिया कुंदा थाना क्षेत्र के हेसातु (बंठा) गांव का रहने वाला है। पुलिस ने रविवार को बरामद शव के पहचान करने के साथ पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल भेज दिया। पुलिस ने मजिस्ट्रेट की उपस्थिति में नक्सली के शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल में मेडीकल टीम के द्वारा पोस्टमार्टम करवाया। पोस्टमार्टम के उपरांत नक्सली के शव को परिजनों को सौंपने की प्रक्रिया की जा रही थी। वहीं एसपी राकेश रंजन ने बताया कि घटनास्थल से एक 303 राइफल, 303 मैगजीन, भारी मात्रा में जिंदा गोली, इलेक्ट्रॉनिक डेटोनेटर 05, आईडी 02, वायरलेस सेट 02 व खाने पीने की सामग्री बरामद की गई है। आगे बताया कि मौके पर ही दोनो आईडी को नष्ट कर दिया गया है। बीते 23 जनवरी 2023 को भी मनोहर गंझू के दस्ते के साथ कुंदा क्षेत्र में मुठभेड़ हुई थी, जिसमे कई नक्सली सामानों की बरामदगी हुई थी। एसपी ने नक्सलियों से हिंसा का रास्ता छोड़कर मुख्य धारा में लौटने की अपील की है।

महुआडांड : विधिक सेवा सशक्तिकरण शिविर का आयोजन

नवीनमेल संवाददाता। महुआडांड

झालसा के निर्देशानुसार रविवार को महुआडांड प्रखंड कार्यालय स्थित सभागार में महुआडांड एसडीएम नीत निखिल सुरीन की अध्यक्षता में विधिक सेवा सशक्तिकरण शिविर का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि के रुप में उपस्थित रजिस्ट्रार सह प्रथम श्रेणी न्यायायिक दण्डाधिकारी राहुल कुमार ने महुआडांड प्रखण्ड कार्यालय स्थित सभागार में उपस्थित लोगों को विधिक सेवा प्राधिकार द्वारा दी जाने वाली निःशुल्क सुविधाए जैसे मुकदमा लड़ने के लिए निशुल्क वकील मुहैया कराने, सुलह- समझौता, पोक्सो अधिनियम, किशोर न्याय बोर्ड, बाल श्रम, बाल विवाह, प्राथमिक सूचना विवरण आदि के बारे में विस्तार पूर्वक बताया। साथ ही घरेलू हिंसा, भरण पोषण, डायन प्रथा, बाल विवाह इत्यादि से सम्बंधित कानून के बारे में अवगत कराया तथा लोगों को इस सबंध में विस्तृत कानूनी जानकारी दी। उन्होंने कहा आम जनता अपने अधिकार को जानकर इन सामाजिक बुराइयों के रोकथाम में सहयोग दें। उन्होंने सामाजिक बुराइयों के रोकथाम के लिए बनाये गये कानूनों के बारे में ग्रामीण क्षेत्र में प्रचार-प्रसार करने के लिए प्रेरित किया। विधिक सशक्तिकरण शिविर की अध्यक्षता कर रहे महुआडांड एसडीएम नीत निखिल सुरीन, कार्यपालक दण्डाधिकारी जितेन्द्र कुमार, बीडीओ अमरेन डांग, जिप सदस्य इस्तेला नगेसिया, प्रखंड प्रमुख कंचन कुजूर, एसआई मो. जफर, अधिवक्ता नवीन गुप्ता आदि ने भी लोगों को अपने अधिकार के प्रति जागरूक होने का आह्वान करते हुए सरकार द्वारा चलाये जा रहे प्रमुख योजनाओं यथा वृद्वा पेंशन, विधवा पेंशन बीमा योजना, अंत्योदय योजना, मातृत्व वंदना योजना, मुख्यमंत्री कन्यादान योजना, मुख्यमंत्री सुकन्या योजना समेत अन्य सरकारी योजनाओं के बारे में उपस्थित लोगों को जानकारी दी। साथ ही विधिक सहायता के प्रावधानों, मध्यस्थता के महत्व विधिक सेवा प्राधिकार द्वारा दिए जाने वाले कानूनी सेवाओं के बारे में उपस्थित लोगों को विस्तार से बताया।

इस कार्यक्रम में विधिक सेवाओं एवं सरकारी योजनाओं से संबंधित पम्पलेट व लीफलेट का वितरण भी लोगों के बीच किया गया। पूरे कार्यक्रम का संचालन प्रखंड समन्वयक पंचायती राज उदय गुप्ता ने किया वहीं इस कार्यक्रम सफल संचालन हेतु धन्यवाद ज्ञापन कार्यपालक दण्डाधिकारी जितेन्द्र कुमार के द्वारा किया गया। मौके पर पीएलवी देवानंद प्रसाद, इन्द्रनाथ प्रसाद, आजाद अहमद, अनुरीमा देवी, महिला प्रर्वेयिक्षका मटिल्दा कुजूर, श्वेता कुमारी, मुखिया, पंसस, आदि समेत काफी संख्या में लोग मौजूद थे। विधिक जागरूकता सह विधिक सहायता कार्यक्रम शिविर में परिसम्पत्तियों का किया गया वितरण।

महुआडांड प्रखण्ड कार्यालय परिसर स्थित सभागार में आयोजित विधिक जागरूकता सह विधिक सहायता कार्यक्रम शिविर में दर्जनों लाभुकों के बीच परिसम्पत्तियों का वितरण भी किया गया। कार्यक्रम में 3 हरा राशन कार्ड, 8 सामाजिक सुरक्षा विधवा पेंशन, 10 मनरेगा जॉब कार्ड, सावित्री बाई फुले योजनान्तर्गत स्वीकृत प्रमाण पत्र आदि सहित अन्य लाभों का वितरण किया गया।

लातेहार में दो समुदायों के बीच झड़प, कई घायल

नवीनमेल संवाददाता। लातेहार

सदर थाना क्षेत्र अंतर्गत पतरातू गांव में शनिवार की रात दो समुदायों के बीच झड़प हो गई। घटना के बाद पूरे गांव में तनावपूर्ण माहौल है। हालांकि, लातेहार एसपी अंजनी अंजन के नेतृत्व में पहुंची पुलिस टीम ने लोगों को समझा-बुझाकर हालात को संभाला। पुलिस रविवार को भी गांव में कैंप कर रही है। बताया जाता है कि पतरातू गांव में शुक्रवार को सरस्वती पूजा का मूर्ति विसर्जन का कार्यक्रम चल रहा था। इसी बीच दूसरे समुदाय के लोग वहां पहुंचे और मूर्ति विसर्जन कर रहे लोगों से मारपीट करने लगे। इससे माहौल बिगड़ गया। सूचना मिलते ही प्रशासनिक अधिकारी मौके पर पहुंचे और स्थिति को नियंत्रित किया। इसके बाद ग्रामीणों ने मूर्ति विसर्जन में बाधा डालने वाले लोगों के खिलाफ कार्रवाई करने की मांग को लेकर थाना में आवेदन दिया। इस बात को लेकर एक बार फिर गांव में तनाव उत्पन्न हो गया। शनिवार की रात दोनों समुदायों के लोग भिड़ गए और मारपीट होने लग गई। इसमें एक युवक को चोट भी आई, जिसे सदर अस्पताल लाया गया। इसके बाद बड़ी संख्या में ग्रामीण सड़क पर उतर गए। सूचना पर तत्काल लातेहार के एसपी अंजनी अंजन पुलिस बल के साथ गांव पहुंचे और स्थिति को नियंत्रित किया। उन्होंने दोनों पक्षों के प्रबुद्ध लोगों ने ग्रामीणों से आपसी भाईचारा बनाए रखने की अपील की। मामले की जानकारी मिलने के बाद स्थानीय विधायक वैद्यनाथ राम ने भी गांव पहुंचे और दोनों पक्षों के लोगों को समझाया। उन्होंने गांव में शांति समिति की बैठक करने की अपील की।

आरएसएस का मुरपा समेत चार जगहों पर मंडल सम्मेलन आयोजित

नवीनमेल संवाददाता। बालूमाथ

बालूमाथ प्रखंड के मुरपा समेत चार जगहों पर मंडल सम्मेलन का आयोजन किया गया। यह मंडल सम्मेलन मुरपा बालूमाथ बालू तथा सेरेगड़ में आयोजित की गई। जिसमें संबंधित मंडल क्षेत्र के काफी संख्या में स्वयंसेवकों ने भाग लिया। इसी कार्यक्रम के तहत मुरपा ग्राम में आयोजित मंडल सम्मेलन के पूर्व स्वयंसेवकों द्वारा भव्य शोभायात्रा निकाली गई, जो भव्य शोभायात्रा मरांगलोया ग्राम से प्रारंभ होकर मनसिंगा मुरपा शिव मंदिर होते हुए गुजरी। इस दौरान किशोरी और लड़कियां माता रानी लक्ष्मीबाई और भारत माता की रूप धारण किए हुए थे जो काफी आकर्षक लग रहा था और देखते ही बन रही थी। इस भव्य शोभायात्रा में शामिल लोग भारत माता की जय वंदे मातरम जय श्री राम आदि गगन भेदी नारे लगा रहे थे। तत्पश्चात कार्यक्रम की शुरूआत भारत माता के चित्र के समक्ष लोगों ने दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का विधिवत शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम का संचालन अनूप कुमार वर्मा ने की। जबकि कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पलामू विभाग कार्यवाह राजीव कुमार सिंह ने कहा कि संघ की स्थापना सन 1925 ईस्वी में हुई थी जो अपना शताब्दी वर्ष पूरा करने जा रही है जिसके आलोक में इस तरह के कार्यक्रम आज पूरे झारखंड प्रांत के 827 जगहों पर आयोजित किए गए हैं। उसमें मुरपा मंडल भी शामिल है उन्होंने संघ को परिभाषित करते हुए कहा कि संघ का गठन जिस उद्देश्य से किया गया था वह उद्देश्य आज पूरा करने का वक्त आ गया है। आज सनातन धर्म को तोड़ने के लिए तरह-तरह के हथकंडे अपनाए जा रहे हैंऔर मिशनरी संस्थाओ द्वारा प्रचार प्रसार किया जा रहा है जिससे लोगों को सचेत रहने की जरूरत है और उन्हें समय-समय पर मुंहतोड़ जवाब देना होगा। इसके लिए उन्होंने तैयार रहने की बात कही। वहीं संघ के स्वयंसेवक रमेश उरांव ने कहा कि झारखंड के भोले भाले आदिवासियों को धर्म के नाम पर दूसरे धर्म के लोग बांटना चाह रहे हैं जिससे यहां के लोगों को सोचना समझना होगा और अपनी चट्टानी एकता को दिखाना होगा। सरना सनातन एक है इसे कोई तोड़ नहीं सकता और जो तोड़ने का प्रयास करेगा उसको इसकी बड़ी कीमत चुकानी होगी। मौके पर काफी संख्या में विभिन्न ग्रामीण क्षेत्रों से आए हजारों की संख्या में पुरुष और महिला स्वयंसेवक मौजूद रह। कार्यक्रम को लेकर स्वयंसेवक बंधन सॉन्ग कुंदन यादव, सचिंदर यादव, पप्पू यादव, समेत सैकड़ों लोगों ने सक्रिय भूमिका निभाई।

छिपादोहर थाना क्षेत्रों में शान से लहराया तिरंगा

नवीनमेल संवाददाता। बरवाडीह

प्रखंड के छिपादोहर थाना क्षेत्र में गणतंत्र दिवस की धूम रही कार्यक्रम के प्रारंभ में छिपादोहर चिल्ड्रन पैराडाइज पब्लिक स्कूल के स्कूल बच्चे द्वारा प्रभात फेरी निकालकर भारत माता की जय गणतंत्र दिवस अमर रहे आदि का नारा लगाया गया। इसके उपरांत थाना परिसर में थाना प्रभारी अभिषेक कुमार द्वारा ध्वजारोहण किया गया. वन विभाग कार्यालय में वनपाल नंद कुमार मेहता, गम्हरिया मध्य विद्यालय में प्रधानाध्यापक महेंद्र किसान, परियोजना उच्च विद्यालय में मीरा एक्का, भाजपा कार्यालय में रामधनी सिंह, विवेकानंद पब्लिक स्कूल में पंकज गिरी, चिल्ड्रन पैराडाइज पब्लिक स्कूल में थाना प्रभारी अभिषेक कुमार, विद्यालय सचिव डॉ सुशील कुमार, कोषाध्यक्ष सुनील कुमार द्वारा संयुक्त रुप से झंडोत्तोलन किया गया. पंचायत सचिवालय में मुखिया वेरोनिका कुजूर, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में डॉक्टर क्षितिज राज छिपादोहर आसपास के क्षेत्र में एवं आसपास के क्षेत्र में झंडोत्तोलन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। वही इस अवसर पर चिल्ड्रन पैराडाइज पब्लिक स्कूल परिसर में खेलकूद प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया।

विधायक ने डीआरएम से ट्रेनों के ठहराव की मांग की

नवीनमेल संवाददाता। बरवाडीह

मनिका विधानसभा के स्थानीय विधायक रामचंद्र सिंह ने धनबाद मंडल रेल प्रबंधक आशीष बंसल को पत्राचार कर बरवाडीह ,छिपादोहर व केचकी रेलवे स्टेशन में पूर्व की तरह सभी ट्रेनों के ठहराव की मांग की है। । विधायक सिंह ने डीआरएम को लिखे पत्र में कहा है कि कोरोना काल में बरवाडीह रेलवे स्टेशन में कई ट्रेनों का ठहराव बंद कर दिया गया था। लेकिन 4 माह पूर्व कई ट्रेनों का ठहराव प्रारंभ किया गया है। लेकिन इसके बावजूद भी बरवाडीह रेलवे स्टेशन मे हावड़ा भोपाल एक्सप्रेस, रांची वाराणसी एक्सप्रेस का ठहराव पूर्व बरवाडीह में निर्धारित था। इसके अलावा केचकी एवं छिपादोहर स्टेशन मैं कई ट्रेनों का होती थी, लेकिन सभी और कोरोना से स्थिति समान होने के बावजूद भी इन ट्रेनों का ठहराव बरवाडीह ,छिपादोहर व केचकी रेलवे स्टेशन में नहीं होने से लोगों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। विधायक ने अपने पत्र में कहा कि पर्यटन के दृष्टिकोण से बरवाडीह के अलावे छिपादोहर केचकी रेलवे स्टेशन हमारे विधानसभा क्षेत्र के मशहूर रेलवे स्टेशन में माना जाता है। इन रेलवे स्टेशन से उतरकर पर्यटक बेतला ,नेतरहाट की ओर प्रस्थान करते हैं। वही आम लोगों को भी इन स्टेशनों में ट्रेन के ठहराव होने से काफी सहूलियत मिल रही थी ।लेकिन ट्रेनों का ठहराव बाधित होने से लोगों की परेशानी बढ़ी है।

मीनाक्षी नेत्रालय सेवा संस्थान के तत्वधान में स्वास्थ्य शिविर का आयोजन

700 का निःशुल्क किया गया इलाज

नवीनमेल संवाददाता। गिद्धौर

जिले के गिद्धौर प्रखंड अंतर्गत मंझगांवा पंचायत के पिंडारकोण गांव स्थित मुखिया आवास के समीप रविवार को रांची के मीनाक्षी नेत्रालय सेवा संस्थान के तत्वधान में निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। शिविर आरोग्य भारती स्वास्थ्य जागरूकता अभियान के तहत प्रदान फाउंडेशन के नेतृत्व में लगाई गई। शिविर का विधिवत उद्घाटन डॉक्टर अभिषेक कुमार सिंह, संकेश कुमार सिंह, विकास गुप्ता, पूर्व आईपीएस दीपक वर्मा, मुखिया सरिता देवी सहित अन्य ने दीप प्रज्वलित कर किया। इसके पश्चात शिविर में नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. सिंह, चेस्ट स्पेशलिस्ट डॉ. विकास कुमार गुप्ता, मधुमेह एवं थायराइड विशेषज्ञ डॉ. आशुतोष सिंह, चर्म रोग विशेषज्ञ डॉ. संकेश कुमार सिंह व दंत रोग विशेषज्ञ डॉ. चंदन कुमार सिंह द्वारा करीब 700 मरीजों का निःशुल्क इलाज कर जरुरत के अनुसार दवा दी गई। ग्रामीणों ने शिविर आयोजन कराने के लिए मुखिया के अलावे समाजसेवी नमोनारायण सिंह व बसंत कुमार सिंह के प्रति आभार व्यकत किया। शिविर को कई अतिथियों ने संबोधित कर कहा गांव में इस तरह का शिविर लगाना सराहनीय पहल है। शिविर को सफल बनाने में अजय कुमार सिंह व उप मुखिया गणेश कुमार सिंह, दिगंबर रविदास सहित अन्य की अहम भूमिका रही।

धूमधाम के साथ संपन्न हुआ सूर्य अचला सप्तमी का त्यौहार

चतरा। जिला मुख्यालय स्थित हेरू नदी के तट पर स्थित शिव मंदिर प्रांगण में सूर्य अचला सप्तमी का त्योहार धूमधाम से मनाया। इस दौरान विधि-विधान के साथ पूजा-अर्चना के बाद हवन, आरती तथा प्रसाद वितरण किया गया। जिसमे दर्जनों मगबंधु अपने पूरे परिवार के साथ बैठकर हवन किया। सूर्य पूजा में यजमान अक्षय मिश्र थे। जबकि आचार्य की भूमिका करुणारस सिंधु के कार्यकारी अध्यक्ष धीरेंद्र शर्मा ने निभाया। कार्यक्रम में पूरे जिलेभर से आए सैकड़ों के तादात में शाकद्वीपीय ब्राह्मण परिवार के सदस्य सुबह के दस बजे से शाम पांच बजे तक रहे। कार्यक्रम में महिलाओं ने भी बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया।

30 वें वार्षिकोत्सव पर कलश यात्रा एक को

तीन को होगा भंडारा व रात्रि जागरण

नवीनमेल संवाददाता। लातेहार

शहर के रेलवे स्टेशन रोड में कारगिल पार्क के पास अवस्थत श्री वैष्णव दुर्गा मंदिर के 30 वें वार्षिकोत्सव धुमधाम से मनाया जायेगा। इसकी तैयारियां प्रारंभ कर दी गयी है। मंदिर के रंगरोगन का कार्य अंतिम चरण में है। अर्थ संग्रहण कार्य प्रारंभ कर दिया गया है। मंदिर समिति के सचिव आशीष टैगोर एवं सह सचिव रविंद्र प्रजापति व रंजीत कुमार ने संयुक्त रूप से बताया कि वार्षिकोत्सव के तीन दिवसीय कार्यक्रम का शुभारंभ आगामी एक फरवरी को कलश यात्रा के साथ होगा। कलश यात्रा मंदिर परिसर से निकल कर थाना चौक एवं मेन रोड होते हुए काली मंदिर मोड़ तक जायेगी। इसके बाद इसी मेन रोड व मानस पथ से औरंगा नदी तट पहुंचेगी। यहां वैदिक मंत्रोच्चारण के बीच कलशों में जल भरा जायेगा। इसके बाद कलश यात्रा पुनः मंदिर परिसर पहुंचगी। यहां आरती के प्रसाद कलशधारियों के बीच प्रसाद का वितरण किया जायेगा। दो फरवरी को कलशों की स्थापना कर दुर्गा सप्तशति पाठ का आयोजन किया जायेगा। तीन फरवरी को हवन व पुणार्हुति के बाद मध्याह्न 12 बजे से भंडारा का आयोजन किया जायेगा। भंडारा में 15 हजार श्रद्धालुओ के लिए प्रसाद तैयार किया जायेगा। तीन फरवरी की रात्रि में नौ बजे से सरोज लक्खा (धनबाद) एवं उसकी मंडली के जया मैडी, वीणा कौर, विजेता व जतीन सरदार के द्वारा माता के चरणों में भजन पुष्प अर्पित किया जायेगा।

टूर्नामेंट

जस्टिस एलपीएन शाहदेव मेमोरियल टी-10 क्रिकेट टूर्नामेंट का समापन

खेल बिना जीवन अधूरा है : प्रतुलनाथ शाहदेव

चंदवा फाइटर ने कमांडों क्रिकेट क्लब को हराकर खिताब पर जमाया कब्जा

नवीनमेल संवाददाता। चंदवा

युवा भारत द्वारा आयोजित जस्टिस एलपीएन शाहदेव मेमोरियल केनवास टी-10 क्रिकेट टूर्नामेंट का समापन फाइनल मैच के साथ संपन्न हो गया। फाइनल मैच में चंदवा फाइटर ने कमांडो क्रिकेट क्लब को पराजित कर खिताब पर कब्जा जमा लिया। पहले बल्लेबाजी करते हुए चंदवा फाइटर की टीम ने 111 रन का स्कोर बनाया। जवाबी पारी खेलने उतरी कमांडो क्लब की टीम 10 ऑवर में 60 रन ही बना पाई मैन ऑफ द मैच राजा तिवारी को दिया गया।आयोजन समिति की ओर से विजेता टीम को 25 हजार और उप विजेता टीम को 15 हजार रुपये का पुरस्कार दिया गया।

समापन समारोह को संबोधित करते हुए लाल प्रतुल नाथ शाहदेव ने कहा कि खेल बिना जीवन अधूरा है। बड़ी बात यह है कि खेल से शरीर स्वस्थ तो बनता ही है मानसिक विकास भी बेहतर होता है।

उन्होंने आगे कहा कि खेल में क्षेत्र बाधा नहीं बनती स्व एलपीएन शाहदेव छोटे से गांव रोल में पढ़े बढ़े प्राथमिक शिक्षा गांव में ही प्राप्त किया और वे आगे चलकर झारखंड से पहले चीफ जस्टिस बनने का गौरव प्राप्त किया। मैच के दौरान बेहतर प्रदर्शन करनेवाले चंदवा फाइटर के राहुल को मैन आफ द मैच का पुरस्कार प्रदान दिया गया। राहुल कुमार मिश्रा और रंजन कुमार ने मनमोहक कमेंट्री के माध्यम से लोगों का दिल जीता। इससे पूर्व राष्ट्रगान गाया गया। ग्रीन फिल्ड एकेडमी के विद्यार्थियों द्वारा देशभक्ति से ओत प्रोत सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश कर लोगों की वाहवाही लूटी।

मौके पर श्रीमती विद्या शाहदेव, कौशल नाथ शाहदेव,सांसद प्रतिनिधि महेंद्र प्रसाद साहु,भाजपा मंडल अध्यक्ष अमित कुमार गुप्ता,कामता पंसस अयुब खान,पूर्व उप प्रमुख फिरोज अहमद,झामुमो जिला उपाध्यक्ष शितमोहन मुंडा,जमीरा मुखिया दुर्गावती देवी,अरविंद लाल नाथ शाहदेव,बिनोद कुमार गुड्डू, दीपक निषाद, नीलम देवी समेत सैकड़ों लोग मौजूद थे।

टोरी रेलवे फाटक जाम में फंसकर एक व्यक्ति की मौत

चंदवा। टोरी जंक्शन के पूर्वी छोर पर स्थित रेलवे फाटक बंद रहने से रविवार को फिर एक व्यक्ति की मौत हो गई। मृतक बिजेंद्र साव कामता पंचायत के कुजरी का रहने वाला था। बिजेंद्र की तबियत अचानक खराब हो गई थी परिजन उसे ईलाज के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र चंदवा ले जा रहे थे इसी क्रम में टोरी रेलवे क्रॉसिंग फाटक जाम पर करीब आधे घंटे वे फंसे रहे जहां उनकी मौत हो गई। टोरी जंक्शन पर फ्लाई ओवरब्रिज का निर्माण शुरू नहीं होना लापरवाही का नतीजा है निर्माण कार्य जल्द शुरू होने से अभी भी कई लोगों की जान बच सकती है। टोरी चंदवा का फ्लाई ओवरब्रिज नहीं बनने से फाटक अक्सर जाम रहता है। फाटक जाम से चंदवा वासी त्राहि-त्राहि कर रहे हैं लेकिन फ्लाई ओवरब्रिज निर्माण कार्य शुरू कराने के लिए ठोस कदम नहीं उठाया जा रहा है।

जलडेगा में धूमधाम से मनाया गया पल्ली दिवस

नवीनमेल संवाददाता। जलडेगा

प्रखंड के संत पौलुस कैथोलिक चर्च टाटी में बड़े ही हर्षोल्लास के साथ रविवार को पल्ली दिवस मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ फादर जॉर्ज भालेन्टाईन केरकेट्टा जलडेगा भिखारिएट के डीन की अगुवाई में धार्मिक अनुष्ठान के साथ की गई।फादर लिनुस बुढ़ टाटी के पल्ली पुरोहित, फादर राजेश तोपनो, फादर राजन सोरेंग, फा. गुलाब लुगुन, फा. निस्तोर एक्का सह अनुष्ठाता के रूप में उपस्थित रहे। तत्पश्चात टाटी पल्ली वासियों द्वारा रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत की गई।मौके पर उपस्थित काथलिक युवासंघ सिमडेगा धर्मप्रान्त के अध्यक्ष अजय एक्का ने पल्ली वासियों को संबोधित करते हुए कहा कि काथलिक चर्च की देख - रेख में हमारा समाज सभी क्षेत्रों में विकसित हो रही है। फिर भी वर्तमान की परिस्थितियों को देखते हुए हमें अधिक से अधिक रोजगार स्वारोजगार से जुड़ने तथा आर्थिक सशक्तिकरण की दिशा में पहल करने की आवश्यकता है। मौके पर आनंद सोरेंग, निस्तोर सुरीन, विनय प्रकाश, रीता सुरीन एवं ग्रामीण उपस्थित थे।

नैनो यूरिया के प्रचार गाड़ी को मुखिया ने किया रवाना

भंडरा। भंडरा पंचायत के मुखिया इंद्रदेव उरांव ने रविवार को किसानों कि उपस्थिति में प्रचार गाड़ी का विधिवत पूजा अर्चना कर फीता काटकर उद्घाटन किया। उद्घाटन के मौके पर उपस्थित कम्पनी के अधिकारियों ने बताया इफको कंपनी के प्रोडक्ट नैनो यूरिया को किसान अपने खेतों में लगाकर अच्छी पैदावार कर सकते हैं। अब यूरिया बोरे मे नहीं बल्कि लिक्विड फॉर्म में बाजारों में उपलब्ध है। जो कि किसान अपनी भूमि की उर्वरा शक्ति को कायम रखने के लिए नैनो यूरिया का प्रयोग करें। यह अन्य उर्वरक के मुकाबले सुरक्षित है जो जमीन को पूरा पोषक तत्व प्रदान करती है। मौके पर आनंद कुमार साहू, राजकुमार साहू, बिरीया उरांव, जोखन उरांव, महताब अंसारी, जितेंदर साहू, गुड्डू यादव के आलावे भारी संख्या में क्षेत्र के किसान मौजूद थे।

ऐतिहासिक गांधी मेले में उमड़ी भीड़, लोगों ने लिया खूब आनंद

नवीनमेल संवाददाता। सिमडेगा

जिले में 2 वर्षों के बाद लगे ऐतिहासिक गांधी मेला में रविवार को भारी भीड़ भाड़ का माहौल देखने को मिला ।जहां पर लोगों को पांव रखने के लिए जगह मुनासिब नहीं हो रही थी बताया गया कि बीते 2 वर्षों में कोरोना काल के दौरान यहां मेला नही लगा।दो वर्षों बाद जब मेला लगा तो दूर-दूर से खेल तमाशा झूला मिठाई सहित अलग-अलग प्रकार के चीजें आई हुई है। जिसे देखने के लिए सिमडेगा जिले के सुदूर ग्रामीण क्षेत्र सहित सभी तबके के लोगों का आगमन हुआ। बताया जा रहा है कि रविवार के दिन सरकारी छुट्टी सहित विभिन्न जगहों पर छुट्टी होने की वजह से यहां पर भारी भीड़ उमड़ी। लोगों ने जमकर मेले में झूला मिठाई सहित सभी चीजों का आनंद लिया। इधर मेले में कृषि प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया। जहां पर दूर-दूर से आए किसानों द्वारा उगाए गए फसलों को देखने के लिए लोग पहुंच रहे हैं। जहां पर एक से बढ़कर एक अलग अलग किस्म के फसलों का प्रदर्शनी स्टॉल लगाया गया है। वहीं बताया गया कि सुरक्षा को लेकर नगर परिषद सिमडेगा के निर्देश पर चप्पे-चप्पे पर सीसीटीवी लगाए गए हैं ताकि मेले में विधि व्यवस्था में किसी प्रकार की कोई परेशानी ना हो ।इसके अलावा मेले के चारों ओर सुरक्षा को लेकर पुलिस पदाधिकारी एवं दंडाधिकारी की प्रतिनियुक्ति की गई है ताकि विधि व्यवस्था बनी रहे।

कांग्रेस पार्टी प्रखंड समिति की बैठक, मंडल कमेटी पुनर्गठन पर चर्चा

कोलेबिरा। रविवार को कोलेबिरा प्रखंड कांग्रेस कमेटी के द्वारा बैठक की गयी। बैठक की अध्यक्षता प्रखंड अध्यक्ष सह विधायक प्रतिनिधि सुलभ नेल्सन डुंगडुंग की अध्यक्षता में हुई।बैठक में मंडल कमेटी पुनर्गठन पंचायत समिति पुनर्गठन तथा बूथ कमेटी पुनर्गठन करने तथा प्रदेश मे भेजने का निर्णय लिया गया। वहीं अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के निदेर्शानुसार आज 30 जनवरी को प्रातः 10:00 झंडा तोलन का कार्यक्रम किया जाएगा।फरवरी के प्रथम सप्ताह में वन महोत्सव कार्यकर्ता सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा।बैठक में मुख्य रूप से श्यामलाल प्रसाद सुनील खड़िया सुरेश द्विवेदी फुल केरिया डांग अमित बागे अमृत डुंगडुंग बिरोन सांगा,महिमा बागे अभिमन्यु सिंह,कोमल बागे आदि उपस्थित रहे।

आवारा कुतों ने पांच बकरियों को मार डाला

नवीनमेल संवाददाता। सेन्हा

सेन्हा प्रखंड क्षेत्र के पारही डांडीटोली में आवारा कुतो का आतंक बढ़ गया है। आवारा कुत्तों ने इस बार एक ही परिवार के पांच बकरी को निशाना बनाया है।जिससे गरीब किसान को पशुधन की क्षति होने के साथ आर्थिक नुकसान हुआ है। पीड़ित किसान जतन चिक बड़ाइक ने पंचायत मुखिया अनिल उराँव एवं प्रखंड विकास पदाधिकारी अशोक कुमार चोपड़ा को अवगत कराते हुए आर्थिक सहयोग का गुहार लगाया है। वही मुखिया अनिल उरांव ने कहा की आवारा कुत्तों का झुंड ने बकरी पर हमला कर पांच बकरी को मार दिया जिससे गरीब किसान को काफी आर्थिक क्षति हुआ है। उन्होंने कहा किसान जतन चिक बड़ाईक बकरी पालन कर जीविकोपार्जन चलता था। परतुं एक साथ पांच बकरी के मौत होने से लगभग 30 से 40 हजार का आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ रहा है। बताते हुए कहा कि इस घटना को लेकर विभाग को अवगत कराया गया है। वहीं भाजपा अनुसूचित जनजाति मोर्चा जिला अध्यक्ष भीखराम भगत पारही डांडी टोली पहुंच बकरी पालक किसान चिक बड़ाइक से मुलाकात कर जायजा लेते हुए सरकारी लाभ मुहैया करवाने का आश्वासन दिया।

बोलबा प्रखंड सभागार में गुरु गोष्ठी का आयोजन

बोलबा । बोलबा प्रखण्ड सभागार मे गुरु गोष्ठी का आयोजन किया गया। बैठक में एफएलएन ,विद्यालय प्रबंधन समिति प्रशिक्षण, पोशाक खरीद,एम डी एम ऑडिट, पूर्ण शिक्षा पर विस्तृत रूप से जानकारी दी गयी। नवोदय विद्यालय मे फार्म भरने की स्थिति,शिशु पंजी प्रतिवेदन दो दिनों के अंदर जमा करने,वर्ग 8 परीक्षा का फॉर्म ऑनलाइन भरने,बर्ग एक से सात के बच्चों का मूल्यांकन करने,एस डी पी ऑनलाइन भरने, कस्तुरबा गांधी बालिका विद्यलय में वर्ग छः में नामांकन के लिए आवेदन जमा करने के लिए निदेश दिया गया, सभी प्रकार की राशि का मेकर के रूप में अपलोड करने तथा उपयोगिता जमा करने को कहा गया,खेल सामग्री क्रय संबंधी उपयोगिता उपलब्ध कराने, सामाजिक अंकेक्षण ,प्रसस्त अप्प के विषय पर चर्चा की गई, नोट बुक वितरण ,सहायक सामग्री वितरण की उपयोगिता जमा करने,की समीक्षा की गयी। प्रधानो को गुणवता पूर्ण शिक्षा देकर शिक्षा मे सुधार करने का निर्देश दिया गया।

जेजेबीए की बैठक में वन अधिकार कानून 2006 की दी गई जानकारी

नवीनमेल संवाददाता। सिमडेगा

गरजा पंचायत अंतर्गत गरजा राजस्व ग्राम में वन अधिकार कानून 2006 के तहत ग्राम सभा की बैठक किया गया।इस बैठक की अध्यक्षता अपलुस एक्का ने किया। इस अवसर पर झारखंड जंगल बचाओ आंदोलन जनसंगठन एवं ग्राम सभा मंच के मीडिया प्रभारी खुशीराम कुमार को विशेष रूप से आमंत्रित किया गया था।मौके पर खुशीराम कुमार ने कहा कि वनाधिकार कानून 2006 एक केंद्रीय कानून है जो जम्मू और कश्मीर को छोड़कर सम्पूर्ण भारत में लागू है।अब हमारे लोगों को कानून की जानकारी रखना होगा और अपने अधिकारों को बढ़ चढ़ कर लेना होगा। जल जंगल जमीन हमारे पूर्वजों के द्वारा दिया हुआ विरासत है इसे हमें हर हाल में बचाकर रखना होगा चूँकि जंगल हमारी आजीविका के साथ साथ संस्कृति भी है।पृथ्वी और पानी को बचाने के लिए जंगलों को रहना जरूरी है इसलिए पेडों की कटाई को रोकना कटाई को रोकना होगा। आगे यह भी कहा कि वन पट्टा अभी तक सरकार द्वारा निर्गत नहीं करना यह बहुत बड़ा दुर्भाग्यपूर्ण है ऐसा लगता है कि यहाँ के लोगों को उनके अधिकारों से वंचित रखने की मानसिकता को दशार्ता है। ग्राम सभा की अधिसूचना बोर्ड गड़ी हमारे अधिकार के क्षेत्रों को उपयोग, सरंक्षण एवं प्रबंधन करने का अधिकार प्राप्त है।इसलिए अपने क्षेत्रों में बोर्ड गड़ी कार्यक्रम किया जाता है।कभी कभी देखा जाता है है कि कुछ दलाल किस्म के लोगों के द्वारा गाँव की एकता को अपने स्वार्थ के लिए तोड़ने का प्रयास किया जाता है इससे बचना होगा और अपने एकता बरकरार रखना होगा। इस बैठक में मुख्य रूप से अनिल डुंगडुंग, सुधीर बाड़ा, सामुएल बाड़ा, बिलासी देवी, एतवारी देवी, चपु प्रधान, मार्टिन टोप्पो,लीलावती देवी, जसवंती देवी, पुनी देवी, सुखमनी देवी, गुड्डी देवी, संगीता देवी, ग्लोरिया किड़ो, अनिता देवी,बंधु लोहरा,तोबियस बारला मरथा तिर्की, मंगरु लोहरा,गोपाल प्रधान,जोनो प्रधान सहित ग्रामीण उपस्थित थे।

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग के सदस्य अनंत नायक आज करेंगे समीक्षा

लोहरदगा। राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग (एनसीएसटी) के सदस्य अनंत नायक आज उपायुक्त, लोहरदगा व जिला स्तरीय अन्य पदाधिकारियों के साथ लोहरदगा जिला में अनुसूचित जनजाति के कल्याण एवं विकास के लिए किये जा रहे कार्यों व योजनाओं की समीक्षा करेंगे। यह बैठक समाहरणालय सभाकक्ष में होगी। बैठक में एनसीएसटी की सचिव अलका तिवारी, संयुक्त सचिव के थॉथांग सहायक निदेशक मीनाक्षी शर्मा, माननीय सदस्य के निजी सचिव पीके परिदा और आयोग के सलाहकार गुलशन खाकलानी भी उपस्थित रहेंगे।

आजसू का सदस्यता अभियान आयोजित

सिमडेगा। आजसू पार्टी सिमडेगा द्वारा रविवार को सिमडेगा शहरी क्षेत्र के कुबिटोली मैदान में कार्यक्रम आयोजित करते हुए कार्यकर्ता सम्मेलन सह सदस्यता अभियान का किया आयोजन। इस मौके पर कांग्रेस बीजेपी झारखंड मुक्ति मोर्चा के दर्जनों लोगों ने आजसू पार्टी के नीति सिद्धांतों से प्रभावित होकर पार्टी का दामन थामा ।इस मौके पर जिला अध्यक्ष की मौजूदगी में महिला मोर्चा जिला कमेटी का गठन किया गया जिसमें महिला जिला अध्यक्ष के रूप में पुनिता लकड़ा,सचिव नील प्रभा तिग्गा, कोषाध्यक्ष कौशल्या बड़ाईक,एवं उपाध्यक्ष जेमा बाड़ा को बनाया गया। वही नगर अध्यक्ष के रूप में सचिन दास, सचिव रंजीत भोक्ता तथा सदर प्रखंड अध्यक्ष अजय साहू सचिव देवेंद्र साहू को बनाया गया।

ऑटो पलटने से 4 बच्चे घायल

सिमडेगा। कोलेबिरा थाना क्षेत्र अंतर्गत जलेबी घाटी जंगल में गुमला जिले के पालकोट प्रखंड अंतर्गत पोजेन्गा के संत पौल इंग्लिश मीडियम स्कूल के बच्चों से भरी सिमडेगा पिकनिक मनाने आ रही ऑटो पलट गई जिसके बाद ऑटो में सवार 4 बच्चे गंभीर रूप से घायल हो गए। घटना रविवार की सुबह 9:00 बजे की है। मौके पर स्कूल के प्रिंसिपल द्वारा सभी घायल बच्चों को इलाज के लिए सदर अस्पताल सिमडेगा लाया जहां पर उनकी इलाज चल रही है। घायल बच्चों में दुर्गा सिंह सारूबेड़ा,उत्तम सिंह सरूबेडा, अमित उरांव शामिल है बताया गया कि अमित का पैर में गंभीर चोट आई है।

सेन्हा के भड़गांव पंचायत से कांग्रेस की भारत जोड़ो पद यात्रा शुरू

नवीनमेल संवाददाता। सेन्हा

प्रखंड क्षेत्र के भड़गांव पंचायत से भारत जोड़ो पद यात्रा का आरम्भ किया गया। जो सेन्हा प्रखंड मुख्यालय में समापन किया गया। उक्त कार्यक्रम प्रखंड कांग्रेस कमिटी पूर्व प्रखंड अध्यक्ष जयनाथ साहू एवं नंदकिशोर शुक्ला के नेतृत्व में प्रखंड कांग्रेसियों द्वारा आयोजित किया गया। भारत जोड़ो अभियान के तहत कांग्रेस पार्टी को मजबूती प्रदान करने को लेकर किया गया है। जानकारी के अनुसार बता दें कि भारत जोड़ो पद यात्रा के माध्यम से कांग्रेस पार्टी कार्यकर्ताओ को जोड़ने का कार्य कर रही साथ ही बताया जाता है कि देश में राहुल गांधी द्वारा भारत जोड़ो पद यात्रा के माध्यम से मजबूती प्रदान के लिए जो बीड़ा उठाया गया है। उससे यह प्रतीत होता है कि भारत देश में कांग्रेस पार्टी से कार्यकर्ता टूट दूसरे पार्टी का दामन थाम रहा है। समापन के दौरान संबोधित भाषण में कार्यकर्ताओ को जोड़ने तथा पार्टी को मजबूती प्रदान करने पर जो दिया गया। वहीं सूत्रों से प्राप्त जानकारी के अनुसार बता दें कि भारत जोड़ो पद यात्रा में महिलाओं का जो हुजूम देखने को मिला है। उन महिलाओं को छलने का कार्य करते हुए भारत जोड़ो यात्रा में शामिल किया गया है।

बंद पड़े बाजार को शुरू करने के लिए ग्रामसभा का आयोजन

बोलबा। बोलबा प्रखण्ड के किलेसेरा गांव में बंद पड़े पुराने बाजार को शुरू करने के लिए ग्राम सभा का आयोजन किया गया। इस मौके पर उप मुखिया बसंत खलखो ने बताया कि बोलबा प्रखंड के किलेसेरा गांव में कोरोना काल से ही साप्ताहिक बाजार बंद हो गया है।बाजार नहीं होने के कारण किलेसेरा एवं आसपास गांव के लोगों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।लोगों को बोलबा, सलगापोंछ अथवा उड़ीसा के कुतरा बाजार से अपनी जरूरत के सामान खरीदना पड़ता है । बताया गया कि किलेसेरा गांव में बंद पड़े पुराने बाजार को बढ़ावा देने के लिए सबकी सहमति बनी जो सप्ताह में एक दिन शुक्रवार को लगेगा ।

स्वर्गीय बिशप जोसेफ मिंज मेमोरियल बालक हॉकी प्रतियोगिता का आयोजन

नवीनमेल संवाददाता। ठेठईटांगर

प्रखंड अंतर्गत रेंगारीह में 21वीं स्व विशफ जोसेफ मिंज मेमोरियल धर्मप्रांतीय बालक वर्ग हॉकी प्रतियोगिता का फाइनल मैच रविवार को खेला गया जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में कोलेबिरा विधायक नमन बिक्सल कोंगाड़ी उपस्थित हुए। फाइनल मैच कुरडेग और रेंगारीह के बीच खेला गया जिसमे कुरडेग 3-0 जीत हासिल किया ।मौके पर एक से बढ़कर एक संस्कृति नृत्य की प्रस्तुत की गई। मौके पर विधायक ने कहा कि हॉकी बहुत ही अच्छा खेल है और विद्यार्थियों के द्वारा सबसे अधिक पसंद किया जाता है। हॉकी के लिए दूसरा स्वर्णकाल लाने के लिए इसे कॉलेज और स्कूलों में विद्यार्थियों को नियमित भागीदारी के द्वारा बढ़ावा दिया जाना चाहिए। योग्य बच्चों को स्कूली स्तर से ही हॉकी को सही तरीके से खेलना सिखाना चाहिए। हॉकी भारत में बहुत महत्वपूर्ण खेल है क्योंकि भारत को हॉकी के क्षेत्र में कई वर्षों तक विश्व विजेता बनाया है, इसलिए इसे भारत के राष्ट्रीय खेल के रुप में चुना गया है। इस खेल का इतिहास बड़ा और महान है, क्योंकि यह बुद्धिमान खिलाड़ियों द्वारा भारत की जड़ों में गहराई तक समाया हुआ है। हॉकी के खेल को बड़े और छोटे बच्चे समान रूप से खेलना पसंद करते है। हॉकी हमें एक साथ एकजुट होकर खेलना और एक दूसरे के सहयोग का महत्व सिखाता है।

बानो में ट्रेन से कटकर व्यक्ति की मौत

बानो। हटिया-राउरकेला रेल खंड के कनारोवा व टाटी रेल लाईन के बीच पोल संख्या 528/10 के पास ट्रेन से कटकर एक व्यक्ति की मौत हो गयी। घटना शनिवार शाम 6 से 7 बजे के बीच की बताई जा रही है। मृतक की पहचान ओडगा ओपी क्षेत्र के पतिअम्बा पंचायत अंतर्गत खरवागढ़ा निवासी कृषि मित्र हरि सिंह के रूप में किया गया है। इधर घटना की जानकारी मिलने पर रेलवे के अधिकारी घटनास्थल पहुंचे तथा मामले की जानकारी ली वहीं रेलवे के अधिकारियों ने स्थानीय प्रशासन को घटना की सूचना दी ।वहीं ग्रामीणों से बात करने पर बताया गया की दुर्घटना तपस्विनी एक्सप्रेस या एलेपी एक्सप्रेस से घटी है। फिलहाल पुलिस मामले की जांच कर रही है। वहीं परिजनों का रो रो कर बुरा हाल था इधर पुलिस द्वारा शव का पोस्टमार्टम करवाते हुए शव परिजनों को सौंप दिया।

आस्था नौ दिवसीय विश्व कल्याणार्थ श्री लक्ष्मी नारायण महायज्ञ संपन्न

हजारों लोग बने साक्षी, विश्व कल्याण की कामना

नवीनमेल संवाददाता। लोहरदगा

किस्को के तिसिया गांव में 9 दिनों तक चलने वाली विश्व कल्याणार्थ श्री लक्ष्मी नारायण महायज्ञ कार्यक्रम का समापन रविवार को भक्तिभाव से हो गया। महायज्ञ कार्यक्रम के सफल समापन समारोह के उपरांत भक्तजनों के द्वारा यज्ञ मंडप का परिक्रमा कर भगवान से क्षेत्र और लोहरदगा जिला के अलावा राज्य एवं देश में सुख समृद्धि की कामना की गई। यज्ञकर्ता के द्वारा भक्तजनों को प्रवचन सुनाया गया और महाप्रसाद का वितरण कर एक नया आयाम स्थापित किया गया। इधर तिसिया गांव में विगत एक माह से विश्व कल्याणार्थ श्री लक्ष्मी नारायण महायज्ञ कार्यक्रम को सफल बनाने में आयोजन समिति के पदाधिकारी व सदस्यों के अलावा पाखर पंचायत क्षेत्र के तिसिया, दुरहूल, हुटाप, कांशीटांड़, नाथपुर तिसिया अम्बा टोली, तिसिया डूमर टोली, तिसिया नवा टोली सहित अन्य गांवों के ग्रामीणों की ओर से दिन रात अथक मेहनत किया गया था। महायज्ञ कार्यक्रम को सफल बनाने में मुख्य रूप से कथा व्यास सह यज्ञकर्ता सदानंद रामानुज श्री वैष्णव जी महाराज, यज्ञाचार्य पंडित दामोदर पाठक शास्त्री, यज्ञ ब्राह्मण आशुतोष पाठक, सुमन पांडे, विपिन पांडे, दीपक पांडे, आनंद पांडे, वृंदावन ट्रस्ट संगीत रत्नेश्वर राय, भागवतानंद जी महाराज अयोध्या, मुख्य संरक्षक जिप सदस्य संदीप कुमार गुप्ता, उप प्रमुख गीता देवी, विजय सिंह राजेंद्र यादव, संजय यादव, फुलमनी देवी, बैजनाथ प्रसाद आदि की अग्रणी भूमिका रही।

जलछाजन परियोजना से जुड़कर परमेश्वर भगत की बदली तकदीर

नवीनमेल संवाददाता। लोहरदगा

परमेश्वर भगत एक किसान हैं जिनके पास पांच एकड़ उपजाऊ कृषि योग्य भूमि है। ये किस्को प्रखंड के बेटहठ पंचायत के भुषाड़ गांव के निवासी हैं। वर्ष 2018 तक ये अपनी जमीन के आधे हिस्से के 2 एकड़ में सिंचाई की पर्याप्त सुविधा के अभाव में धान (खरीफ) एवं 1/2 एकड़ में मौसमी सब्जी की खेती कर पाते थे। सिंचाई के लिए वर्षा आधारित खेती पर निर्भरता के कारण परिवार की बदहाल आर्थिक स्थिति से तंग आकर अपनी जमीन से 2 किलोमीटर दूर ईंट भट्टे में दैनिक मजदूरी करने का मन बना चुके थे। लेकिन परिस्थितियां बदली और आज परमेश्वर अपनी जमीन पर 3 एकड़ में खरीफ एवं रबी फसल के साथ-साथ 1 एकड़ में गोभी, टमाटर, मिर्च एवं ईख की खेती के अलावा अपने तालाब से लगभग 5 क्विंटल मछली का उत्पादन कर अपनी आर्थिक स्थिति सुधार कर पूरे गांव के लिए प्रेरणा बने हुए हैं। अन्य ग्रामीण इनके कार्यों का अनुकरण कर अपनी आर्थिक स्थिति को सुधारने हेतु प्रयासरत हैं। वर्ष 2017-18 में किस्को लोहरदगा अंतर्गत ग्राम भुसाड़ में जलछाजन कार्यों की शुरूआत की गई जिसके तहत परमेश्वर भगत की जमीन पर एक तालाब (10010010) खोदा गया और 1 एकड़ में मेढ़बंदी कार्य का कार्य किया गया। तालाब में मत्स्य-पालन हेतु प्रथम वर्ष में 1 लाख स्पॉन एवं वर्ष 2020-21 में 2000 फिंगरलिंग्स एवं तीन माह का मत्स्य-चारा उपलब्ध कराया गया। लाभुक द्वारा मत्स्य-पालन में रूचि लेते हुए उनके द्वारा तालाब में अतिरिक्त 1 लाख स्पॉन डाला गया था जिसका उत्पादन लगभग 6 क्विंटल करते हुए 1 लाख रुपए की आमदनी हुई एवं दूसरी बार लगभग 3 क्विंटल का उत्पादन करते हुए 50 हजार रुपए की आमदनी हुई। इसके अलावा सब्जी - फूलगोभी, पत्तागोभी, टमाटर, मिर्च एवं गन्ने की खेती से लाभुक को लगभग 10 हजार रुपए की अतिरिक्त आमदनी हुई।

बजट में मध्यमवर्ग, नौकरीपेशा लोगों को आयकर मोर्चे पर मिल सकती है कुछ राहत

एजेंसी। नई दिल्ली

1 फरवरी को वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण बजट पेश करेंगी। 11 बजे से बजट भाषण शुरू हो जाएगा। उम्मीदें लगाए बैठे लोगों इस बजट के ऐलान का इंतजार कर रहे है। चुनावी साल होने के कारण लोगों की उम्मीदें भी बढ़ गई है। देश की सबसे बड़ी जनसंख्या मिडिल क्लास , जो महंगाई के बोझ से सबसे ज्यादा परेशान है, उसे उम्मीद है कि बजट में उनके लिए राहत का ऐलान होगा। वहीं टैक्स के बोझ तले दबे सैलरीड क्लास को उम्मीद है कि वित्त मंत्री इनकम टैक्स में राहत देकर उनके दर्द को थोड़ा कम करेंगी। माना जा रहा है कि इनकम टैक्स में रोहात मिल सकती है। जाने-माने अर्थशास्त्री और शोध संस्थान सेंटर फॉर

डेवलपमेंट स्टडीज के चेयरमैन सुदिप्तो मंडल ने यह संभावना जतायी है। सरकार 2024 के लोकसभा चुनाव से पहले पेश होने वाले बजट में मध्यम वर्ग और नौकरीपेशा लोगों को आयकर मोर्चे पर कुछ राहत दे सकती है। इसके अलावा, उत्पादन आधारित प्रोत्साहन (पीएलआई) योजना के अंतर्गत आने वाले क्षेत्रों का दायरा बढ़ाए जाने की भी संभावना है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण संसद में एक फरवरी को 2023-24 का बजट पेश करेंगी। अगले साल होने वाले लोकसभा चुनाव से पहले यह उनका अंतिम पूर्ण बजट है। मौजूदा वैश्विक चुनौतियों और घरेलू स्थिति को देखते हुए बजट में सरकार की प्राथमिकताओं के बारे में पूछे जाने पर मंडल ने कहा, " निश्चित रूप से कई वैश्विक समस्याएं एक साथ सामने आई हैं और इससे देश में अर्थव्यवस्था के मोर्चे पर आर्थिक चुनौतियां बढ़ी हैं। इसमें आर्थिक वृद्धि दर का धीमा होना, मुद्रास्फीति और चालू खाते के घाटे में वृद्धि के साथ रोजगार का पर्याप्त संख्या में नहीं बढ़ना शामिल है। महंगाई खासकर मुख्य मुद्रास्फीति (ईंधन और खाद्य वस्तुओं को छोड़कर) अब भी ऊंची बनी हुई है। वित्त वर्ष 2022-23 की पहली तीन तिमाहियों में आर्थिक वृद्धि दर की रफ्तार धीमी हुई है और हमारा अनुमान है कि वित्त वर्ष 2023-24 में जीडीपी (सकल घरेलू उत्पाद) वृद्धि दर केवल 5.2 प्रतिशत रहेगी। उन्होंने कहा, "इसके अलावा, चालू खाते का घाटा (कैड) भी संतोषजनक स्तर से ऊपर है। इन सब चीजों को देखते हुए, मेरा मानना है कि रिजर्व बैंक मुद्रास्फीति को काबू में लाने के लिये अपना प्रयास जारी रखेगा, जबकि बजट में आर्थिक वृद्धि खासकर रोजगार बढ़ाने वाली वृद्धि तथा निर्यात को बढ़ावा देने वाले उपायों पर विशेष गौर किया जाना चहिए।" रिजर्व बैंक के आंकड़ों के अनुसार, चालू खाते का घाटा मौजूदा वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही में 36.4 अरब डॉलर यानी जीडीपी का 4.4 प्रतिशत पर पहुंच गया, जो पहली तिमाही अप्रैल-जून में 18.2 अरब डॉलर यानी जीडीपी का 2.2 प्रतिशत था। कैड मुख्य रूप से वस्तुओं और सेवाओं के कुल निर्यात और आयात मूल्य का अंतर है। हालांकि, इसमें शुद्ध आय और (ब्याज और लाभांश आदि) तथा विदेशों से अंतरण (विदेशी सहायता आदि) भी शामिल होता है लेकिन इनकी हिस्सेदारी काफी कम होती है।

NEWS इन ब्रीफ

लैम्बॉर्गिनी का भारत में 100 कार बेचने का सपना

नई दिल्ली। इटली की कार कंपनी ऑटोमोबिली लैम्बॉर्गिनी का इस साल भारत में 100 कार बेचने का सपना है। कंपनी के भारत में प्रमुख शरद अग्रवाल ने इस लक्ष्य की जानकारी दी। उन्होंने कहा पिछले साल 2022 में कंपनी ने भारतीय बाजार में अपनी रिकॉर्ड बिक्री हासिल की है। कंपनी भारतीय बाजार में सुपर लग्जरी कारों की श्रृंखला की बिक्री करती है। अग्रवाल ने कहा इनकी कीमत 3.8 करोड़ रुपये से शुरू होती है। कंपनी इस साल भारतीय बाजार में पहली हाइब्रिड कार भी ला रही है। उन्होंने कहा कि लैम्बॉर्गिनी ने भारत में 2022 में 92 इकाइयों की रिकॉर्ड बिक्री दर्ज की है। यह इससे पिछले साल की तुलना में 33 प्रतिशत अधिक है। कंपनी ने 2021 में भारत में 69 सुपर लग्जरी कार बेची थीं।

स्क्रीनशॉट एडिटिंग टूल को बंद करेगी गूगल

नई दिल्ली। टेक कंपनी गूगल कथित तौर पर अपने क्रोम के स्क्रीनशॉट एडिटिंग फीचर को बंद करने जा रही है। एंड्रॉइड पुलिस की रिपोर्ट के अनुसार, टेक दिग्गज ने एक साल से अधिक समय पहले डेस्कटॉप ब्राउजर में सीधे स्क्रीनशॉट संपादित करने के लिए एक टूल विकसित करना शुरू किया था। रिपोर्ट में उल्लेख किया गया है कि महीनों के विकास के बाद, यह सुविधा, जिसे पहली बार क्रोम कैनरी सीजन 98 में पेश किया गया था, ऐसा लगता है कि सभी उपयोगकताओं के लिए सुलभ उपकरण के रूप में इसके फीचर फ्लैग के बाहर जारी किया जाना था। इस सप्ताह की शुरूआत में किए गए क्रोमियम परिवर्तनों के अनुसार, स्क्रीनशॉट टूल के कम से कम अपने वर्तमान स्वरूप में गायब होने की उम्मीद है।

अब पेंट कारोबार में भी उतरेगा जेके सीमेंट ग्रुप

कानपुर। देश में आत्मनिर्भर भारत की कड़ी को आगे बढ़ाते हुए सीमेंट उद्योग जगत में तेजी से अपने कारोबार को बढ़ाने के लिए अग्रणी जे.के व्हाइट सीमेंट आगामी वित्तीय वर्ष के शुभारम्भ के साथ ही अप्रैल माह से अब पेंट कारोबार में कदम रखने जा रहा है। इसके शुभारम्भ होने से रोजगार के अवसर बढ़ने के साथ ही देश की अर्थव्यवस्था भी मजबूत होगी। यह जानकारी देते हुए जेके सीमेंट कम्पनी के स्टेट हेड आशीष सिंह व कानपुर के सुपर स्टॉकिस्ट सौरभ कपूर ने रविवार को हिन्दुस्थान समाचार प्रतिनिधि से बताया कि कानपुर शहर एवं देहात से लगभग साढ़े चार सौ से अधिक डीलर्स अप्रैल माह में होने वाले जे.के सीमेंट डीलर मीट मीट में शामिल होंगे। उन्होंने बताया कि अपने ग्राहकों से अपने पहले से लॉन्च सीमेंट एवं वॉल पुट्टी के जैसे ही अब तक जेके वॉल पेंट को सराहने की अपील की है।

उद्योग मंत्री पीयूष गोयल का वैश्विक स्टार्टअप इकोसिस्टम को मजबूत करने का आह्वान

एजेंसी। नई दिल्ली

केंद्रीय वाणिज्य और उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने वैश्विक स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करने के लिए परामर्शदाताओं, निवेशकों और उद्यमियों के अंतर्राष्ट्रीय नेटवर्क निर्माण का आह्वान किया। मंत्री ने कहा कि इस नेटवर्क को स्टार्टअप्स को समर्थन और प्रेरित करना चाहिए, विचारों के आदान-प्रदान, सर्वोत्तम प्रथाओं और वित्त पोषण तंत्र की सुविधा के लिए एक टीम के रूप में कार्य करना चाहिए और अनुसंधान और विकास में सहयोग को बढ़ावा देना चाहिए। केंद्रीय मंत्री हैदराबाद में जी20 के स्टार्टअप 20 एंगेजमेंट ग्रुप की इंसेप्शन मीटिंग के उद्घाटन सत्र को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि नवोन्मेष का समर्थन करना केवल अलग-अलग राष्ट्रों की भूमिका नहीं है और यह भी कहा कि दुनिया के सभी हिस्सों में स्टार्टअप इकोसिस्टम को विकसित करने के वैश्विक प्रयास को पोषित करने के लिए विश्व राष्ट्रों की सामूहिक जिम्मेदारी होनी चाहिए, इस प्रकार वैश्विक चुनौतियों का

समाधान करने के लिए समावेशी, सहायक और टिकाऊ वैश्विक स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करना। गोयल ने कहा कि जी20 के मेजबान देश के रूप में वैश्विक स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र की प्रगति और क्षमता को उजागर करने पर भारत को गर्व है। उन्होंने कहा कि नवाचार पर भारत के विशेष ध्यान के हिस्से के रूप में पहली बार भारत की जी20 अध्यक्षता के तहत स्टार्टअप20 समूह की स्थापना की गई थी। मंत्री ने विश्वास व्यक्त किया कि नवाचार सबसे मजबूत स्तंभ होगा जो अमृतकाल में एक विकसित भारत के निर्माण में मदद करेगा। उन्होंने कहा कि नवाचार अर्थव्यवस्था और सामाजिक और सार्वजनिक भलाई के लिए एक उत्प्रेरक शक्ति रहा है। उन्होंने कहा, आज की दुनिया में नवाचार केवल आर्थिक उद्देश्यों को प्राप्त करने से परे है क्योंकि यह सामाजिक समावेश और पर्यावरणीय स्थिरता पर भी विचार करता है। गोयल ने कहा कि दुनिया जलवायु परिवर्तन से लेकर गरीबी और असमानता जैसी कई वैश्विक चुनौतियों का सामना कर रही है। उन्होंने अपना ध्ढ़ विश्वास व्यक्त किया कि नवाचार इन समस्याओं को हल करने का मार्ग प्रशस्त कर सकता है। मंत्री ने कहा कि भारतीय स्टार्टअप संदर्भ में हमारे उद्यमी इन चुनौतियों से सीधे निपटने के लिए अपनी रचनात्मकता और प्रतिभा का उपयोग कर रहे हैं। उन्होंने समस्याओं से निपटने और सामाजिक नवाचार को पुनर्परिभाषित करके भारत में समावेशी विकास सुनिश्चित करने के साधन के रूप में काउइन, यूपीआई और ओएनडीसी जैसे डिजिटल सार्वजनिक सामानों के उदाहरणों का हवाला दिया। मंत्री ने कहा कि टीयर 2 और 3 बाजारों से बढ़ती भागीदारी, जो तेजी से नवीनतम तकनीक को अपना रहे हैं, ने भारत में स्थानीय स्टार्टअप्स के लिए नए विचारों को सफल बनाने के लिए लिफाफे को आगे बढ़ाया है। जी-20 के माध्यम से, भारत हमारी विशेषज्ञता को स्थानांतरित करने की कोशिश कर रहा, इसलिए इंडियास्टैक ग्लोबलस्टैक होगा और तकनीक को आम आदमी तक ले जाने में मदद करने के लिए लोगों द्वारा प्रौद्योगिकी का उपयोग करने के तरीके को बदल देगा। उन्होंने कहा कि विकासशील देशों को खुद को कम लागत, आउटसोर्स सॉफ्टवेयर और सहायक सेवाओं के लिए वैश्विक तकनीक और नवाचार केंद्र बनने के लिए बदलना चाहिए। उन्होंने इस बात पर भी प्रकाश डाला कि भारत 7 वर्षों में 41 स्थानों की बड़ी छलांग लगाते हुए डब्ल्यूआईपीओ के ग्लोबल इनोवेशन इंडेक्स (जीआईआई) में 40वें स्थान पर पहुंच गया है।

नई आबकारी नीति के तहत 45,000 करोड़ रुपए का राजस्व जुटाने का लक्ष्य

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में योगी आदित्यनाथ सरकार ने नई आबकारी नीति को मंजूरी दे दी है, जिसमें शराब और बीयर की दुकानों की लाइसेंस फीस में 10 फीसदी की बढ़ोतरी की गई है। सरकार ने अगले वित्त वर्ष 2023-24 में आबकारी विभाग से करीब 45,000 करोड़ रुपए का राजस्व जुटाने का लक्ष्य रखा है, जो पिछले साल के लक्ष्य से 5000 करोड़ रुपए अधिक है। आबकारी नीति में किए गए इन प्रावधानों से देशी, अंग्रेजी और प्रीमियम ब्रांड की शराब के दाम 5-10 रुपए तक बढ़ सकते हैं। नई आबकारी नीति के तहत मॉडल दुकानों की लाइसेंस फीस दो लाख से बढ़ाकर तीन लाख कर दी गई है, जिसका मतलब है कि ऐसे में लोगों को शराब पीने के लिए अधिक कीमत चुकानी पड़ सकती है। गोदामों की लाइसेंस फीस और सिक्योरिटी फीस भी बढ़ा दी गई है। लखनऊ नगर निगम क्षेत्र की परिधि में पांच किलोमीटर तक स्थित होटल, रेस्टोरेंट और क्लब की लाइसेंस फीस भी बढ़ा दी गई है।

नीदरलैंड बना भारत का तीसरा सबसे बड़ा निर्यात गंतव्य

नई दिल्ली। पेट्रोलियम उत्पादों, इलेक्ट्रॉनिक सामान, रसायन और एल्युमीनियम सामान की वजह से चालू वित्त वर्ष के पहले नौ माह (अप्रैल-दिसंबर) में नीदरलैंड, भारत का तीसरा सबसे बड़ा निर्यात गंतव्य बनकर उभरा है। भारत का सबसे बड़ा निर्यात गंतव्य अमेरिका है। वहीं संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) दूसरे नंबर पर आता है। नीदरलैंड के साथ भारत का व्यापार अधिशेष भी 2017 के 1.5 अरब डॉलर से बढ़कर 2022 में 12.3 अरब डॉलर हो गया है। वाणिज्य मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार, नीदरलैंड ने भारत के निर्यात बाजार के रूप में ब्रिटेन, हांगकांग, बांग्लादेश और जर्मनी को पीछे छोड़ दिया है। अप्रैल-दिसंबर, 2022 के दौरान नीदरलैंड को भारत का निर्यात लगभग 69 प्रतिशत बढ़कर 13.67 अरब डॉलर पर पहुंच गया, जबकि पिछले वर्ष की समान अवधि में यह आंकड़ा 8.10 अरब डॉलर रहा था।

सेंसेक्स में कंपनियों को 2.16 लाख करोड़ का घाटा, रिलायंस-एसबीआई को ज्यादा नुकसान

एजेंसी। नई दिल्ली

सेंसेक्स की शीर्ष 10 में से सात कंपनियों के बाजार पूंजीकरण (मार्केट कैप) में बीते सप्ताह सामूहिक रूप से 2,16,092.54 करोड़ रुपए की गिरावट आई। सबसे अधिक नुकसान रिलायंस इंडस्ट्रीज और भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) को हुआ। बीते सप्ताह बीएसई का 30 शेयरों वाला सेंसेक्स 1,290.87 अंक या 2.12 प्रतिशत नीचे आया। इनके अलावा एचडीएफसी बैंक, इन्फोसिस, आईसीआईसीआई बैंक, एचडीएफसी और भारती एयरटेल के बाजार पूंजीकरण में भी गिरावट आई। वहीं दूसरी ओर टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस), हिंदुस्तान यूनिलीवर और आईटीसी का बाजार मूल्यांकन बढ़ गया। समीक्षाधीन सप्ताह में रिलायंस इंडस्ट्रीज का बाजार पूंजीकरण 71,003.2 करोड़ रुपए घटकर 15,81,601.11 करोड़ रुपए रह गया। सबसे अधिक नुकसान रिलायंस इंडस्ट्रीज को ही हुआ। एसबीआई की बाजार हैसियत

46,318.73 करोड़ रुपए घटकर 4,82,107.53 करोड़ रुपए रह गई। आईसीआईसीआई बैंक का बाजार मूल्यांकन 36,836.03 करोड़ रुपए के नुकसान के साथ 5,70,509.34 करोड़ रुपए पर आ गया। एचडीएफसी बैंक का बाजार पूंजीकरण 24,899.93 करोड़ रुपए घटकर 9,01,287.61 करोड़ रुपए और भारती एयरटेल का 23,747.55 करोड़ रुपए के नुकसान से 4,31,583.22 करोड़ रुपए रह गया। एचडीएफसी के बाजार मूल्यांकन में 10,257.28 करोड़ रुपए की गिरावट आई और यह 4,85,809.79 करोड़ रुपए पर आ गया। इन्फोसिस की बाजार हैसियत 3,029.82 करोड़ रुपए घटकर 6,38,891.87 करोड़ रुपए रह गई।

इस रुख के उलट टीसीएस का बाजार मूल्यांकन 17,837.88 करोड़ रुपए बढ़कर 12,47,882.88 करोड़ रुपए पर पहुंच गया। हिंदुस्तान यूनिलीवर की बाजार हैसियत 14,931.65 करोड़ रुपए बढ़कर 6,13,689.74 करोड़ रुपए हो गई। आईटीसी का मूल्यांकन 13,591.48 करोड़ रुपए की बढ़ोतरी के साथ 4,29,031.46 करोड़ रुपए रहा। शीर्ष 10 कंपनियों की सूची में रिलायंस इंडस्ट्रीज पहले स्थान पर कायम रही। उसके बाद क्रमशः टीसीएस, एचडीएफसी बैंक, इन्फोसिस, हिंदुस्तान यूनिलीवर, आईसीआईसीआई बैंक, एचडीएफसी, एसबीआई, भारती एयरटेल और आईटीसी का स्थान रहा।

सेमीकंडक्टर की कमी की वजह से मारुति का उत्पादन अब भी प्रभावित

नई दिल्ली। सेमीकंडक्टर की आपूर्ति अब भी समस्या बनी हुई है जिसके चलते मारुति सुजुकी इंडिया (एमएसआई) का उत्पादन प्रभावित हो रहा है। कंपनी के मुख्य वित्त अधिकारी (सीएफओ) अजय सेठ ने यह बात कही है। इस स्थिति से निपटने के लिए वाहन क्षेत्र की दिग्गज कंपनी अब इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की उपलब्ध आपूर्ति से अपने उत्पादन को अधिकतम करने के तरीकों पर काम कर रही है। हालांकि, इस वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही की तुलना में 31 दिसंबर, 2022 को समाप्त तीसरी तिमाही में आपूर्ति की स्थिति में सुधार हुआ है लेकिन देश की सबसे बड़ी कार कंपनी सेमीकंडक्टर की कमी के कारण अक्टूबर-दिसंबर की अवधि में लगभग 46,000 इकाइयों का उत्पादन नहीं कर सकी है। सेठ ने एक विश्लेषक कॉल में कहा, इलेक्ट्रॉनिक कलपुर्जों की कमी हमारी उत्पादन योजना के लिए चुनौती है। कलपुर्जों की कमी अब भी हमारे उत्पादन को प्रभावित कर रही है। उन्होंने कहा कि इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की आपूर्ति की स्थिति अब भी दुरुस्त नहीं हुई है।

आटे ने बढ़ाई सरकार की टेंशन एक साल में 40 %तक दाम बढ़े

एजेंसी। नई दिल्ली

पड़ोसी देश पाकिस्तान में आटा संकट के बीच भारत में भी इसकी कीमत आसमान छूने लगी है। जनवरी महीने में आटे के दाम दो बार बढ़ चुके हैं। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक खुले में आटा 38 रुपए प्रति किलो बिक रहा है, जबकि पैक में इसकी कीमत 45-55 रुपए प्रति किलो है। रिपोर्ट के मुताबिक आटा के दामों में पिछले साल की तुलना में 40% तक की बढ़ोतरी हुई है। जनवरी 2022 में खुले में आटा की कीमत 25-27 रुपए प्रति किलो था, जबकि पैक में ब्रांडेड आटा 35 रुपए किलो बिक रहा था। निर्यात पर पाबंदी के बावजूद लगातार बढ़ रहे गेंहू और आटे की कीमत ने टेंशन बढ़ा दी है। दुनियाभर में गेहूं के कुल उत्पादन में दूसरे नंबर पर होने के बावजूद भारत में आटा के दामों में क्यों बढ़ोतरी हो रही है? आइए

विस्तार से जानते हैं। मैदा और सूजी के दामों में भी बढ़ोतरी तेजी से हो रही है यानी महंगाई भी बढ़ रही है, जिससे आम लोगों के किचन का बजट गड़बड़ा सकता है। प्रधानमंत्री कल्याण योजना के तहत मिल रहे मुफ्त राशन में पहले गेहूं और चावल बराबर मात्रा में दिया जा रहा था, लेकिन गेहूं की कीमत में बढ़ोतरी के बाद कई राज्यों में गेहूं नहीं या कम दिया जा रहा है। गेहूं उत्पादन में भारत दुनिया में दूसरे नंबर का देश है। उत्तरप्रदेश, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात और बिहार प्रमुख गेहूं उत्पादक राज्य हैं, लेकिन जलवायु परिवर्तन की वजह से गेहूं उत्पादन में 2021-22 में कमी आई। 2022 का मार्च महीना पिछले 122 सालों में सबसे गर्म था। मौसम विभाग के मुताबिक 2022 के मार्च में देश का औसत अधिकतम तापमान 33.10 डिग्री सेल्सियस था, जबकि औसत न्यूनतम तापमान 20.24 डिग्री था।

हौसला झारखंड के दंपति ने छोड़ी कॉरपोरेट की नौकरी, बने मॉडल किसान

सिंचाई के लिए ऐप का करते हैं इस्तेमाल

शंभु नाथ चौधरी

रांची। हजारीबाग के चुरचू निवासी बैंक मैनेजर विनोद कुमार और मल्टीनेशनल कॉरपोरेट कंपनी में काम करने वाली उनकी पत्नी राधिका कुमारी ने नौकरियां छोड़कर खेती-किसानी में सफलता की शानदार कहानी लिख दी है। नाबार्ड और इफको किसान जैसी संस्थाएं उनकी कामयाबी से प्रभावित हैं। इन संस्थाओं ने उन्हें झारखंड में ऑटोमेटेड इरिगेशन सिस्टम के पायलट प्रोजेक्ट के लिए चुना है। ये राज्य के इकलौते किसान बन गए हैं, जो मोबाइल ऐप के जरिए कहीं दूर बैठकर भी अपने खेतों में लगी फसलों की सिंचाई कर लेते हैं। इनके खेतों में तरबूज, खीरा, करेला से लेकर नेनुआ तक की बंपर फसल हो रही है। इनकी उगाई सैकड़ों टन

सब्जियां देश के दूसरे राज्यों से लेकर देश की सरहद के बाहर बांग्लादेश तक पहुंच रही हैं। वर्ष 2020 में कोविड काल में जब चारों तरफ मायूसियां पसरी हुई थीं और जिंदगी से लेकर करियर तक को लेकर हर किसी के दिलो-दिमाग पर आशंकाएं-अनिश्चितताएं हावी थीं, तब अपने घर से सैकड़ों किलोमीटर दूर महाराष्ट्र के पुणे में मल्टीनेशनल्स की नौकरियों में मशरूफ इस दंपति के लिए सब कुछ एक झटके में छोड़कर गांव लौटने का फैसला कतई आसान नहीं था। घर लौटते हुए इनके जेहन में सिर्फ एक बात थी कि एक जिंदगी गांव में भी है। यहां कुछ कर लिया तो पैसा भले कम-ज्यादा आए, लेकिन उसकी तुलना में जो सुख और सुकून मिलेगा वह सबसे बेशकीमती होगा। कहने की जरूरत नहीं कि सिर्फ दो-ढाई साल में इस दंपति के दिल की वो आवाज आज गांव की सरजमीं पर सफलता का सरगम बनकर गूंज रही है। विनोद का गांव हजारीबाग जिले के चुरचू प्रखंड अंतर्गत हरहद में है। उन्होंने तय किया कि नई तकनीकों के साथ खेती में हाथ आजमाया जाए। गांव में अपनी जमीन कुछ खास नहीं थी। उन्होंने रबोध गांव के दरहवा और कुसुमडीह में 18 एकड़ ऐसी जमीन दस साल के लिए लीज पर ली, जिसे आम तौर पर बंजर माना जाता था। इस जमीन साल में सात-आठ महीने परती रहती थी। थोड़े रिसर्च और कृषि वैज्ञानिकों से चर्चा के बाद उन्होंने यहां तरबूज की खेती शुरू की। सिंचाई के लिए टपक विधि अपनाई और वर्ष 2021 में पहले ही साल उन्होंने 150 टन तरबूज उगाया।

पब्लिक प्रॉविडेंट फंड में निवेश को सालाना 3 लाख रुपये करने का सुझाव

नई दिल्ली। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण इसी हफ्ते बुधवार एक फरवरी 2023 को मोदी सरकार के दूसरे कार्यकाल का आखिरी पूर्ण बजट पेश करने जा रही हैं। स्टेकहोल्डर्स ने वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण को बजट से जुड़े अपने सुझावों और मांगों की फेहरिस्त सौंप दी है। चार्टर्ड अकाउंटेंट की संस्था आईसीएआई ने भी वित्त मंत्री को अपने सुझावों की फेहरिस्ट सौंपी है। इंस्टीच्युट ऑफ चार्टर्ड अकाउंटेंट ने वित्त मंत्री को पब्लिक प्रॉविडेंट फंड में निवेश की सीमा को मौजूदा 1.5 लाख रुपये से बढ़ाकर 3 लाख रुपये करने का सुझाव दिया है। आईसीएआई के मुताबिक पीपीएफ डिपॉजिट स्कीम में निवेश की लिमिट को बढ़ाना बेहद जरुरी है क्योंकि ऐसे लोग जो खुद के स्वरोजगार से जुड़े हैं उनके लिए पीपीएफ टैक्स बचाने के लिए सुरक्षित और शानदार रिटर्न देने वाली सेविंग स्कीमों में से एक है। पीपीएफ में निवेश की लिमिट में लंबे समय से बदलाव नहीं किया गया है।

एफपीओ सामान्य रूप से चलेगा कीमतें नहीं घटाई जाएंगी : अडानी

एजेंसी। नई दिल्ली

अडानी ग्रुप ने हिंडनबर्ग रिसर्च की रिपोर्ट से नहीं डरने का ऐलान कर दिया है। इस अमेरिकी रिसर्च कंपनी की समूह के बारे में जारी की गई एक रिपोर्ट ने बीते कुछ दिनों में बड़ा भूचाल लाया है। इसके चलते अडानी एंटरप्राइजेज के फॉलो-ऑन पब्लिक ऑफर को लेकर निवेशकों के बीच आशंकाएं बनी हुई हैं लेकिन अब समूह ने इस एफपीओ को लेकर बड़ी घोषणा की है। अरबपति उद्योगपति गौतम अडानी की अगुवाई वाले अडानी समूह ने अडानी एंटरप्राइजेज के एफपीओ की निर्धारित कीमतों, सेल की तारीखों या इसमें किसी और तरह के बदलाव से शनिवार को इंकार कर दिया। अमेरिकी फाइनेंस रिसर्च कंपनी हिंडनबर्ग रिसर्च की रिपोर्ट आने के बाद अडानी एंटरप्राइजेज समेत समूह की लगभग सभी लिस्टेड कंपनियों के शेयरों में बड़ी गिरावट दर्ज की गई है। इस पर प्रतिक्रिया देते हुए

अडानी ग्रुप के प्रवक्ता ने कहा, ह्यअडानी एंटरप्राइजेज लिमिटेड का एफपीओ निर्धारित समय और घोषित मूल्य दायरे के अनुसार चल रहा है। इसके शेयर प्राइस बैंड में कोई बदलाव नहीं हुआ है। बैंकरों और निवेशकों सहित हमारे सभी स्टेकहोल्डर्स को कंपनी के एफपीओ पर पूरा भरोसा है। हम एफपीओ की सफलता को लेकर बेहद आश्वस्त हैं। हिंडनबर्ग रिसर्च की रिपोर्ट को अडानी समूह ने दुर्भावनापूर्ण और फर्जी बताया है। कंपनी का कहना है कि ये रिपोर्ट उसके एफपीओ को नाकाम करने के इरादे से लाई गई है।

अडानी पर शनि और राहु भारी

नई दिल्ली। देश का मशहूर उद्योगपति इन दिनों चर्चा में हैं और चर्चा महज दो दिन में उनकी कंपनी का मार्केट कैप 4 लाख करोड़ रूपए कम होने के कारण है। पिछले दो दिन से अडानी समूह की 10 कंपनियों के शेयरों में ताबड़ तोड़ बिकवाली हो रही है। यह बिकवाली अमरीका के एक कंपनी हिंडनबर्ग की रिपोर्ट के बाद शुरू हुई। यह गिरवाट इतनी तेजी से आ रही है कि निवेशकों को अपने शेयर बेचने तक का मौका नहीं मिल रहा है और कई कंपनियों के शेयर दो दिन में पचीस फीसदी से ज्यादा टूट गए हैं मतलब दो दिन में एक चौथाई कंपनी साफ। मेरी खुद की हिस्ट्री बिजनेस जर्नलिज्म से जुड़ी रही है और पिछले करीब सोलह साल से एस्ट्रॉलजी का स्टूडेंट होने के कारण भी दिमाग में एक बार तो सवाल आया कि आखिर ऐसा क्या हुआ कि एक महीने पहले दुनिया के तीसरे सबसे अमीर शख्स बने अडानी महीने में ही औंधे मुंह आ गिरे और अब यहां से वह क्या उठ पाएंगे और यदि उठेंगे तो कब तक उठेंगे।

कृत्रिम विवशता से बचें

धनबाद के हाजरा अस्पताल की घटना महज घटना नहीं बल्कि सीधा लापरवाही का नमूना है। ऐसे में हम अगर सजग नहीं होंगे तो आगामी दुर्घटनाओं के लिए हमें तैयार रहना पड़ेगा। बहरहाल आग लगने से डॉक्टर दंपत्ति सहित पांच लोगों की मौत हो गई। ऐसे में सवाल उठता है कि इतनी बड़ी घटना का जवाबदेह कौन है? बताया जाता है कि शार्ट सर्किट के कारण यह भयानक मंजर हुआ। इस तरह अब हम-सब को अपनी सुरक्षा लिए खुद जागरूक होना पड़ेगा। इस मामले में देखा गया कि हॉस्पिटल के गार्ड की सूचना के बाद भी फायर ब्रिगेड की गाड़ियां विलंब से पहुंची। ऐसे में सवाल का उठना स्वभाविक है कि आखिर विलंब क्यों हुआ? हालांकि जिला प्रशासन ने हादसे के कारणों की जांच शुरू कर दी है। इस मामले में हॉस्पिटल के प्रबंधक की बात सच मान ली जाये कि आग शॉर्ट सर्किट से लगी। ऐसे में प्रबंधक को यह जवाब तो देना पड़ेगा कि उनकी जवाबदेही में कहीं न कहीं चूक अवश्य थी। तभी तो इतनी बड़ी घटना घटी। खैरियत यह कि 250 बेड वाले हॉस्पिटल में भर्ती सभी मरीजों को सकुशल निकाल लिया गया। हादसे के वक्त यहां दो दर्जन के करीब मरीज और उनके परिजन मौजूद थे। ये सभी हॉस्पिटल के नीचे की मंजिल पर थे। मध्य रात्रि को लगी आग दूसरी मंजिल से शुरू हुई थी, जो पहले स्टोर रूम और उसके बाद पूरे हॉस्पिटल में फैल गई । ऐसे में सवाल उठता है कि आग की लपटें तीसरी मंजिल और नीचे की ओर क्यों नहीं आई। कहा जाता है कि नीचे की मंजिल के लोगों को यहां आग फैलने से पहले ही निकाल लिया गया। क्या इस बात पर विश्वास किया जा सकता है। हालांकि जांच एजेंसियां जांच कर कर रही हैं। मामले का पटाक्षेप बहुत जल्द होने की संभावना से भी इनकार नहीं किया जा सकता है। लेकिन यह सच है कि समय पर मृतकों को अगर मदद मिलती तो उनकी जांच बच सकती थी। बहरहाल हम सब एक ऐसी मंजिल की तरफ बढ़ रहे हैं जहां निरंतर पड़ाव दर-पड़ाव है। जो भी हालात हैं उसे समझना होगा कि कृत्रिम विवशताओं से परहेज भी आवश्यक है। हॉस्पिटल के संचालक डॉ. विकास और उनका पूरा परिवार इमारत की दूसरी और तीसरी मंजिल पर रहता था। हादसे के वक्त सभी लोग सो रहे थे। डॉ. विकास को जब आग फैलने का अहसास हुआ, तो उन्होंने बाथरूम में जाकर जान बचाने की कोशिश की। वह बाथरूम की खिड़की से बचाओ-बचाओ का शोर मचा रहे थे। बताया जाता है कि सभी लोगों की मौत धुएं से दम घुटने की वजह से हुई। डॉ. विकास खुद को बचाने के लिए बाथरूम के बाथ टब में बैठ गये थे। उन्हें जब बाहर निकाला गया तो उनकी सांसें चल रही थीं, लेकिन मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल ले जाने के दौरान उन्होंने दम तोड़ दिया।

हॉस्पिटल के गार्ड की सूचना के बाद भी फायर ब्रिगेड की गाड़ियां विलंब से पहुंची। आखिर क्यों? हालांकि जिला प्रशासन ने हादसे के कारणों की जांच शुरू कर दी है। उम्मीद है, ईमानदार जांच रिपोर्ट आएगी...

टूटे आईने में सही शक्ल कभी नहीं दिखती

सनातन धर्म पर स्वामी विवेकानंद द्वारा शिकागो में हुए सन् 1893 की विश्व धर्मसभा में दिया गया यह भाषण कि 'मुझे गर्व है कि मैं उस धर्म से हूं, जिसने दुनिया को सहिष्णुता और सार्वभौमिक स्वीकृति का पाठ पढ़ाया है, हम सिर्फ.सार्वभौमिक सहिष्णुता पर ही विश्वास नहीं करते, बल्कि हम सभी धर्मों को सच के रूप में स्वीकार करते हैं। मुझे गर्व है कि मैं उस देश से हूं, जिसने सभी धर्मों और सभी देशों के सताए गए लोगों को अपने यहां शरण दी। फल से ही वृक्ष का परिचय होता है। जब मैं देखता हूं कि जिन लोगों को मूर्ति पूजक कहा जाता है, उन लोगों में ऐसे मनुष्य भी होते हैं, जिनकी तरह नीतिज्ञान, आध्यात्मिकता और प्रेम मैंने और कहीं नहीं देखा, तब मेरे मन में यह प्रश्न जागता है कि 'पाप से क्या कभी पवित्रता जन्म ले सकती है?' सच में आज की तारीख में स्वामी विवेकानंद से उद्भट विद्वान सनातन को जानने वाला भारत ही नहीं, शायद विश्व में कोई दूसरा नहीं है। हमारा सनातन धर्म सृष्टि को धारण करने वाला है। अधर्म सदा विनाश करता है। हम अपनी रक्षा के लिए ही धर्म की रक्षा करते हैं। धर्म हमारा रक्षक है। हम उसकी रक्षा नहीं करेंगे, तो हमारी रक्षा कौन करेगा। स्वामी विवेकानंद किसी प्रकार के नोट बनाकर व्याख्यान नहीं देते थे वरन अपने वक्तव्य का विषय वे धारावाहिक ढंग से व्यक्त करते थे और उनकी अपूर्व कौशल तथा एकांतिकता के साथ वे मीमांसा करते थे। अंतर की गंभीर प्रेरणा उनकी वाग्मिता को पूर्व ढंग से सार्थक कर देती है। शिकागो का श्रेष्ठ अखबार 'हेराल्ड' लिखता है: धर्मसभा में विवेकानंद ही निर्विरोध रूप से सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति हैं। उनका भाषण सुनकर हम समझ सकते हैं कि इस शिक्षित जाति में धर्मप्रचारक भेजना कितनी निर्बुद्धता का काम है।

पता नहीं जिस सनातन धर्मध्वज को स्वामी विवेकानंद ने विश्व के अब तक के सर्वश्रेष्ठ धर्ममहासभा शिकागो में फहराया था, आज उन्हीं के भारत में ऐसा लगता है, मानो सनातन धर्म अनाथ हो गया है। स्वयं अपने ही अपने हाथों अपनी उस धर्मध्वजा की मर्यादा को तार-तार करने में लग गए हैं। सनातन धर्म की आलोचना समाज का अदना-सा व्यक्ति करता तो भारतीय समाज अपनी उदारता के कारण उसे क्षमा कर देता और यह माना जाता कि आलोचक अपना प्रचार पाने के उद्देश्य से आज के युग में अपनी महत्ता को प्रमाणित करना चाहता है। लेकिन, यदि समाज का कोई शीर्ष पर बैठा शख्स उस मर्यादा का उल्लंघन करके अपने ही सनातन धर्म की आलोचना सार्वजनिक मंच से करने लग जाए, तो उसके लिए क्या कहा जा सकता है? उसे उत्तर देने के लिए आज भारतीय समाज में कोई दूसरा स्वामी विविकानंद तो हैं नहीं। फिर इस अनावश्यक दुष्प्रचार का निदान कैसे हो? पिछले कुछ दिन से ऐसे तथाकथित शीर्षस्थ आलोचकों की जैसे बाढ़ आ गई है, जो अपने सनातन धर्म को आघात पहुंचकर, अपमानित करके हो सकता है अपना उल्लू सीधा करना चाहते हैं। अभी पिछले दिनों नई दिल्ली में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ प्रमुख मोहन भागवत ने समलैंगिक विवाहों को कानूनी मान्यता देने के संबंध में विभिन्न उच्च न्यायालयों में लंबित याचिकाओं को स्थानांतरित करनेवाले सुप्रीम कोर्ट के आड़े आने के बाद एक प्रमुख घटनाक्रम में समलैंगिक लोगों के लिए गरिमा और स्वायत्तता का समर्थन किया। उन्होंने जरासंध के दो सेनापतियों हंस-डिम्भक का उदाहरण देते हुए कहा कि दोनों में उसी तरह (समलैंगिक) रिश्ते थे। पत्रकार संदीप देव संघ प्रमुख मोहन भागवत एवं संघ विचारधारा की पत्रिका पांचजन्य और आगेर्नाइजर उनके संपादक हितेश शंकर तथा प्रफुल्ल केतकर के खिलाफ 23 जनवरी को दिल्ली के बिंदापुर थाने में हिंदू की धार्मिक भावना को आहत करने की आईपीसी धारा 295 ए के तहत शिकायत दर्ज कराई है। बिंदापुर थाना, दिल्ली में दर्ज शिकायत में कहा गया है कि छद्म महाभारत-पुराण में वर्णित दो शिवांश भाईयों हंस-डिम्भक को समलैंगिक कहने और भगवान श्रीकृष्ण को अफवाहबाज बताने के कारण शिकायत दर्ज कराई गई है। बिहार के शिक्षमंत्री चंद्रशेखर ने कहा, 'मनुस्मृति में समाज की 85 फीसदी आबादी वाले बड़े तबके के खिलाफ गालियां दी गईं। रामचरितमानस के उत्तर कांड में लिखा है कि नीच जाति के लोग शिक्षा ग्रहण करने के बाद सांप की तरह जहरीले हो जाते हैं। यह समाज में नफरत के बीज बोने वाले ग्रंथ हैं। एक युग में मनुस्मृति, दूसरे युग में रामचरितमानस, तीसरे युग में गुरु गोवलकर का बंच ऑफ थॉट, ये सभी देश-समाज को नफरतों के खाके में बांटते हैं। नफरत देश को कभी महान नहीं बनाएगी। देश को महान केवल मोहब्बत ही बनाएगी।' उत्तर प्रदेश से समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता और प्रदेश के पूर्व कैबिनेट मंत्री स्वामी प्रसाद मौर्य भी रामचरितमानस के कुछ हिस्सों पर यह कहते हुए मांग की है कि उनसे समाज के एक बड़े तबके का जाति, वर्ण और वर्ग के आधार पर अपमान होता है। मौर्य ने कहा कि धर्म का वास्तविक अर्थ मानवता के कल्याण और उसकी मजबूती से हैं। अगर रामचरितमानस की कुछ पंक्तियों के कारण समाज एक वर्ग का जाति, वर्ण के आधार पर अपमान होता है, तो निश्चित रूप से यह धर्म नहीं, अधर्म है। अब समझने का प्रयास करते हैं कि यदि सनातन धर्म को परिभाषित किया जाए तो वह क्या होगा- 'सनातन धर्म को हिंदू धर्म के वैकल्पिक नाम से भी जाना जाता है। वैदिक काल में भारतीय उपमहाद्वीप के धर्म के लिए सनातन धर्म नाम मिलता है। 'सनातन' का अर्थ है- शाश्वत या 'सदा बना रहने वाला', यानी जिसका न आदि है, न अंत। विभिन्न कारणों से हुए भारी धर्मांतरण के उपरांत भी विश्व के इस क्षेत्र की बहुसंख्यक जनसंख्या इसी धर्म में आस्था रखती है। अब यदि सनातन धर्म की इस परिभाषा को समाज मानता है, तो फिर उपरोक्त जिन लोगों ने सनातन समाज पर दुराग्रहपूर्ण आरोप लगाया है, उसका निदान क्या हो। सच तो यह है कि जिन लोगों ने ऐसी आलोचनाएं फैलाने का प्रयास किया है, निश्चित रूप से वे समाज से जुड़े हुए हैं और उनकी मंशा अपने भावी भविष्य से प्रेरित है। तो क्या यह मान लिया जाए कि अपने स्वार्थ के लिए समाज के ये 'प्रबुद्ध' लोग निजी स्वार्थ के लिए समाज को बांटना चाहते हैं? वैसे, ऐसे कुछ नेताओं ने अपने वक्तव्य के लिए समाज से माफी तो मांग ली है, लेकिन क्या महज इतने से ही समाज फिर से जुड़ जाएगा?

निशिकांत ठाकुर

तो क्या यह मान लिया जाए कि अपने स्वार्थ के लिए समाज के ये 'प्रबुद्ध' लोग समाज को बांटना चाहते हैं? क्या यह मानना गलत होगा कि ये समाज का मूलतः बंटाधार कर रहे हैं? क्या इस पर चुप रहना सहमति देना नहीं है...?

इन दिनों

बोधि वृक्ष

आईए सुनें परशुराम भगवान की कथा

परशुराम जी त्रेता युग में एक ब्राह्मण ऋषि के यहाँ जन्मे थे। इन्हें भगवान विष्णु का छठा अवतार माना जाता है। पौरोणिक वृत्तान्तों के अनुसार उनका जन्म महर्षि भृगु के पुत्र महर्षि जमदग्नि द्वारा सम्पन्न पुत्रेष्टि यज्ञ से प्रसन्न देवराज इन्द्र के वरदान स्वरूप पत्नी रेणुका के गर्भ से वैशाख शुक्ल तृतीया को मध्यप्रदेश के इन्दौर जिला में ग्राम मानपुर के जानापाव पर्वत में हुआ। वे भगवान विष्णु के आवेशावतार हैं। महाभारत और विष्णुपुराण के अनुसार परशुराम जी का मूल नाम राम था किन्तु जब भगवान शिव ने उन्हें अपना परशु नामक अस्त्र प्रदान किया तभी से उनका नाम परशुराम हो गया। पितामह भृगु द्वारा सम्पन्न नामकरण संस्कार के अनन्तर वह राम कहलाए। वे जमदग्नि का पुत्र होने के कारण जामदग्न्य और शिवजी द्वारा प्रदत्त परशु धारण किये रहने के कारण परशुराम कहलाये। आरम्भिक शिक्षा महर्षि विश्वामित्र एवं ऋचीक के आश्रम में प्राप्त होने के साथ ही महर्षि ऋचीक से शार्ङ्ग नामक दिव्य वैष्णव धनुष और ब्रह्मर्षि कश्यप से विधिवत अविनाशी वैष्णव मन्त्र प्राप्त हुआ। तदनन्तर कैलाश गिरिश्रृंग पर स्थित भगवान शंकर के आश्रम में विद्या प्राप्त कर विशिष्ट दिव्यास्त्र विद्युदभि नामक परशु प्राप्त किया। शिवजी से उन्हें श्रीकृष्ण का त्रैलोक्य विजय कवच, स्तवराज स्तोत्र एवं मन्त्र कल्पतरु भी प्राप्त हुए। भगवान विष्णु ने उन्हें त्रेता में रामावतार होने पर तेजोहरण के उपरान्त कल्पान्त पर्यन्त तपस्यारत भूलोक पर रहने का वर दिया। **(क्रमशः)**

नीतीश और कुशवाहा की लड़ाई में कौन रहेगा फायदे में?

बिहार की राजनीति में फिलहाल हलचल का दौर चल रहा है। उपेंद्र कुशवाहा ने जो कदम उठाया है, उसे कहीं न कहीं नीतीश कुमार के लिए बड़ा झटका है। क्योंकि बिहार की राजनीति में वोट की दृष्टि से देखें तो जाति एक सच्चाई है। पिछले कुछ सालों में नीतीश कुमार की राजनीतिक हैसियत कम हुई है। बिहार विधानसभा में सत्तारूढ़ दल होते हुए भी उनकी पार्टी तीसरे नंबर पर है। नीतीश कुमार ने विधानसभा चुनाव के बाद एक लव-कुश समीकरण बनाने की कोशिश की थी, जिसके तहत उपेंद्र कुशवाहा को शामिल किया गया था। जिसके बाद अब ये सब हुआ है। नीतीश ने कभी किसी को निकाला नहीं है, लेकिन दल में विरोध करने वालों को सजा भी जरूर दी है। सम्राट चौधरी जो विपक्ष में बीजेपी के नेता हैं, वो भी मनोनीत सदस्य थे। उनके खिलाफ भी एक्शन लिया गया था। मुझे लगता है कि उपेंद्र कुशवाहा के साथ भी यही होगा। संसदीय बोर्ड के अध्यक्ष पद से उन्हें हटाया जाएगा, क्योंकि दोनों के बीच अब रिश्ते सुधरने की उम्मीद कम है।

नीतीश कुमार ने विपक्षी एकजुटता की जो मुहिम शुरू की थी, उसे लेकर भी उन्हें बड़ा झटका लगा। पिछले दिनों केसीआर ने जो मेगा रैली की, उसमें नीतीश कुमार को न्योता नहीं दिया गया। वहां केरल के सीएम थे, केजरीवाल थे, पंजाब के सीएम भगवंत मान भी मौजूद थे। नीतीश कुमार का ये कहना है कि बिहार में वो कांग्रेस के साथ हैं। इनका शुरू से ही ये रहा है कि बिना कांग्रेस के बीजेपी के खिलाफ कोई भी मोर्चा नहीं बन सकता है। लेकिन अब पूरे विपक्ष को एकजुट कर पाना असंभव सा दिख रहा है। विपक्षी मोर्चे की बात करें तो सवाल ये है कि इस मोर्चे को कौन लीड करेगा। बिहार में राजद से उन्होंने जो समझौता किया था, उसमें ये था कि नीतीश केंद्र की राजनीति में जाएंगे और यहां अपने भतीजे की राजनीति को चमकाएंगे। उन्होंने कह भी दिया है कि 2025 का विधानसभा चुनाव तेजस्वी के नेतृत्व में लड़ा जाएगा। कुल मिलाकर बिहार में सत्तारूढ़ दल में उहापोह की स्थिति है।

बिहार में विपक्ष के पास मौका

बिहार में लोकसभा की 40 सीटें हैं, पिछले चुनाव में जब नीतीश कुमार और बीजेपी साथ थे तब एनडीए ने 39 सीटों पर जीत दर्ज की थी। इसमें बीजेपी को 17 सीटें और जेडीयू को 16 सीटें मिलीं थीं। आने वाले लोकसभा चुनाव में बिहार में जो पिछड़ों की गोलबंदी होगी उसमें विपक्ष के पास खोने के लिए कुछ नहीं है। बिहार में बीजेपी एक तरफ है और सात दल एक तरफ है। साफ है कि विपक्ष के पास पाने का मौका है। बीजेपी बिहार में अगर अपनी 17 सीटें बचा लेगी वही उसके लिए काफी है। साल 2015 में जो चुनाव हुआ था, उस वक्त बीजेपी ने नीतीश को सत्ता से बाहर करने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी थी। लेकिन लालू और नीतीश की एकता का नतीजा रहा कि बीजेपी सत्ता से दूर रही। अगर नीतीश कुमार अपनी पार्टी से उपेंद्र कुशवाहा को निकाल देते हैं तो इसका ज्यादा असर नहीं पड़ने वाला है। कुशवाहा पर अभी तक नीतीश कुमार का जादू चल रहा था। उनके हटने के बाद एक निराशा जरूर होगी, लेकिन मुझे लगता है कि जातीय समीकरण को लेकर लालू और नीतीश आगे रहने वाले हैं। चुनाव से पहले अगर कोई करिश्मा हो जाए और बीजेपी 17 से ज्यादा सीटें जीत जाए ये अलग बात है, लेकिन शायद ये स्थिति नहीं आने वाली है।

नीतीश कुमार के पाला बदलने से एक हिस्से में काफी ज्यादा खुशी है, लेकिन नीतीश की राजनीतिक विश्वसनीयता कम हुई है। वो राजनीतिक रूप से दलों के लिए भी विश्वसनीय नहीं रहे हैं। बिहार में पिछले तीन दशक से एक पोल लालू यादव का है और दूसरा लालू विरोधी पोल है। नीतीश की जो राजनीति चमक रही थी वो लालू विरोधी थी। अब नीतीश खुद लालू के साथ मिल गए हैं तो अब वो लालू विरोधी मत कितना ले जाएंगे ये देखने वाली बात है। मैं मानता हूं कि हर चुनाव में 10 फीसदी फ्लोटिंग वोट होता है। बतौर सीएम उनकी छवि अच्छी रही है, इसमें कोई संदेह नहीं है। अभी तीन सीटों पर उपचुनाव हुआ था, जिसमें दो सीटें बीजेपी के हाथ लगी हैं। इससे लग रहा है कि अति पिछड़ों के वोट नीतीश कुमार नहीं संभाल पाएंगे और वो वोट फिर बीजेपी के साथ जाएंगे। ऐसा मानने के कई कारण हैं और हाल के दिनों में यह दिख गया है।

अरुण पांडे

नीतीश कुमार की जो राजनीति चमक रही थी वो मूलतः लालू विरोधी थी। अब नीतीश खुद लालू के साथ मिल गए हैं तो अब वो लालू विरोधी मत कितना ले जाएंगे ये देखने वाली बात है...

बात बिहार की

फोटो की दुनिया

ट्वीट-ट्वीट

Babita Phogat
@BabitaPhogat

मेरा देश बदल रहा है।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नए भारत में मुगल गार्डन अब 'अमृत उद्यान' के नाम से जाना जायेगा।

फेसबुक वॉल से

Sushil Manav
18 h ·

राष्ट्रपति भवन का मुगल गार्डन अब हो गया अमृत उद्यान..!!

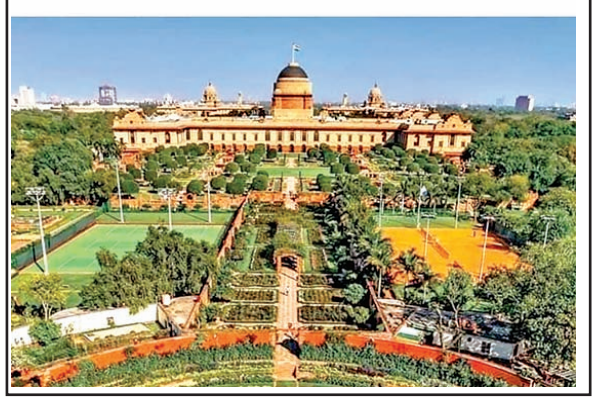

मुलायम को पद्म विभूषण और यूपी में होने वाला उलटफेर

समाजवादी पार्टी का कोई भी नेता चाहते हुए भी मुलायम को पद्म विभूषण से नवाजे जाने का विरोध नहीं कर सकता है। केंद्र सरकार की तरफ से की गई यह घोषणा उत्तर प्रदेश में भाजपा की पिछड़ों की लामबंदी और उनको और करीब लाने के मुहिम में मददगार साबित होगी। क्या लोकतंत्र की यही खूबी है कि भारतीय जनता पार्टी की उस केंद्र सरकार द्वारा पूर्व सपा प्रमुख और उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव जैसे नेता का नाम पद्म विभूषण के लिए चुना गया जिनकी विचारधारा भाजपा की सोच से एकदम विपरीत थी? कौन भूल सकता है 1990 के उस दौर को जब भारतीय जनता पार्टी अयोध्या में प्रभु श्री राम का मंदिर बनाने का संकल्प लेकर पूरे देश में यात्राए कर रही थी, तब तत्कालीन मुलायम सरकार ताल ठोंक रही थी कि बाबरी मस्जिद को बचाएगी। अयोध्या में परिंदा भी पर नहीं मार पाएगा। ऐसा हुआ भी। 1990 में जब कुछ राम भक्त कारसेवक 'सौगंध राम की खाते हैं मंदिर वहीं बनाएंगे' का नारा लगाते हुए अयोध्या पहुंचे तो तत्कालीन सरकार के मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव ने विवादित ढांचे को बचाने के लिए उग्र हो रहे कारसेवकों पर गोली चलाने से भी परहेज नहीं किया था। जिसमें सरकारी आंकड़ों के अनुसार 16 कार सेवकों मौत हो गई थी लेकिन गैर सरकारी आंकड़ों के अनुसार यह संख्या काफी अधिक थी। इतना ही नहीं, बाद में भी वह निःसंकोच कहते रहे कि बाबरी मस्जिद को बचाने के लिए उन्हें और गोली चलाने से भी परहेज नहीं होता। भले ही 16 की जगह 16 सौ कारसेवक मर जाते। मुलायम सिंह यादव ने अपने पूरे जीवन में कभी इस बात का पछतावा नहीं किया कि उनके आदेश के चलते दर्जनों राम भक्त मारे गए थे। इसको लेकर भारतीय जनता पार्टी हमेशा मुलायम सिंह यादव पर आक्रामक रहती थी। कारसेवकों पर गोली चलाने के कारण मुलायम सिंह हमेशा बीजेपी के कट्टर राजनैतिक दुश्मन बने रहे। लेकिन इसका मुलायम सिंह यादव के व्यक्तिगत जीवन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा, उनके सभी पार्टियों के नेताओं से अच्छे संबंध थे। अटल बिहारी वाजपेयी से लेकर नरेंद्र मोदी तक से वह अपने दिल की बात खुलकर कहते थे। इतने अच्छे संबंध तो उनके कांग्रेस की चेयरपर्सन सोनिया गांधी तक से नहीं रहे थे। सब जानते थे कि मुलायम सिंह की तुष्टिकरण की राजनीति के चलते हिंदुओं का एक बड़ा वर्ग उनसे हमेशा नाराज रहता था और उनके खिलाफ वोटिंग करता था।

मुलायम सिंह को मुल्ला मुलायम कहकर पुकारा जाता था लेकिन इस सब बातों से बेफिक्र मुलायम हमेशा मुसलमानों के प्रिय बने रहे। यहां तक की कई मुस्लिम नेताओं पर उनकी बिरादरी के लोग इतना भरोसा नहीं करते थे जितना मुलायम सिंह पर उनको भरोसा था। ऐसे नेता को जब मोदी सरकार में पद्म विभूषण से नवाजा जाता है तो सवाल तो उठेंगे ही। बहरहाल, इसके विपरीत कुछ बुद्धिजीवियों का अपना तर्क है। वे कहते हैं पद्म विभूषण, पद्म भूषण और पद्मश्री जैसे राष्ट्रीय सम्मान को राजनीतिक दृष्टिकोण से नहीं देखना चाहिए, लेकिन इस घोषणा के दूरगामी परिणाम से इंकार भी नहीं किया जा सकता। गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर केंद्र सरकार ने वैचारिक तौर पर धुर विरोधी और उत्तर प्रदेश में पिछड़ों की राजनीति के प्रमुख चेहरे रहे पूर्व मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव को पद्म विभूषण सम्मान देने की घोषणा कर लोकसभा चुनाव 2024 के लिए अपने प्रबल प्रतिद्वंद्वी समाजवादी पार्टी के प्रमुख और मुलायम के पुत्र अखिलेश यादव के लिए मुश्किल तो खड़ी कर ही दी है। सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव के सामने भी भाजपा की इस चाल की काट तलाशना आसान नहीं होगा। फिलहाल समाजवादी के कई बड़े नेता और मुलायम की सांसद बहू डिंपल यादव ने अपने ससुर को दिए गए पद्म विभूषण पुरस्कार को नाकाफी बताते हुए नेताजी को भारत रत्न देने की मांग शुरू कर दी है। जबकि आज से पहले सपा की तरफ से कभी कोई ऐसी बात नहीं होती थी। यह कड़वी हकीकत है कि सपा का कोई भी नेता चाहते हुए भी मुलायम को पद्म विभूषण से नवाजे जाने का विरोध नहीं कर सकता है। अब यूपी में भाजपा की पिछड़ों की लामबंदी और तेजी के साथ बढ़ेगी।

अजय कुमार

मुलायम सिंह को मुल्ला मुलायम कहकर पुकारा जाता था लेकिन इस सब बातों से बेफिक्र मुलायम हमेशा मुसलमानों के प्रिय बने रहे। यहां तक की कई मुस्लिम नेताओं पर उनकी बिरादरी के लोग इतना भरोसा नहीं करते थे जितना मुलायम सिंह पर उनको भरोसा था।

राजनीति

स्वामी, परिजात माइनिंग इण्डस्ट्रीज (इण्डिया) प्रा. लि. की ओर से इसके पब्लिकेशन डिवीजन, रेड़मा मेदिनीनगर (डालटनगंज), से हर्षवर्द्धन बजाज द्वारा प्रकाशित एवं पब्लिकेशन डिवीजन रेड़मा, मेदिनीनगर (डालटनगंज) से हर्षवर्द्धन बजाज द्वारा मुद्रित. रजिस्ट्रेशन नं. RNI. 61316/94 पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं.-13 । प्रधान संपादक : **सुरेश बजाज**, संपादक : **हर्षवर्द्धन बजाज,** स्थानीय संपादक : **ओम प्रकाश अमरेन्द्र***, **प्रेस कार्यालय :** रांची रोड, रेड़मा, मेदिनीनगर, (डालटनगंज) पलामू-822102, **फोन नम्बर :** 07759972937, 06562-240042/ 222539, फैक्स नम्बर : 06562-241176/231257, **रांची कार्यालय :** 502बी, पांचवी मंजिल मंगलमूर्ति हाईट्स, रानी बगान, हरमू रोड, रांची-83001, फोन नं.- 0651-2283384/ फैक्स : 0651-2283386, **दिल्ली कार्यालय** : 25-एलएफ, तानसेन मार्ग, नयी दिल्ली-1, **गढ़वा कार्यालय :** मेन रोड, गढ़वा-822114, फोन : 9430164580, **लातेहार कार्यालय :** रमेश सेनेटरी, मेन रोड, लातेहार -829206, फोन : 9128656020, 7763034341, **लोहरदगा कार्यालय :** रिलायंस पेट्रोल पंप के बगल में, आशा कॉम्प्लेक्स लोहरदगा- फोन : 7903891779, 8271983099, **ई-मेल :** rnm_hb@yahoo.co.in, rnm.hvb@gmail.com (*पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेवार।)।

गांधी जी का आखिरी दिन

जिस दिन नाथूराम गोडसे ने महात्मा गांधी की तीन गोलियां मार कर हत्या की, उस दिन गांधी जी हल्के मजाकिया मूड में थे। वह अपने सहयोगियों से बात कर रहे थे। उन्हें 10 मिनट की देरी हुई थी-प्रार्थना सभा में पहुंचने में। इसको लेकर वह थोड़े खिन्न थे। जब गोडसे ने तीनों गोलियां उनके सीने-पेट में उतार दीं, तब गोडसे वहां से भागा नहीं। वह हाथ में रिवॉल्वर लेकर जोर-जोर से पुलिस-पुलिस चिल्लाने लगा। महात्मा गांधी की हत्या से पूरी दुनिया में शोक की लहर फैल गई थी...

रेहान फजल

शुक्रवार, 30 जनवरी 1948 की शुरुआत एक आम दिन की तरह हुई। हमेशा की तरह महात्मा गांधी तड़के साढ़े तीन बजे उठे। प्रार्थना की, दो घंटे अपनी डेस्क पर कांग्रेस की नई जिम्मेदारियों के मसौदे पर काम किया और इससे पहले कि दूसरे लोग उठ पाते, छह बजे फिर सोने चले गए। काम करने के दौरान वह आभा और मनु का तैयार किया हुआ नींबू और शहद का गरम पेय और मीठा नींबू पानी पीते रहे। दोबारा सो कर आठ बजे उठे। दिन के अखबारों पर नजर दौड़ाई और फिर ब्रजकृष्ण ने तेल से उनकी मालिश की। नहाने के बाद उन्होंने बकरी का दूध, उबली सब्जियां, टमाटर और मूली खाई और संतरे का रस भी पिया।

शहर के दूसरे कोने में पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन के वेटिंग रूम में नाथूराम गोडसे, नारायण आप्टे और विष्णु करकरे अभी भी गहरी नींद में थे। डरबन के उनके पुराने साथी रुस्तम सोराबजी सपरिवार गांधीजी से मिलने आए। इसके बाद रोज की तरह वो दिल्ली के मुस्लिम नेताओं से मिले। उनसे बोले, "मैं आप लोगों की सहमति के बगैर वर्धा नहीं जा सकता।"

सुधीर घोष और गांधीजी के सचिव प्यारेलाल ने नेहरू और पटेल के बीच मतभेदों पर लंदन टाइम्स में छपी एक टिप्पणी पर उनकी राय मांगी। इस पर गांधी ने कहा कि वह यह मामला पटेल के सामने उठाएंगे जो चार बजे उनसे मिलने आ रहे हैं और फिर वह नेहरू से भी बात करेंगे जिनसे शाम सात बजे उनकी मुलाकात तय थी।

मूंगफली की तलब

उधर, बिरला हाउस के लिए निकलने से पहले नाथूराम गोडसे ने कहा कि उनका मूंगफली खाने का जी चाह रहा है। आप्टे उनके लिए मूंगफली ढूढ़ने निकले लेकिन थोड़ी देर बाद आकर बोले- "पूरी दिल्ली में कहीं भी मूंगफली नहीं मिल रही। क्या काजू या बादाम से काम चलेगा?"

लेकिन गोडसे को सिर्फ मूंगफली ही चाहिए थी। आप्टे फिर बाहर निकले और इस बार वो मूंगफली का बड़ा लिफाफा लेकर वापस लौटे। गोडसे मूंगफलियों पर टूट पड़े। तभी आप्टे ने कहा कि अब चलने का समय हो गया है। चार बजे वल्लभभाई पटेल अपनी पुत्री मनीबेन के साथ गांधी से मिलने पहुंचे और प्रार्थना के समय यानी शाम पांच बजे के बाद तक उनसे मंत्रणा करते रहे।

सवा चार बजे गोडसे और उनके साथियों ने कनॉट प्लेस के लिए एक तांगा किया। वहां से फिर उन्होंने दूसरा तांगा किया और बिरला हाउस से दो सौ गज पहले उतर गए।

उधर पटेल के साथ बातचीत के दौरान गांधी चरखा चलाते रहे और आभा का परोसा शाम का खाना बकरी का दूध, कच्ची गाजर, उबली सब्जियां और तीन संतरे खाते रहे।

दस मिनट की देरी

आभा को मालूम था कि गांधी को प्रार्थना सभा में देरी से पहुंचना बिल्कुल पसंद नहीं था। वह परेशान हुई, पटेल को टोकने की उनकी हिम्मत नहीं हुई, आखिरकार वो भारत के लौह पुरुष थे। उनकी ये भी हिम्मत नहीं हुई कि वह गांधी को याद दिला सकें कि उन्हें देर हो रही है।

बहरहाल, उन्होंने गांधी की जेब घड़ी उठाई और धीरे से हिला कर गांधी को याद दिलाने की कोशिश की कि उन्हें देर हो रही है।

अंततः मणिबेन ने हस्तक्षेप किया और गांधी जब प्रार्थना सभा में जाने के लिए उठे तो पांच बज कर दस मिनट होने को आए थे।

गांधी ने तुरंत अपनी चप्पल पहनी और अपना बायां हाथ मनु और दायां हाथ आभा के कंधे पर डाल कर सभा की ओर बढ़ निकले। रास्ते में उन्होंने आभा से मजाक किया। गाजरों का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि आज तुमने मुझे मवेशियों का खाना दिया। आभा ने जवाब दिया, "लेकिन बा इसको घोड़े का खाना कहा करती थीं।" गांधी बोले, "मेरी दरियादिली देखिए कि मैं उसका आनंद उठा रहा हूं जिसकी कोई परवाह नहीं करता।"

आभा हंसी लेकिन उलाहना देने से भी नहीं चूकीं, "आज आपकी घड़ी सोच रही होगी कि उसको नजरअंदाज किया जा रहा है।"

गांधी बोले, "मैं अपनी घड़ी की तरफ क्यों देखूं। फिर गांधी गंभीर हो गए, तुम्हारी वजह से मुझे दस मिनट की देरी हो गई है। नर्स का यह कर्तव्य होता है कि वह अपना काम करे चाहे वहां ईश्वर भी क्यों न मौजूद हो। प्रार्थना सभा में एक मिनट की देरी से भी मुझे चिढ़ है।"

यह बात करते करते गांधी प्रार्थना स्थल तक पहुंच चुके थे। दोनों बालिकाओं के कंधों से हाथ हटाकर गांधी ने लोगों के अभिवादन के जवाब में उन्हें जोड़ लिया।

बाईं तरफ से नाथूराम गोडसे उनकी तरफ झुका और मनु को लगा कि वह गांधी के पैर छूने की कोशिश कर रहा है। आभा ने चिढ़ कर कहा कि उन्हें पहले ही देर हो चुकी है, उनके रास्ते में व्यवधान न उत्पन्न किया जाए। लेकिन गोडसे ने मनु को धक्का दिया और उनके हाथ से माला और पुस्तक नीचे गिर गई।

वह उन्हें उठाने के लिए नीचे झुकीं तभी गोडसे ने पिस्टल निकाल ली और एक के बाद एक तीन गोलियां गांधीजी के सीने और पेट में उतार दीं।

उनके मुंह से निकला, राम, राम, राम...और उनका जीवनहीन शरीर नीचे की तरफ गिरने लगा।

सन्नाटे में स्तब्ध भीड़

आभा ने गिरते हुए गांधी के सिर को अपने हाथों का सहारा दिया। बाद में नाथूराम गोडसे ने अपने भाई गोपाल गोडसे को बताया कि दो लड़कियों को गांधी के सामने पाकर वह थोड़ा परेशान हुए थे। उन्होंने बताया था, "फायर करने के बाद मैंने कसकर पिस्टल को पकड़े हुए अपने हाथ को ऊपर उठाए रखा और पुलिस...पुलिस चिल्लाने लगा। मैं चाहता था कि कोई यह देखे कि यह योजना बनाकर और जानबूझ कर किया गया काम था। मैंने आवेश में आकर ऐसा नहीं किया था। मैं यह भी नहीं चाहता था कि कोई कहे कि मैंने घटनास्थल से भागने या पिस्टल फेंकने की कोशिश की थी। लेकिन एकाएक सब चीजे जैसे रुक सी गईं और कम से कम एक मिनट तक कोई इंसान मेरे पास तक नहीं फटका।"

सिर पर वार

नाथूराम को जैसे ही पकड़ा गया वहां मौजूद माली रघुनाथ ने अपने खुरपे से नाथूराम के सिर पर वार किया जिससे उनके सिर से खून निकलने लगा। लेकिन गोपाल गोडसे ने अपनी किताब 'गांधी वध और मैं' में इसका खंडन किया। बकौल उनके पकड़े जाने के कुछ मिनटों बाद किसा ने छड़ी से नाथूराम के सिर पर वार किया था जिससे उनके सिर से खून बहने लगा था।

गांधी की हत्या के कुछ मिनटों के भीतर लॉर्ड माउंटबेटन वहां पहुंच गए। किसी ने गांधी का स्टील रिम का चश्मा उतार दिया था। मोमबत्ती की रोशनी में गांधी के निष्प्राण शरीर को बिना चश्मे के देख माउंटबेटन उन्हें पहचान ही नहीं पाए। किसी ने माउंटबेटन के हाथों में गुलाब की कुछ पंखुड़ियां पकड़ा दीं। लगभग शून्य में ताकते हुए माउंटबेटन ने वो पंखुड़ियां गांधी के पार्थिव शरीर पर गिरा दी। ये भारत के आखिरी वायसराय की उस व्यक्ति को अंतिम श्रद्धांजलि थी जिसने उनकी परदादी के साम्राज्य का अंत किया था।

मनु ने गांधी का सिर अपनी गोद में लिया हुआ था और उस माथे को सहला रही थीं जिससे मानवता के हक में कई मौलिक विचार फूटे थे।

बर्नाड शॉ ने गांधी की मौत पर कहा, "यह दिखाता है कि अच्छा होना कितना खतरनाक होता है।" दक्षिण अफ्रीका से गांधी के धुर विरोधी फील्ड मार्शल जैन स्मट्स ने कहा, "हमारे बीच का राजकुमार नहीं रहा।"

किंग जॉर्ज षष्टम ने संदेश भेजा, "गांधी की मौत से भारत ही नहीं संपूर्ण मानवता का नुकसान हुआ है।"

गांधी जी की शवयात्रा

सबसे भावुक संदेश पाकिस्तान से मियां इफ्तिकारुद्दीन की तरफ से आया, "पिछले महीनों, हममें से हर एक जिसने मासूम मर्दों, औरतों और बच्चों के खिलाफ अपने हाथ उठाए हैं या ऐसी हरकत का समर्थन किया है, गांधी की मौत का हिस्सेदार है।"

मोहम्मद अली जिन्ना ने अपने शोक संदेश में कहा, "वो हिंदू समुदाय के महानतम लोगों में से एक थे।"

जब जिन्ना के एक साथी ने उन्हें समझाने की कोशिश की कि गांधी का योगदान एक समुदाय से कहीं ऊपर उठकर था, जिन्ना अपनी बात पर अड़े रहे और बोले, "देट इज वॉट ही वाज- ए ग्रेट हिंदू।" जब गांधी के पार्थिव शरीर को अग्नि दी जी रही थी, मनु ने अपना चेहरा सरदार पटेल की गोद में रख दिया और रोती चली गईं। जब उन्होंने अपना चेहरा उठाया तो उन्होंने महसूस किया कि सरदार अचानक बुजुर्ग हो चले हैं।

(रेहान फजल बीबीसी से जुड़े हैं। उनकी यह रिपोर्ट बीबीसी से साभार)

एक विचारधारा का नाम है महात्मा गांधी

दीक्षा कुमारी

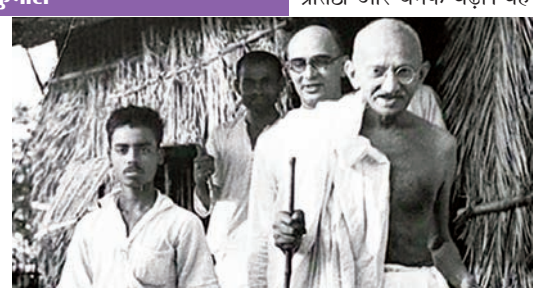

भारत की पावन धरा पर एक ऐसे मानव ने जन्म लिया, जिसने ना केवल भारतीय राजनीति को बदल कर रख दिया बल्कि संपूर्ण विश्व को अहिंसा, शांति और प्रेम की अद्भुत शक्ति के भी दर्शन करवाए। उस मानव का नाम था मोहनदास करमचंद गांधी। वह पहले गांधी जी बने, फिर बापू बने और अंततः राष्ट्रपिता महात्मा गांधी। इतिहास गवाह है कि किस प्रकार गुलामी की बेड़ियों में जकड़े हुए भारतीयों को एक सूत्र करने का कार्य बापू ने किया। भारत में शिक्षा-दीक्षा पूर्ण करने के बाद उच्च शिक्षा हेतु दक्षिण अफ्रीका गए। यह उनके जीवन का संघर्षतम सफर रहा। कहते हैं कि व्यक्ति के परिवेश, और उसके संस्कारों का प्रभाव जीवन भर बना रहता है। वह अपना प्रभाव प्रत्येक क्षेत्र में छोड़ जाता है। बापू दक्षिण अफ्रीका में काले भारतीयों को जातीय भेदभाव का शिकार होते देख रहे थे। वह द्रवित हो गए। अपने अध्ययन के दौरान रंगभेद की नीति का शिकार बाबू भी हुए। उनसे डरबन के एक न्यायालय में पगड़ी उतारने के लिए कहा गया पर बापू ने मना कर दिया। रेल के डिब्बे में दुर्व्यवहार किया गया। प्रथम श्रेणी का टिकट होने पर भी थर्ड श्रेणी के डिब्बे में सफर करने के लिए विवश किया गया। उसी समय महात्मा गांधी ने प्रतिज्ञा की कि वे अफ्रीका में रहकर भारतीयों के साथ हो रहे जातीय भेदभाव के खिलाफ संघर्ष करेंगे।

उस दौरान उन्होंने अहिंसात्मक रूप से अपना विरोध किया जो बाद में सत्याग्रह के नाम से जाना गया। भारत आकर अपनी विद्वता का सहारा भी लिया, परंतु अहिंसात्मक संघर्ष अनवरत जारी रहा। उनका पहला सत्याग्रह 1917 में चंपारण जिले से प्रारंभ हुआ। नील बागान मालिकों के खिलाफ लोहा लिया। इस दौरान अंग्रेजों से संघर्ष हुआ और आपको पता ही है, जीत गांधी जी की हुई। उनकी प्रतिष्ठा और धमक बढ़ी। वह अनेक बार जेल गए परंतु वह तो पूर्ण स्वराज की परिकल्पना बहुत पहले कर चुके थे। आजादी के दीवानों के साथ हमसफर बनकर स्वाधीनता संग्राम की बुनियाद खड़ी की।

गरम दल के नेताओं से परस्पर वार्ता करते रहे। कई ने नाराजगी भी जाहिर की। अनेक बार कई आंदोलनों को वापस भी लिया परंतु तटस्थता के साथ आजादी की लड़ाई को एकबद्ध करने का भी कार्य किया। स्वरोजगार पर प्रारंभ से ही गांधीजी ने बल दिया अर्थात एक ओर स्वावलंबी बनने की सीख तो दूसरी और अपनी विचारधारा से अंग्रेजों की नीतियों के विरुद्ध जंग। उस महामानव ने जिस स्पष्टता और गहनता से अपने युग की समस्याओं को समझा और उसका समाधान प्रस्तुत किया, वह अद्वितीय है। यह हम सभी का सौभाग्य है और भारत भूमि की देन है कि गांधी जैसे महामानव हमारे देश में जन्म लेते हैं और दुनिया को अपने नेतृत्व, अहिंसा, प्रेम, करुणा और तपस्या सिखाते हैं। उनके जीवन पर अनेक शोध किए गए और आज भी शोध जारी है। उनके जीवन के एक घटनाक्रम पर शोध किया जा सकता है, परंतु संपूर्ण गांधी पर नहीं। गांधी महज एक व्यक्ति नहीं अपितु एक विचारधारा के रूप में हम सभी के सम्मुख जीवित आज भी हैं।

आज भी बेहद जरूरी हैं महात्मा गांधी

आशुतोष कुमार पांडेय

इतिहास भारत में महात्मा गांधी को भारत के एक महान राजनीतिक और आध्यात्मिक नेता के रूप में याद करता है। सविनय अवज्ञा के अपने अहिंसक अभियानों के लिए प्रसिद्ध दुनिया भर के लोग उनके करिश्मे, साहस और लोगों की अंतरात्मा को प्रभावित करने की क्षमता से प्रभावित थे। मेरा मानना है कि गांधीजी जी के विचार हमारे समय में सभी राजनीतिक पुरुषों से बेहतरीन थे। हमें उनकी भावना में काम करने का प्रयास करना चाहिए।

महात्मा गांधी के उद्भव ने भारतीय राष्ट्रवाद के इतिहास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारत में राष्ट्रवाद का विकास तीन अलग-अलग चरणों में हुआ। यह भारतीय राष्ट्रवाद का तीसरा चरण था जिसने मोहनदास करमचंद गांधी के उदय को देखा। गांधी जी अहिंसा और सत्याग्रह के उपासक थे।

गांधी जी का पूरा नाम मोहनदास करमचंद गांधी था। इनका जन्म 2 अक्टूबर 1869 को गुजरात के पोरबंदर में एक मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ था। इनके पिता जी का नाम करमचंद गांधी तथा माता का नाम पुतलीबाई था। इन्होंने पोरबंदर में प्रारंभिक विद्यालय में सात वर्ष की आयु तक और बाद में राजकोट में अध्ययन किया। मैट्रिक के परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद उन्होंने 1888 में कानून की पढ़ाई के लिए इंग्लैंड चले गए और वहां से अपनी पढ़ाई पूरी कर 12 जून 1891 को भारत वापस आ गए।

स्थाई रूप से लौटने के बाद उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल होने के बाद भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन शुरू किया। वह भारत के राजनैतिक, सामाजिक एवं अन्य समस्याओं से परिचित हुए और इसके बाद क्रमबद्ध अपना आंदोलन शुरू किया। इन्होंने असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन, दांडी मार्च, भारत छोड़ो आंदोलन, सत्याग्रह आंदोलन इत्यादि अनेक आंदोलन कर भारत को अंग्रेज के चंगुल से मुक्त कराने का दृढ़ संकल्प लिया और अंततः वे सफल भी हुए। महात्मा गांधी को कई उपाधि मिले। रविंद्र नाथ टैगोर ने इन्हें महात्मा कहा। गांधी जी ने कई नारे दिए जैसे करो या मरो, हे राम, अंग्रेज भारत छोड़ो इत्यादि।

इनकी महत्वपूर्ण लिखित पत्र पत्रिकाएं एवं पुस्तकें भी प्रकाशित हुई। जैसे यंग इंडिया, हरिजन, नवजीवन, हिंदू स्वराज, इत्यादि कई पत्र-पत्रिकाएं प्रकाशित हुईं। सच कहें तो वर्तमान परिदृश्य को देखने के बाद यही लगता है कि वर्तमान समय में महात्मा गांधी जैसे नेतृत्वकर्ता की अति आवश्यकता है। आज आवश्यकता है कि हमें उनके द्वारा बताए गए लक्ष्य कदम पर चलकर देश को अग्रसर करने में अपना योगदान दे।

KASHYAP'S DENTAL CLINIC
Dr. Vaibhav Kashyap
Oral & Dental Surgeon, C.c. Endodontist &
Implantologist Certified Orthodontist, MIDA
" Smiles & More"
छात्र-छात्राओं के लिए
50% की छूट
Facilities
❖ आरसीटी
❖ पायरिया का ईलाज
❖ टेढ़े-मेढ़े दाँतों का ईलाज
❖ स्माईल डिजाइन
❖ इनविजिवल क्लिप
❖ दंत रोपण
❖ फिक्स दाँत लगाना
❖ अत्याधुनिक मशीन और तकनीक के द्वारा ईलाज
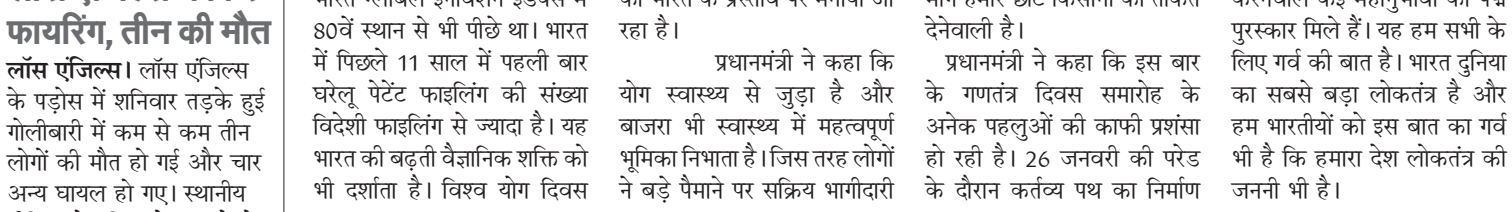
CHAMBER
SKYLINE - 4006, 4th Floor, Kadru, Opp. Dr. Lal's Hospital, Ranchi
Contact No. : 9199533383, 7903835453
Time : 9 am to 2 pm & 4 pm to 8 pm
Sunday : 9 am to 2 pm
E-mail : vaibhav.kashyap2011@gmail.com

NEWS इन ब्रीफ

ईरान के सैन्य संयंत्र में विस्फोट

तेहरान। ईरान के केंद्रीय शहर इस्फहान में एक सैन्य संयंत्र पर जोरदार विस्फोट हुआ है। सुरक्षा अधिकारियों का कहना है कि इससे कोई हताहत नहीं हुआ है। ईरान राज्य प्रसारक आईआरआईबी ने रविवार तड़के अपनी वेबसाइट पर यह सूचना साझा की है। ईरान के रक्षा मंत्रालय ने कहा कि इस ड्रोन हमले को विफल कर दिया गया है। इससे पहले आईआरआईबी ने सिर्फ यह सूचना दी थी कि विस्फोट रक्षा मंत्रालय के एक गोला-बारूद निर्माण केंद्र में हुआ है। ईरान के राजनीतिक और सुरक्षा उप प्रमुख की घोषणा के अनुसार कोई हताहत नहीं हुआ।

लॉस एंजिल्स में फिर फायरिंग, तीन की मौत

लॉस एंजिल्स। लॉस एंजिल्स के पड़ोस में शनिवार तड़के हुई गोलीबारी में कम से कम तीन लोगों की मौत हो गई और चार अन्य घायल हो गए। स्थानीय मीडिया ने पुलिस के हवाले से यह जानकारी दी। मृतकों की पहचान नहीं हो पाई है। घायलों को गंभीर हालत में अस्पताल में भर्ती कराया गया। एबीसी टेलीविजन नेटवर्क के वेस्ट कोस्ट फ्लैगशिप स्टेशन केएबीसी-टीवी ने यह जानकारी दी।

रजनीकांत ने जारी किया पब्लिक नोटिस, कानूनी कार्रवाई की चेतावनी

चेन्नई। दक्षिण भारतीय सुपरस्टार रजनीकांत ने अधिकारों के उल्लंघन पर एक सार्वजनिक नोटिस जारी किया है। क्योंकि उनकी सहमति के बिना अभिनेता के नाम, छवि, आवाज आदि का व्यावसायिक रूप से शोषण करनेवालों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की चेतावनी दी है। उनके वकील एस एलमभारती ने एक सार्वजनिक नोटिस जारी किया, जिसमें अभिनेता के व्यक्तित्व का उल्लंघन करनेवालों के खिलाफ दीवानी और आपराधिक कार्यवाही की चेतावनी दी गई है।

अस्पताल से अन्नू कपूर को मिली छुट्टी

नई दिल्ली। दिग्गज अभिनेता अन्नू कपूर को दिल्ली के सर गंगा राम अस्पताल से छुट्टी मिल गई है। उन्हें सीने में तकलीफ की शिकायत के बाद 26 जनवरी को भर्ती कराया गया था। कार्डियोलॉजी टीम द्वारा इलाज किए जाने के बाद, 66 वर्षीय अभिनेता को रविवार सुबह छुट्टी दे दी गई।

मन की बात : पेटेंट व ट्रेडमार्क फाइलिंग में हो रही वृद्धि : मोदी

एजेंसी। नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को कहा कि वैश्विक स्तर पर भारत पेटेंट दाखिल करने में सातवें और ट्रेडमार्क के मामले में पांचवें स्थान पर है। अपने मासिक रेडियो प्रसारण 'मन की बात' में मोदी ने कहा कि अकेले पेटेंट में ही पांच साल में करीब 50 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है। उन्होंने कहा : ग्लोबल इनोवेशन इंडेक्स में भी भारत की रैंकिंग में जबरदस्त सुधार हुआ है और अब यह 40वें स्थान पर पहुंच गया है, जबकि 2015 में भारत ग्लोबल इनोवेशन इंडेक्स में 80वें स्थान से भी पीछे था। भारत में पिछले 11 साल में पहली बार घरेलू पेटेंट फाइलिंग की संख्या विदेशी फाइलिंग से ज्यादा है। यह भारत की बढ़ती वैज्ञानिक शक्ति को भी दर्शाता है। विश्व योग दिवस

और अंतर्राष्ट्रीय बाजरा वर्ष (2023) का उल्लेख करते हुए मोदी ने बताया कि दोनों अवसरों को भारत के प्रस्ताव पर मनाया जा रहा है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि योग स्वास्थ्य से जुड़ा है और बाजरा भी स्वास्थ्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जिस तरह लोगों ने बड़े पैमाने पर सक्रिय भागीदारी कर योग और फिटनेस को अपने जीवन का हिस्सा बना लिया है, उसी तरह मोटे अनाज को भी लोग बड़े पैमाने पर अपना रहे हैं। आज भारत के कोने-कोने में जी-20 शिखर सम्मेलन हो रहे हैं और मुझे खुशी है कि जहां-जहां जी-20 शिखर सम्मेलन हो रहा है, उसमें बाजरा से बने पौष्टिक और स्वादिष्ट व्यंजन शामिल हैं। भारत दुनिया भी इनकी लोकप्रियता बढ़ाने के लिए प्रयास कर रहा है। आप कल्पना कर सकते हैं कि देश का यह प्रयास और दुनिया में बाजरा की बढ़ती मांग हमारे छोटे किसानों को ताकत देनेवाली है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि इस बार के गणतंत्र दिवस समारोह के अनेक पहलुओं की काफी प्रशंसा हो रही है। 26 जनवरी की परेड के दौरान कर्तव्य पथ का निर्माण करनेवाले श्रमिकों को देखकर बहुत अच्छा लगा। इस परेड में पहली बार हिस्सा लेने वाली महिला ऊंट सवार और सीआरपीएफ की महिला टुकड़ी की भी काफी सराहना हो रही है। प्रधानमंत्री ने जोर देकर कहा कि लोगों को पद्म पुरस्कार पाने वालों के बारे में जानना चाहिए। जनजातीय समुदायों से जुड़ी चीजों के संरक्षण और उन पर शोध के प्रयास भी होते हैं। ऐसे ही टोटो, हो, कुइ, कुवी और मांडा जैसी जनजातीय भाषाओं पर काम करनेवाले कई महानुभावों को पद्म पुरस्कार मिले हैं। यह हम सभी के लिए गर्व की बात है। भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है और हम भारतीयों को इस बात का गर्व भी है कि हमारा देश लोकतंत्र की जननी भी है।

ब्लैक संडे बलूचिस्तान के लासबेला में बस खाई में गिरी, 44 की मौत

एजेंसी। इस्लामाबाद

पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रांत के लासबेला जिले में रविवार सुबह एक बस के खाई में गिरने से 44 लोगों की मौत हो गई। मरनेवालों में महिलाएं और बच्चे भी शामिल हैं। बस क्वेटा से कराची जा रही इस बस में 48 यात्री सवार थे। लासबेला जिले के सहायक आयुक्त हमजा अंजुम के मुताबिक 48 यात्रियों को लेकर वाहन क्वेटा से कराची की ओर जा रहा था। तेज रफ्तार वाहन लासबेला के पास यू-टर्न लेने के दौरान एक पुल के खंभे से टकरा गया और उसमें आग लग गई। मरने वालों की संख्या बढ़ सकती है। आधिकारिक सूत्रों के अनुसार शवों की पहचान के लिए डीएनए टेस्ट का सहारा लिया जा सकता है।

पेरू में यात्री बस पर चट्टान गिरी, 24 मरे

लीमा। पेरू के उत्तर सुदूर ए आल्टो जिले में शनिवार तड़के एक यात्री बस पर चट्टान गिर गई। इस हादसे में 24 यात्रियों की जान चली गई। बस 60 यात्री थे। यह सूचना स्थानीय मीडिया ने अपने-अपने इंटरनेट संस्करणों में दी है। पेरू की परिवहन पर्यवेक्षी एजेंसी ने दुर्घटना की पुष्टि की है। मगर उसने मृतकों या घायलों का विवरण नहीं दिया है। यह क्यू ओरियांका टूर्स अगुइला दोराडा कंपनी की बताई गई है। बस पेरू की राजधानी लीमा से इक्वाडोर सीमा के पास स्थित तुम्बेस क्षेत्र के लिए रवाना हुई थी।

भूकंप के झटके से दहला ईरान, सात लोगों की मौत

तेहरान। ईरान के अजरबैजान प्रांत के खोय शहर में शनिवार रात 23:44:44 बजे भूकंप के जोरदार झटके महसूस किए गए। भूकंप की तीव्रता रिक्टर स्केल पर 5.9 रही। इस वजह से प्रभावित क्षेत्र में कई मकान क्षतिग्रस्त हो गए। यूरोपीय भूमध्यसागरीय भूकंपीय केंद्र ने यह जानकारी दी।
आपातकालीन सेवा के अधिकारियों के मुताबिक इस प्राकृतिक आपदा में सात लोगों की जान चली गई और 440 लोग घायल हो गए। यूरोपीय भूमध्यसागरीय भूकंपीय केंद्र के मुताबिक भूकंप का केंद्र जमीन पर 10 किलोमीटर की गहराई में था।

पाकिस्तान में नाव पलटने से 10 बच्चों की मौत

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा प्रांत में रविवार को एक डैम में नाव पलट जाने से दस बच्चों की मौत हो गई। एक अधिकारी ने यह जानकारी दी। जिला उपायुक्त फुरकान अशरफ ने बताया कि कोहाट के टांडा डैम में 25 बच्चों को लेकर जा रही नाव रविवार सुबह पलट गई और गोताखोरों ने उनमें से 16 को बचा लिया और उन्हें अस्पताल ले जाया गया। समाचार एजेंसी शिन्हुआ के मुताबिक, अशरफ ने कहा कि डैम से नौ अन्य शव बरामद किए गए, जबकि एक बच्चे ने अस्पताल में अंतिम सांस ली। सूत्रों ने सिन्हुआ से बात करते हुए कहा कि बच्चे एक मदरसे के छात्र थे जो घूमने फिरने के मकसद से डैम पर गए थे।

इस्लामाबाद में भूकंप के तेज झटके

इस्लामाबाद। पाकिस्तान की राजधानी इस्लामाबाद में रविवार अपराह्न 12:54 बजे भूकंप के तेज झटके महसूस किए गए। घबराहट में लोग घरों से बाहर निकलकर मैदानों में पहुंच गए। भूकंप की तीव्रता रिक्टर स्केल पर 6.3 मापी गई। आमतौर पर 6.3 तीव्रता वाला भूकंप विनाशकारी होता है।

74 वें गणतंत्र दिवस पर प्रखंड वासियों समेत समस्त जिलेवासियों को हार्दिक हार्दिक शुभकामनाएं।

शंभू शरण कुमार
शाखा प्रबंधक झारखंड राज्य ग्रामीण बैंक चिनीयां।

...तो बच्चों को मैं भूखा मार दूं?

पाकिस्तान में आर्थिक तंगी से परेशान महिला ने शेयर किया अपना दर्द

एजेंसी। इस्लामाबाद

पाकिस्तान में आर्थिक हालात धीरे-धीरे बिगड़ते जा रहे हैं। देश में महंगाई आसमान पर है। आम लोगों के लिए दो जून की रोटी जुटा पाना भी मुश्किल हो रहा है। खाने-पीने से लेकर रोजाना इस्तेमाल होने वाली हर चीज की कीमत इतनी बढ़ गई है कि ज्यादातर परिवारों के लिए उसे जुटा पाना बस की बात नहीं है। इन सबके बीच आर्थिक तंगी का सामना कर रही कराची की रहने वाली एक महिला का दर्द सामने आया है। इस महिला ने देश में बेतहाशा बढ़ती महंगाई का जिक्र करते हुए सोशल मीडिया पर अपना दर्द शेयर किया है।
आर्थिक बदहाली का सामना कर रही कराची की रहनेवाली राबिया नाम की महिला ने सरकार से पूछा- 'क्या मैं अपने बच्चे को खाना देना बंद कर दूं? दवाई देना बंद कर दूं? महिला ने बाजार से राशन खरीदकर लाने का जिक्र किया। उन्होंने बताया कि जो राशन वो लेकर आई है, उसमें आटा, दाल चावल, घी नहीं है। बच्चों को क्या भूखा मार दूं? महिला ने अपना बिजली का बिल भी दिखाया। उन्होंने कहा कि कराची के जिस इलाके में वो रहती हैं, वहां ठीक से बिजली नहीं रहती है। 556 यूनिट बिजली का बिल 15 हजार 560 रुपए आया है। बताओ कहां से पे करूं? बच्चे की दवाई महंगी हो गई है। उन्होंने सरकार में बैठे लोगों से सवाल किया- 'क्या उन्हें खुदा का खौफ नहीं है? क्या बच्चों को अंडे खिलाना, दूध पिलाना छोड़ दें? क्या तुमलोगों से मासूमों के आंसुओं का हिसाब कब्र में पूछा नहीं जाएगा?

विमान का इमरजेंसी एग्जिट कवर हटाने की कोशिश, मामला दर्ज

एजेंसी। नई दिल्ली

नागपुर से मुंबई जानेवाली फ्लाइट में एक यात्री ने कथित तौर पर लैंडिंग से ठीक पहले आपातकालीन एक्जिट गेट कवर खोलने की कोशिश की, जिसके बाद फ्लाइट में अफरा-तफरी का माहौल बन गया। घटना के बाद यात्री के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी गई है। गौरतलब है कि जिस वक्त यात्री ने यह हरकत की विमान हवा में था और लैंडिंग के लिए तैयार हो रहा था।

भाजपा विधायक टी.राजा सिंह ने कहा

अब घंटा बजाने वाला नहीं, गला काटने वाला हिंदू बनने की जरूरत

एक रुपया या एक लाख का सामान लें, हिंदुओं की दुकान से ही लें

एजेंसी। मुंबई

तेलंगाना बीजेपी के विधायक टी राजा सिंह ने रविवार को कहा कि अब घंटा बजाने वाला नहीं, गला काटने वाला हिन्दू बनने की जरूरत है। टी राजा सिंह मुंबई में हिन्दू आक्रोश मोर्चे के एक कार्यक्रम में बोल रहे थे। गोशामहल (हैदराबाद) के विधायक टी राजा सिंह ने कहा कि जोमैटो, रैपिडो

टैक्सी, ओला, उबर से हिन्दू लड़कियों का नाम और नंबर लिया जाता है और लव जिहाद किया जा रहा है। आप मुस्लिमों की दुकानों से सामान लेने से बचें। मोदी जी से मेरी गुजारिश है कि 'हम दो, हमारे दो' हमें स्वीकार है, लेकिन मुस्लिमों पर भी ये लागू हो। हिंदुओं से गुजारिश है कि वो 1 रुपया का सामान हो या 1 लाख का, सिर्फ हिन्दुओं की दुकान से ही खरीदें। हाल ही में उन्होंने पुणे में एक कार्यक्रम में कहा था कि देश में लव जिहाद, अवैध धर्मांतरण, गोहत्या आदि के मामले बढ़े हैं। मैं राज्य सरकार और केंद्र से लव जिहाद के खिलाफ कानून लाने की मांग करता हूं।

FILMY हलचल

सनी लियोनी ने किया कंटेस्टेंट को मोटिवेट, साझा की अपनी कहानी

एजेंसी। मुंबई

'स्प्लिट्सविला एक्स4' की होस्ट सनी लियोनी ने शो में प्रतियोगी कशिश ठाकुर को प्रेरित करने के लिए अपनी संघर्ष की कहानी साझा की। हाल ही के एपिसोड में, यह देखा गया कि कशिश ने ऊर्फी जावेद के साथ संबंध बनाने के बारे में सोचा लेकिन उसका दिल टूट गया और तो और कशिश अपने आदर्श मैच आकाशलीना के साथ सेफ जोन में बैठे दिखे, लेकिन उनका असली कनेक्शन महक डंपिंग जोन में था। कशिश चिंतित थे, क्योंकि हामिद और साउंडस के पास किसी को छोड़ने की शक्ति थी और वे शायद महक को बाहर कर देंगे। कशिश ने कहा : अगर महक जा रही है तो मैं भी शो छोड़ रहा हूं क्योंकि मैंने उसे कमिटमेंट दिया है और मैं उससे पीछे नहीं हटूंगा। वह मेरी प्राथमिकता है। कशिश इतने निराश थे कि वह शो छोड़ने को तैयार था। फिर सनी ने इंडस्ट्री में अपनी आपबीती सुनाकर उन्हें सांत्वना दी। सनी ने कहा : मैं आपको पहले दिन से देख रही हूं और मुझे पता है कि आप कैसे काम करते हैं, लेकिन

अगर आप एक लड़की की वजह से इस शो को खो देते हैं, तो यह एक अलग तरह का नुकसान होगा। मैं आपको खुद का उदाहरण देती हूं, अगर मैंने इस देश में आने के बाद से सभी को गंभीरता से लिया होता, तो मैं अपना बैग पैक कर लेती और घर वापस चली गई होती। सनी ने आगे कहा : 10 साल हो गए हैं और मैं अभी भी यहां हूं। मुझे परवाह नहीं कि लोग क्या कहते हैं और वे अब भी करते हैं। कई लोग बिना किसी कारण के आपको नीचा दिखाने के लिए नीचे गिरेंगे और इसने मुझे और भी मजबूत बना दिया है।

74 वें गणतंत्र दिवस पर प्रखंड वासियों समेत समस्त जिलेवासियों को हार्दिक हार्दिक शुभकामनाएं।

चुनाराम हेंब्रम
सीओ
डंडई, गढ़वा।

74 वें गणतंत्र दिवस पर प्रखंड वासियों समेत समस्त जिलेवासियों को हार्दिक हार्दिक शुभकामनाएं।

सोमा उरांव
बीडीओ
डंडई, गढ़वा।

74 वें गणतंत्र दिवस पर प्रखंड वासियों समेत समस्त जिलेवासियों को हार्दिक हार्दिक शुभकामनाएं।

सदानंद कुमार
थाना प्रभारी
धुरकी, गढ़वा।

74 वें गणतंत्र दिवस पर प्रखंड वासियों समेत समस्त जिलेवासियों को हार्दिक हार्दिक शुभकामनाएं।

निवेदक : ओम प्रकाश
विधायक प्रतिनिधि
प्रखंड बड़गड़।

74 वें गणतंत्र दिवस पर प्रखंड वासियों समेत समस्त जिलेवासियों को हार्दिक हार्दिक शुभकामनाएं।

दीपिका खलखो
प्रखंड उपप्रमुख
बड़गड़, गढ़वा।

74 वें गणतंत्र दिवस पर प्रखंड वासियों समेत समस्त जिलेवासियों को हार्दिक हार्दिक शुभकामनाएं।

अनीता देवी
मुखिया सिलिदाग
पंचायत रमना।

74 वें गणतंत्र दिवस पर प्रखंड वासियों समेत समस्त जिलेवासियों को हार्दिक हार्दिक शुभकामनाएं।

रामलाल राम
प्राचार्य प्राथमिक मध्य विद्यालय फुलवार।

74 वें गणतंत्र दिवस पर प्रखंड वासियों समेत समस्त जिलेवासियों को हार्दिक हार्दिक शुभकामनाएं।
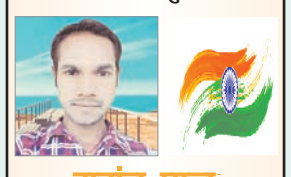
सुमंत पाल
प्राचार्य आरजीएसएम पब्लिक स्कूल डंडई।

दो टूक नीतीश के एनडीए में जाने की अटकलों पर लगा विराम

भाजपा अब नीतीश से नहीं करेगी गठबंधन

नवीन मेल नेटवर्क। पटना

मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के एक बार फिर से एनडीए में जाने की अटकलों पर भाजपा ने विराम लगा दिया। भाजपा के केंद्रीय नेतृत्व ने यह स्पष्ट कर दिया है कि पार्टी अब किसी भी परिस्थिति में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार से गठबंधन नहीं करेगी। भाजपा के केंद्रीय नेतृत्व के इस फैसले की जानकारी रविवार को पार्टी के बिहार प्रभारी विनोद तावड़े ने प्रदेश नेताओं को दी। दरभंगा में आयोजित दो दिवसीय प्रदेश कार्यसमिति की बैठक के अंतिम दिन बिहार भाजपा प्रभारी विनोद तावड़े ने प्रस्ताव पेश किया, जिसमें किसी भी हालत में नीतीश

कुमार के साथ नहीं जाने का निर्णय लिया गया है। इस निर्णय के मुताबिक ही लोकसभा चुनाव 2024 और विधानसभा चुनाव 2025 के लिए तैयारी करने का निर्देश दिया गया है।
विनोद तावड़े ने कहा कि भाजपा के केंद्रीय नेतृत्व ने यह तय किया है कि भविष्य में अब किसी सूरत में नीतीश कुमार के साथ कोई तालमेल नहीं किया जायेगा। नीतीश कुमार के पास समर्थन नहीं था फिर भी भाजपा ने उन्हें मुख्यमंत्री बनाया था। लेकिन वे धोखा देकर भाग खड़े हुए। ऐसे में अब उनसे आगे कोई बात नहीं होगी। दरअसल, बिहार के सत्तारूढ़ महागठबंधन में जारी तकरार को लेकर तमाम तरह की अटकलें लगाईं जा रही हैं। ऐसी भी अटकलें हैं कि नीतीश कुमार एक बार फिर भाजपा के साथ जा सकते हैं। इस बीच भाजपा ने एक बड़ा फैसला लेते हुए इसका ऐलान कर दिया कि भाजपा अब किसी भी हालत में नीतीश कुमार के साथ नहीं जाएगी। विधान परिषद में नेता प्रतिपक्ष सम्राट चौधरी ने कहा कि नीतीश कुमार की राजनीतिक विरासत अब खत्म हो गई है। राज्य में अब इनका कोई जनाधार नहीं रह गया है। बार-बार पलटी मारने से उनकी विश्वसनीयता खत्म हो चुकी है।

NEWS इन ब्रीफ

आर्म्स एक्ट का फरार आरोपित गिरफ्तार

रांची। गोंदा थाना पुलिस ने आर्म्स एक्ट के फरार आरोपित नौशाद अंसारी उर्फ अब्दुल गनी को गिरफ्तार किया है। इसके पास से मेड इन यूएसए लिखा एक पिस्तौल और एक लोहे का पंच बरामद किया है। ग्रामीण एसपी नौशाद आलम ने रविवार को बताया कि गुप्त सूचना मिली थी कि गोंदा थाना फरार आर्म्स एक्ट का आरोपित नौशाद अंसारी भिठा बस्ती में घूम रहा है। गोंदा थाना प्रभारी के नेतृत्व में गठित टीम ने भिठा बस्ती से नौशाद अंसारी उर्फ अब्दुल गनी को गिरफ्तार किया।

भाजपाइयों ने पीएम की मन की बात सुनी

रांची। प्रधानमंत्री के मन की बात कार्यक्रम को रविवार को भाजपा बूथ स्तर पर सुना गया। रांची में भी भाजपा के प्रदेश संगठन महामंत्री कर्मवीर सिंह ने भाजपा कार्यालय के पीछे 305 बूथ में आयोजित कार्यक्रम में कार्यकर्ताओं के साथ प्रधानमंत्री के मन की बात कार्यक्रम को सुना।

ब्रिजफोर्ड स्कूल में वार्षिकोत्सव मनाया गया

रांची। ब्रिजफोर्ड स्कूल, करमटोली शाखा में रविवार को वार्षिकोत्सव मनाया गया। मुख्य अतिथि सीआरपीएफ कोबरा बटालियन के डीआईजी बीरेंद्र कुमार टोप्पो, विद्यालय के चेयरमेन नारायण जालान, ब्रिजफोर्ड तुपुदाना की प्राचार्या सीमा चितलांगिया और करमटोली शाखा की प्राचार्या रुचि साबू ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। कार्यक्रम का आगाज राजस्थानी लोकनृत्य से हुआ। इसके बाद कामयाबी थीम पर डांस ड्रामा और सीक्रेट ऑफ हैप्पीनेस थीम पर नृत्य की प्रस्तुति हुई। प्राचार्या रुचि साबू ने स्कूल रिपोर्ट पेश किया। इसके बाद अतिथियों ने स्कूल मैग्जीन स्पेक्ट्रम का अनावरण और प्रतिभावान बच्चों को सम्मानित किया।

रांची नगर निगम वार्ड-3 के लोगों के साथ की बैठक

कचरे को कंपोस्ट खाद में बदलने की दी जानकारी

नवीन मेल संवाददाता

रांची। रांची नगर निगम सिटीजन फोरम की एक बैठक वार्ड-3 के लोगों के साथ मोरहाबादी स्थित मां सोना कालिंदी अपार्टमेंट में फोरम के संयोजक दीपेश निराला की अध्यक्षता में हुई, जिसमें फोरम के सदस्य और अर्बन खेती से जुड़े विशेषज्ञ विनोद कुमार ने उपस्थित लोगों को उनके किचन से निकलने वाले वेस्ट अर्थात फल सब्जी के छिलके इत्यादि का सदुपयोग कर उसे कंपोस्ट खाद में बदलने की तकनीक बताते हुए इसके फायदे बताये। उन्होंने बताया कि बायोडिग्रेडेबल वेस्ट पदार्थ 6 घंटे में ही डीकंपोज होने लगता है और 12 घंटे में उससे बदबू आना स्टार्ट हो जाता है, जोकि आज नगरीय क्षेत्र में लोगों की एक बहुत बड़ी समस्या बनते जा रहा है, क्योंकि नगर निगम की कचरा उठाने की टीम नियमित रूप से प्रतिदिन कई जगहों पर नहीं पहुंच पाती है, जिस कारण जब यह पदार्थ सड़ने

लगता है और इससे दुर्गंध फैलने लगती है तो स्थिति बद से बदतर हो जाती है। इसी समस्या पर उन्होंने उपकरण के साथ किचन वेस्ट को कंपोस्ट खाद में बदलने की पूरी प्रक्रिया को उपस्थित लोगों को डेमोंसट्रेशन के साथ समझाया। रांची नगर निगम सिटीजन फोरम के संयोजक दीपेश निराला ने अपील करते हुए कहा कि सभी लोग इस सरल पद्धति को अपनाकर अपने किचन वेस्ट से अपने किचन गार्डन और फल-फूल-सब्जी के गमलों के लिए खुद से कंपोस्ट खाद बनाएं और रांची नगर निगम का कुल बजट का अधिकतर भाग जो केवल कचरा निस्तारण में खर्च हो रहा है, उससे नगर निगम को राहत प्रदान करने में सहायक बनें। इस अवसर पर संयोजक दीपेश निराला, रेणुका तिवारी, प्रभात कुमार सहाय, मनोज कुमार सिंह, सुशील क्रांतिकारी, चंद्रशेखर वर्मा, रंजन कुमार, अजय दुबे, संदीप कुमार, अनंत कुमार, शत्रुघन लाल, राकेश रंजन, विश्वनाथ प्रसाद सिन्हा, पंचानंद तिवारी, उज्जवल कुमार महतो, नंदन सेन, सचिन कुमार, अरुण कुमार राज, सुशील भैया, शिवानी लता, रानी तिवारी, आरती तिवारी, कुमारी नमिता, दीपावली देवघरिया, सुमन तिवारी, राजेश कुमार श्रीवास्तव, इत्यादि उपस्थित हुए। धन्यवाद ज्ञापन रेणुका तिवारी ने किया।

ड्यूटी से पुलिसकर्मियों के गायब रहने पर एसएसपी गंभीर

नवीन मेल संवाददाता। रांची

रांची में सरस्वती पूजा और टी-20 मैच को लेकर विधि व्यवस्था संभालने की काम से रांची जिला में प्रतिनियुक्त कई पुलिसकर्मी गायब रहे। इसका खुलासा रांची एसएसपी के पत्र से हुआ, जिसमें उन्होने ऐसे पुलिसकर्मियों की लापरवाही पर कड़ी नाराजगी जताई है और अविलंब ड्यूटी में उपस्थित रहने का आदेश भी दिया है। बताया जाता है कि पुलिस मुख्यालय के निर्देश पर विभिन्न प्रशिक्षण संस्थान से प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे पुलिसकर्मी को रांची जिला में भारत न्यूजलैड मैच के विधि व्यवस्था ड्यूयी के लिये प्रतिनियुक्त किया गया था।मैच समाप्ति के पश्चात सभी पुलिसकर्मी को सरस्वती पूजा मुर्ति विसर्जन के लिये विभिन्न थानों में प्रतिनियुक्त किया गया था लेकिन बहुत से पुलिसकर्मी अपने कर्तव्य स्थल से फरार थे। इस गंभीर लापरवाही को एसएसपी ने गंभीरता से लिया। एसएसपी ने ड्यूटी गायब पुलिसकर्मी को अविलंब उपस्थित होने को कहा है, अन्यथा कठोर अनुशासनिक कार्रवाई की चेतावनी दी है।

श्रमिक संघ के केंद्रीय कार्यकारिणी समिति का विस्तार

रांची। झारखंड श्रमिक संघ के केंद्रीय कार्यकारिणी का विस्तार कर दिया गया। इसकी विधिवत घोषणा जमशेदपुर में आयोजित केंद्रीय महाधिवेशन में झामुमो अध्यक्ष शिबू सोरेन ने कर दी है. इसकी सूची रविवार को जारी कर दी गयी। जारी सूची के अनुसार रामदास सोरेन, विजय हांसदा और मथुरा प्रसाद महतो को उपाध्यक्ष बनाया गया है। इसके अलावा फागु बेसरा को महासचिव, शैलेन्द्र कुमार मैथी को संयुक्त महासचिव मनोनीत किया गया है।

झारखंड मुद्रा मोचन पार्टी से राज्य की जनता को निजात दिलानी है : मरांडी

नवीन मेल संवाददाता। रांची

भाजपा विधायक दल के नेता बाबूलाल मरांडी ने कहा कि राज्य की जनता को झारखंड मुद्रा मोचन पार्टी से मुक्ति दिलानी है। मरांडी रविवार को अपने आवास पर पाकुड़ जिले के लिट्टीपाड़ा की सामाजिक कार्यकर्ता अनिता मुर्मू के नेतृत्व में सैकड़ों लोगों को भाजपा की सदस्यता ग्रहण करा रहे थे। उन्होंने कहा कि झारखंड की स्थिति भयावह हो चुकी है। भ्रष्टाचार चरम पर है। झामुमो सहित राज्य के सत्ताधारी खान खनिज, संसाधनों को लूटने में लगे हैं। उन्होंने कहा कि झामुमो आज मुद्रा मोचन पार्टी बनकर काम कर रही है। राज्य के विकास से इनका कुछ भी लेना देना नहीं है। उन्होंने कहा कि ऐसे हालत में जनता का विश्वास सत्ताधारी दल से उठ

चुका है। जनता आशा भरी निगाहों से भाजपा और एनडीए गठबंधन की ओर देख रही है। उन्होंने कहा कि संथाल परगना में झामुमो के खिलाफ आक्रोश है। इसी का परिणाम है कि बड़ी संख्या में लोग रोज भाजपा की सदस्यता ग्रहण कर रहे। भाजपा की सदस्यता ग्रहण करने वालों में सुशीला पहाड़िया, रमेश पहाड़िया, निर्मला मुर्मू, कलामयी हेंब्रम, कमलेश पहाड़िया, विनोद पहाड़िया, मरामयी बास्की, कालू पहाड़िया, सीताराम पहाड़िया, संझली सोरेन, धूमा मुर्मू, असना पहाड़िया,नलखन पहाड़िया, बाभना प्रधान, सामू मुर्मू सहित अन्य हैं।

अजय केरकेट्टा का निधन

रांची। झारखंड आंदोलनकारी अजय केरकेट्टा का रविवार को निधन हो गया। झारखंड अलग राज्य के आंदोलन में अजय क्रिकेटर ने 90 के दशक में सक्रियता से भाग लिए थे । 90 के दशक में बाबू लाइन स्थित हाइलैंडर क्लब से झारखंड अलग राज्य आंदोलन में भाग लेने हेतु अपना अध्याय शुरू किया था। झारखंड आंदोलनकारी संघर्ष मोर्चा परिवार अजय केरकेट्टा के निधन से मर्माहत हैं। अपराहन 3:00 डॉन बॉस्को चर्चा में पवित्र मिट्टी देने का कार्यक्रम किया गया। अजय केरकेट्टा के निधन से झारखंड आंदोलनकारी संघर्ष मोर्चा के संस्थापक पुष्कर महतो, भुनेश्वर केवट अजीत मिंज, मोहम्मद फैजी, जुबेर अहमद, जबीउल्लाह अंसारी प्रमोद कुमार ठाकुर रंजन बाड़ा ने गहरा शोक व्यक्त करते हुए अपूरणीय क्षति बताया।

युवाओं के लिए शिक्षा, रोजगार और किसान को राहत वाला होगा बजट

बजट कैसा हो? आम आदमी के लिए क्या हो उसमें? जनता को क्या कुछ रियायतें चाहिए? जनता किन मुद्दों पर बजट का फोक्रस देखना चाहती है, यही सब जानने के लिए हमारे संवाददाता ने आम लोगों से बात की। आप भी पढ़ें आम लोगों की उम्मीदों को...

बजट में शिक्षा, खेती और हेल्थ को ध्यान में रखें

देश का राष्ट्रीय बजट दो दिनों के बाद ही लोक सभा में पेश किया जायेगा। हर लोगों को इस बजट पर निगाहें टिकी हुई हैं। आम लोगों का कहना है कि आम बजट राहत भरी होगी और लोगों को इससे काफी राहत मिलेगी। ज्यादा उम्मीदें युवाओं के लिए रोजगार, शिक्षा और स्वास्थ्य पर निगाहें लगी हैं। किसानों के लिए भी राहत भरी उम्मीद जताई जा रही है। आने वाला बजट शिक्षा, स्वास्थ, कृषि, रोजगार एवम सुरक्षा को ध्यान में रखकर लाना चाहिए। अंतिम व्यक्ति तक शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, रोजगार, सुरक्षा पहुंचने की उम्मीद के मुताबिक ही बजट आएगा। जिससे लोगों को काफी उम्मीद लगी है। देश की सुरक्षा, किसानों के हित, युवाओं को शिक्षा, रोजगार के साथ ही समस्त नागरिकों के स्वास्थ्य पर केंद्र सरकार अवश्य ध्यान देगी। देश की आधा से ज्यादा आबादी युवाओं की है।

-मनोज कुमार सिंह, भाजपा कार्यसमिति सदस्य, झारखंड

ऑनलाइन बाजार को लेकर कोई ठोस नीति सरकार करे

1 फरवरी को पेश की जा रही आम बजट के संदर्भ में कहा है कि 22 साल बाद भी झारखंड पिछड़ा राज्य है झारखंड के लिए विशेष पैकेज की घोषणा होनी चाहिए तथा सरकार टैक्स के स्लैब को बढ़ाएं ताकि मध्यमवर्गीय व्यवसायियों एवं अधिक से अधिक लोगों को राहत मिल सके। ऑनलाइन बाजार से परंपरागत रूप से व्यवसाय से जुड़े लोगों पर संकट के बादल है ऐसे में इसे लेकर कोई ठोस नीति सरकार करें। साथ ही बीमा, स्वास्थ्य और पेंशन की सुविधा होनी चाहिए, महिला सुरक्षा,खेल को लेकर बजट में विशेष प्रावधान होनी चाहिए।

संजय सर्राफ, कपड़ा व्यवसायी, रांची

मयंक, शिरोमणि, अनीता व नीलोत्पल को जयशंकर प्रसाद स्मृति सम्मान

रांच। जयशंकर प्रसाद विचार मंच की ओर से हिंदी साहित्य, क्षेत्रीय भाषा व कला-संस्कृति को बढ़ावा देने के उद्देश्य से आयोजित जयशंकर प्रसाद स्मृति सम्मान-2022-23 के तहत इस वर्ष हिंदी साहित्य से मयंक मुरारी व शिरोमणि महतो को वर्ष 2022 के लिए, दिया जा रहा है। जबकि, क्षेत्रीय भाषा से मेघनाथ ओहदार व श्याम सुंदर महतो श्याम को वर्ष 2022 के लिए व रतन कुमार महतो सत्यार्थी व परमानंद महतो को वर्ष 2023 के लिए संयुक्त रूप से चयनित किया गया है।

विराट गगनचुम्बी टुसु बना मेले में आकर्षण का केन्द्र

नवीन मेल संवाददाता रांची

टूसू मेला समिति, लोवाडीह, सामलौंग के तत्वावधान में हाईटेंशन मैदान, लोवाडीह, नामकुम में विराट टुसु मेला का आयोजन किया गया। झारखंड की राजधानी रांची स्थित हाईटेंसन मैदान में प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी विशाल टुसु मेला का आयोजन किया गया। मेला का शुभारंभ टुसु की पूजा करके किया गया, टुसु पूजा मेला समिति के पदाधिकारियों एंव सहयोगियों के द्वारा किया गया। इस मेला में झारखंड के विभिन्न दूर दराज ग्रामीण क्षेत्रों से लोग बड़े बड़े टुसु

चौडल एवं नगाड़ा के साथ बड़े उत्साह के साथ शामिल हुए। मौके पर तमाड के विधायक विकास कुमार मुंडा, पूर्व सांसद राम टहल चौधरी, पूर्व विधायक केशव महतो कमलेश, पूर्व विधायक अमित कुमार महतो, झारखंड अधिविध परिषद अध्यक्ष डॉ अनिल कुमार महतो, सलाहकार सद्स्य केंद्रीय पुस्तकालय डॉ राजाराम महतो, कांग्रेस के जिला अध्यक्ष डॉ राकेश किरण महतो, रंधीर चौधरी, बैजनाथ महतो, झामुमो के वरिष्ठ नेता अंतु तिर्की, डॉ धनेश्वर महतो, प्रो वृंदावन महतो शामिल हुए एवं टुसु मेला मे टुसु की परंपरागत गीतों से थिरके। इस मेले में मुख्य आकर्षण 200 फिट की टुसु थी, जिसे प्रथम पुरस्कार दिया गया एंव 180 फिट एंव 150 फिट के टुसूओ के अलावे अन्य छोटे-बड़े अनेक टुसु थे, सभी टुसु टीमो को भी मेला समिति की ओर से पुरस्कृत किया गया। मौके पर तमाड़ विधायक विकास मुंडा कहा कि टुसु पर्व झारखंड की प्राचीन त्योहार है जिसे झारखंड के विभिन्न क्षेत्रों में बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। पुरे पांचपरगना क्षेत्र में 1 माह तक लगने वाला सबसे बड़ा त्योहार है, अब यह त्योहार शहर तक पहुंच गया है इस कार्य के लिए मेला समिति के सभी सदस्यों को बहुत-बहुत बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूं।

सरकारी कार्यालयों में मनाया जाएगा शहीद दिवस

नवीन मेल संवाददाता। रांची

झारखंड के सभी सरकारी कार्यालयों में 30 जनवरी को शहीद दिवस मनाया जायेगा। कार्यालयों में सुबह 11 बजे दो मिनट का मौन रखकर शहीदों को नमन किया जायेगा। शहीद दिवस पर देश के स्वतंत्रता संग्राम में शहीद हुए स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धासुमन अर्पित की जायेगी। इसे लेकर मंत्रिमंडल सचिवालय एवं निगरानी विभाग ने सभी विभागों के मुख्य सचिव, सभी प्रधान सचिवों, सभी सचिवों, पुलिस महानिदेशक, सभी आयुक्त, सभी उपायुक्त, सभी एसपी और सभी डीएसपी को पत्र भेजा है। पत्र में कहा गया है कि 30 जनवरी को सुबह 11 बजे दो मिनट का मौन धारण रखा जाये। इसके अलावा शैक्षणिक संस्थाओं और सार्वजनिक क्षेत्रों के उपक्रमों में राष्ट्रीय एकता के बारे में बतायें। साथ ही इसमें आम जनता की भागीदारी सुनिश्चित करने को कहा गया है।टीचर ट्रेनिंग की स्पेशल परीक्षा 10 सेरांची। रांची यूनिवर्सिटी में बीएड गवर्नमेंट टीचर ट्रेनिंग की स्पेशल परीक्षा 10 से 17 फरवरी तक आयोजित की जाएगी। इसके लिए मोरहाबादी कैंपस स्थित बेसिक साइंस भवन स्थित पीजी जूलॉजी विभाग को केंद्र बनाया गया है।

पुरस्कार

साधना और उपासना अच्छे मनुष्य होने के लिए बेहद आवश्यकः स्वामी

18500 प्रतिभागियों में से 34 गीता चैंपियन पुरस्कृत

नवीन मेल संवाददाता। रांची

18500 प्रतिभागियों में से 34 चयनित गीता चैम्पियंस को रविवार चिन्मय मिशन के आचार्य पूज्य स्वामी परिपूर्णानन्द जी के कर कमलों द्वारा पुरस्कृत किया गया।

ग्रुप ए-प्रथम-ग्यानेश शर्मा, एएस ब्लॉक डीएवी हेहल, द्वितीय-अहाना राज-जेवीएम श्यामली, तृतीय-अपूर्व विहान - सुरेन्द्र नाथ सेंटेनरी स्कूल, इनके अतिरिक्त 4 को प्रोत्साहन पुरस्कार दिया गया।

ग्रुप बी-प्रथम- सोमिक चटर्जी, ऑक्सफोर्ड स्कूल, द्वितीय-आद्या विश्वकर्मा-आचार्यकुलम, तृतीय-अपराजिता-जेवीएम श्यामली। स्कूल, इनके अतिरिक्त 6 को प्रोत्साहन पुरस्कार दिया गया।

ग्रुप सी-प्रथम- आयुष कुमार सिंह, ब्रिज फोर्ड स्कूल, द्वितीय-सोनी शर्मा, ब्रिज फोर्ड जीपी जालान मेमोरियल स्कूल, तृतीय-माहेश्वरी मोहन्ता। इनके अतिरिक्त 6 को प्रोत्साहन पुरस्कार दिया गया।

ग्रुप डी-प्रथम-सूरज सिंह-ऑक्सफोर्ड स्कूल, द्वितीय- रिषिका चौधरी, डीएवी, हेहल, तृतीय-सोनाली-ब्रिजफोर्ड स्कूल तुपुदाना। इनके अतिरिक्त 6 को प्रोत्साहन

पुरस्कार दिया गया। सरला बिड़ला पब्लिक स्कूल को अधिकतम प्रतिभागियों की श्रेणी में प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया (2977 प्रतिभागी गण)। द्वितीय पुरस्कार ब्रिज फोर्ड स्कूल, तुपुदाना को दिया गया (1722 प्रतिभागी गण) एवं तृतीय पुरस्कार जवाहर विद्या मंदिर को दिया गया (1721 प्रतिभागी गण)। इनके साथ निम्नलिखित विद्यालयों को 1000 से अधिक प्रतिभागी देने के लिए पुरस्कृत किया गया।

i) विवेकानंद विद्या मंदिर, ii) सुरेन्द्र नाथ सेंटेनरी स्कूल, iii) टेंडर हार्ट स्कूल, iv) सरस्वती शिशु विद्या मंदिर धुर्वा, v) देहली पब्लिक स्कूल, सेल टाउनशिप। निम्नलिखित विद्यालयों को 500 से अधिक प्रतिभागी गण देने के लिए पुरस्कृत किया गया। कैम्ब्रियन पब्लिक स्कूल, काके रोड, डीएवी नन्दराज पब्लिक स्कूल,बरियातु, ब्रिजफोर्ड जीपी जालान मेमोरियल स्कूल, तुपुदाना, ऑक्सफोर्ड पब्लिक स्कूल, चुटिया। ज्ञातव्य है कि इस प्रतियोगिता में नगर के 50 विद्यालयों ने भाग लिया था। इन विद्यालयों के 63 विद्यालय समन्वयकों का अभिनन्दन किया गया। प्रतिभागियों के मूल्यांकन में 20 निर्णायकों की भुमिका रही थी उन्हें भी अभिनन्दन चिन्ह प्रदान किया गया। कार्यक्रम का निम्न प्रकार से सम्पादित हुआ। कार्यक्रम संचालन प्रतियोगिता के मुख्य कोर्डिनेटर वेद प्रकाश बागला ने किया। संचालन के साथ-साथ इन्होंने इस प्रतियोगिता में हुई उपलब्धियों को बताया। मंगलाचरण व दीप प्रज्ज्वलित के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। पूज्य स्वामी जी का माल्यार्पण चिन्मय युवा केन्द्र के विशाल सरायका ने किया। सभी छात्राओं द्वारा सामूहिक गीता के 10 श्लोकों का सस्वर गायन किया गया। इस गायन ने वहां उपस्थित अभिभावकों के मन में भी गायन सीखने की रूचि उत्पन्न की। चिन्मय मिशन के अध्यक्ष आरएस अग्रवाल ने छात्राओं व अभिभावकों के द्वारा चिन्मय मिशन के इस अभियान में सहयोग की भूरि-भूरि प्रशंसा की। चिन्मय मिशन, रांची के आचार्य पूज्य स्वामी परिपूर्णानन्द जी द्वारा विजेता प्रतिभागियों और अभिभावकों प्रेरणादायक आशीर्वचन दिया गया। चिन्मय मिशन के सचिव श्याम टोरका द्वारा मिशन की विभिन्न गतिविधियों बाल विहार, युवा केन्द्र , देवी मंडल, स्वाध्याय, वानप्रस्थ, अध्यात्मिक शिविर के बारे बताते हुए इस महायज्ञ में आहुति देने वालों के प्रति धन्यवाद अर्पित किया।

पृष्ठ एक के शेष

विधेयक की वैधानिकता की समीक्षा...

क्षेत्र है जो पाचवीं अनुसूची के तहत आच्छादित होता है। उक्त क्षेत्रों में शत-प्रतिशत स्थानीय व्यक्तियों को नियोजन में आरक्षण देने के विषय पर उच्चतम न्यायालय के संवैधानिक बेंच द्वारा स्पष्ट दिशा-निर्देश जारी किया जा चुका है। इस आदेश में भी उच्चतम न्यायालय द्वारा अनुसूचित क्षेत्रों में नियुक्तियों की शर्तों लगाने के राज्यपाल में निहित शक्तियों को भी संविधान की धारा-16 के विपरीत घोषित किया गया था। सत्यजीत कुमार बनाम झारखंड राज्य के मामले में भी पुनः सर्वोच्च न्यायालय द्वारा अनुसूचित क्षेत्रों में राज्य द्वारा दिये गए शत-प्रतिशत आरक्षण को असंवैधानिक घोषित किया गया था। विधि विभाग द्वारा यह स्पष्ट किया गया था कि प्रश्नगत विधेयक के प्रावधान संविधान एवं सर्वोच्च न्यायालय के आदेशों के विपरीत है और कहा गया है कि ऐसा प्रावधान सर्वोच्च न्यायालय एवं झारखंड उच्च न्यायालय द्वारा पारित संदर्भित कतिपय न्याय-निर्णय/न्यायादेश के अनुरूप नहीं है। साथ ही ऐसा प्रावधान स्पष्टतः भारतीय संविधान के भाग तीन के अनुच्छेद 14, 15, 16 (2) में प्रदत्त मूल अधिकार से असंगत व प्रतिकूल प्रभाव रखने वाला प्रतीत होता है जो भारतीय संविधान के अनुच्छेद-13 से भी प्रभावित होगा तथा अनावश्यक वाद-विवादों को जन्म देगा। राज्यपाल ने समीक्षा करते हुए पाया कि वर्णित परिस्थिति में जब राज्य विधानमंडल में यह शक्ति निहित नहीं है कि वे ऐसे मामलों में कोई विधेयक पारित कर सकती है, तो इस विधेयक की वैधानिकता पर गंभीर प्रश्न उठता है।

ओडिसा के स्वास्थ्य मंत्री की...

पर हमले के बाद शहर में तनाव व्याप्त हो गया। मंत्री की समर्थकों ने उनकी सुरक्षा में चूक पर सवाल उठाए। घटना के वक्त मौके पर मौजूद बीजद कार्यकर्ता मृत्युंजय पंडा ने बताया कि मंत्री जी के पहुंचने पर मैं, दिलीप सोय व हतेश ठक्कर समेत अन्य कार्यकर्ता उनके पास पहुंचे थे। इस दौरान कुछ कार्यकर्ता मंत्री जी पांव छूने लगे। इतने में एएसआई वहां पहुंचा और अपनी सर्विस रिवॉल्वर निकालकर उन पर गोली चला दी। एक गोली मंत्री जी के सीने में लगी। कार्यकर्ताओं ने तुरंत आरोपी एएसआई को पकड़ लिया, लेकिन वह फिर भी गोली चलाता रहा। तभी कार्यकर्ताओं ने उसके हाथ को पकड़कर उपर की ओर उठा दिया। इसके बाद, मंत्री जी को तुरंत उठाकर अस्पताल ले जाया गया। घटना के बाद भीड़ ने हमलावर एएसआई की पिटाई भी कर दी। पुलिस ने एएसआई को भीड़ से छुड़ाते हुए गिरफ्तार किया और अपने साथ ले गई।

बेटियों ने किया कमाल, इंग्लैंड को...

की बदौलत 24 रन बनाए। इसके बाद सौम्या तिवारी और हर्षिता बसु ने कोई और नुकसान नहीं होने दिया और टीम को 7 विकेट से जीत दिला दी। सौम्या 37 गेंदों पर 3 चौकों की बदौलत 24 रन और हर्षिता बिना खाता खोले नाबाद रहीं। इसके पूर्व भारतीय कप्तान शेफाली वर्मा ने टॉस जीतकर इंग्लैंड को पहले बल्लेबाजी का निमंत्रण दिया था। इंग्लिश बल्लेबाजों ने भारतीय गेंदबाजों के आगे घुटने टेक दिए और पूरी टीम 17.1 ओवर में 68 रन पर ऑलआउट हो गई। 6 बल्लेबाज तो दहाई का आंकड़ा भी नहीं पार कर सके। इंग्लैंड की तरफ से रयाना मैकडोनाल्ड ने सर्वाधिक 19 रन बनाए। रयाना के अलावा एलेक्सा स्टोनहाउस और सोफिया समाले ने 11-11 रन बनाए। भारत की तरफ से तितास साधु, पश्वी चोपड़ा और अर्चना देवी ने 2-2 एवं मन्नत कश्यप, शेफाली वर्मा और सोनम यादव ने 1-1 विकेट लिया।

जम्मू-कश्मीर में टारगेट...

होने वाली भारत जोड़ो यात्रा कार्यक्रम में शामिल नहीं होने की संभावना है।

राहुल गांधी ने लाल चौक पर फहराया तिरंगा :

रविवार दोपहर को राहुल गांधी ने लाल चौक पर तिरंगा फहराया। इस दौरान विजयी विश्व तिरंगा प्यारा से श्रीनगर गूंज उठा। आयोजन स्थल पर सुरक्षा व्यवस्था कड़ी की गई थी। पदयात्रा सुबह पंथा चौक से शुरू जो श्रीनगर शहर के बुलेवार्ड रोड पर नेहरू पार्क के पास समाप्त हुई।

तेतरियाखाड़ सीसीएल परिवार की ओर से 74वें गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई।

अनिल सिंह

पीओ तेतरियाखाड़, बालूमाथ।

बालूमाथ प्रखंड परिवार की ओर से 74 वें गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई।

मेसर्स सदाफल चिप्स क्रेशर

निवेदक :- स्टोन क्रशर संघ बारियातु।

झारखंड के सतबरवा वासियों को 74 वें गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

इंद्रदेव सिंह

प्रधानाचार्य, उत्क्रमित प्राथमिक विद्यालय भलवही, सतबरवा।

झारखंड के चंदवावासियों को 74 वें गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

बालदेव कुमार गंझु

समाजसेवी, चंदवा।

लातेहार विधानसभा क्षेत्र वासियों एवं देशवासियों को गणतंत्र दिवस एवं बसंत पंचमी की हार्दिक बधाई शुभकामनाएं।

सुरेश राम

बालूमाथ, लातेहार।

बालूमाथ प्रखंड परिवार की ओर से 74 वें गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई।

रामजी ठाकुर

मकईयातांड़ पिकेट प्रभारी, बालूमाथ।

बालूमाथ प्रखंड परिवार की ओर से 74 वें गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई।

प्रेम कुमार निषाद

अमरवाडीह पीकेट प्रभारी, बालूमाथ।

जेएमएम प्रखंड परिवार की ओर से 74 वें गणतंत्र दिवस एवं बसंत पंचमी की हार्दिक बधाई शुभकामनाएं।

ऐश्वर्य उरांव

प्रखंड अध्यक्ष, बालूमाथ।

बालूमाथ प्रखंड परिवार की ओर से 74 वें गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई।

मो. मुजम्मिल

समाजसेवी सह व्यवसाई, बालूमाथ, लातेहार।

बालूमाथ प्रखंड परिवार की ओर से 74 वें गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई।

दीपक यादव

राजद युवा प्रखंड अध्यक्ष, बालूमाथ।

बालूमाथ प्रखंड परिवार की ओर से 74 वें गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई।

शशी रंजन

पुलिस निरीक्षक, बालूमाथ।

बालूमाथ प्रखंड परिवार की ओर से 74 वें गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई।

प्रशांत प्रसाद

थाना प्रभारी, बालूमाथ।

बालूमाथ प्रखंड परिवार की ओर से 74 वें गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई।

कुवारी भगवती

मुखिया, धाधू पंचायत, बालूमाथ।

निवेदक :-रामवृक्ष उरांव, बालूमाथ।

मदरसा पोर्टल एंड कंस्ट्रक्शन की ओर से 74 वें गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

मो. जुनैद अनवर

बालूमाथ।

बालूमाथ प्रखंड परिवार की ओर से 74 वें गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई।

अभिमन्यु साव

मगध विस्थापित, बालूमाथ।

बालूमाथ प्रखंड परिवार की ओर से 74 वें गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई।

स्क्रैप इंटरप्राइजेज, बालूमाथ

मो. सद्दाम

मुर्पा मोड़, बालूमाथ।

झारखंड के चंदवावासियों को 74 वें गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

असगर खान

कांग्रेस प्रखंड अध्यक्ष सह राज्यसभा सांसद प्रतिनिधि, चंदवा।

लातेहार विधानसभा क्षेत्र वासियों को एवं देशवासियों को 74 वें गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई।

चेतलाल रामदास

भाजपा नेता लातेहार विधानसभा क्षेत्र, बालूमाथ।

बालूमाथ प्रखंड परिवार की ओर से 74 वें गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई।

कामेश्वर राम

उप प्रमुख बालूमाथ।

बालूमाथ प्रखंड परिवार की ओर से 74 वें गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई।

मुकेश सिंह

भाजपा जिला उपाध्यक्ष सह व्यवसाई, बालूमाथ, लातेहार।

झारखंड के चंदवावासियों को 74 वें गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

राजेश नाथ शाही

समाजसेवी, चंदवा।

चतरा लोकसभा क्षेत्र वासियों एवं देशवासियों को 74वें गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई।

राजेंद्र साव

पूर्व जिप उपाध्यक्ष लातेहार, बालूमाथ।

बालूमाथ प्रखंड परिवार की ओर से 74 वें गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई।

मो. नौसाद

व्यवसाई, बालूमाथ।

बालूमाथ प्रखंड परिवार की ओर से 74 वें गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई।

मो. आमिर हयात

कांग्रेस प्रखंड अध्यक्ष, बालूमाथ।

झारखंड के चंदवावासियों को 74 वें गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

दीपक कुमार

पुलिस निरीक्षक, टोरी आरपीएफ, चंदवा।

बालूमाथ प्रखंड परिवार की ओर से 74 वें गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई।

सुश्री ललिता बाखला

बीडीओ, बालूमाथ।

बालूमाथ प्रखंड परिवार की ओर से 74 वें गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई।

गंगेश्वर यादव

भाजपा युवा मंडल अध्यक्ष, बालूमाथ।

झारखंड के राज्यवासियों को 74 वें गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

हाजी फिरोज अहमद

पूर्व उप प्रमुख सह समाजसेवी, चंदवा।

झारखंड के चंदवावासियों को 74 वें गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

मोहम्मद तारिक

समाजसेवी, चंदवा।

झारखंड के सतबरवा वासियों को 74 वें गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

ए के जी कंट्रक्शन

सतबरवा।

अविराम ए ग्रुप ऑफ इस्टीच्यूशंस

टिको, कुडू, लोहरदगा एण्ड हूटाप चन्दवा, लातेहार

(बी. एड., डी. एल. एड., बी. एस. सी. नर्सिंग, ए. एन. एम.,डी. फार्मेसी)

की ओर से

74 वें गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

श्री इंद्रजीत भारती

सचिव

अविराज ए ग्रुप ऑफ इस्टीच्यूशंस

प्रखंड अंचल परिवार की ओर से 74 वें गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

आफताब आलम

अंचलाधिकारी, बालूमाथ।

बालूमाथ प्रखंड परिवार की ओर से 74 वें गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई।

मनोज यादव

तेतरियाखाड़ विस्थापित रैयत सह समाजसेवी, बालूमाथ।